22

6, IV

Sant Ram Bhar...
8-5
Nala garh State

श्रीः

त्रैमासिक

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्मांक]

वर्ष
१६
सं० २००४

संख्या
४
आषाढ़

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
३॥)

इस अंक
का मूल्य
१) रु०

संस्थापक—
श्रीमान अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

सम्माननीय संरक्षक सहायकों से निवेदन

'श्रीस्वाध्याय' आर्य संस्कृति का पोषक पत्र है। आर्य संस्कृति का उत्थान ही इसका मुख्य ध्येय है। व्यावहारिक सुख स्वतन्त्रता के साथ-साथ पारलौकिक सुख स्वतन्त्रता के मार्ग को निष्कण्टक करने का कार्य यह आज ६ वर्ष से निरन्तर कठिन परिश्रम से कर रहा है।

अंग्रेजी वातावरण में पले हुए भारतीय, सांस्कृतिक कार्यों के लिये धन खर्च करने में अब भी संकीर्ण हृदय हैं, इसी असुविधा के कारण हमने 'श्रीस्वाध्याय' का मूल्य लागतमात्र ही रक्खा है।

आपकी संरक्षकता 'श्री स्वाध्याय' को आगे बढ़ाने में हमें सहयोग देती रही है और आशा एवं विश्वास है कि देती ही रहेगी। आप के सहयोग के लिये हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

उचित आग्रह—

जो संरक्षक एवं सहायक महानुभाव अपनी आर्थिक सहायता अभी तक कार्यालय में नहीं भेज सके उनसे हमारा आग्रह है कि वे अपनी सहायता शीघ्र भेजकर हमें 'व्यापार-अङ्क' को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें। आशा है संरक्षक सहायक महानुभाव हमारी इस सहयोग प्रार्थना को शीघ्र ही सफल करेंगे।

विनीत—
व्यवस्थापक।

आवश्यक निवेदन—

श्रीस्वाध्याय का

विजयादशमी सं० २००४ अक्टूबर १६ ४७ का

नव-वर्षांक

व्यापार-अंक

जगज्जननी महामाया की कृपा से 'श्रीस्वाध्याय' छठा वर्ष पूर्ण कर चुका है। गण्य मान्य विद्वान लेखकों, महान कलाकारों, अनुभवशील ज्योतिषियों स्मरणीय संरक्षकों और प्रेमी पाठकों के सराहनीय सहयोग से 'श्रीस्वाध्याय' ने जो प्रशंसनीय प्रगति की है उसी के परिणाम स्वरूप आगामी सातवें वर्ष के आरम्भ में 'हम व्यापार-अङ्क' निकालने को उद्यत हुए हैं।

व्यापार-अंक की रूपरेखा—

आदान और प्रदान की परिष्कृत प्रणाली द्वारा सब प्रकार से सब की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करना व्यापार है। लेनदेन से ही संसार की आवश्यकतायें पूर्ण होती आई हैं, हो रही हैं और होती रहेंगी। 'परस्परं भावयन्तः' 'पारस्परिक प्रेम' की पवित्र भावना ने ही तो संसार को जन्म दिया है। इसलिये व्यापार सृष्टि के लिये परमेश्वर की पवित्र देन है। जो व्यापार में छल-कपट कर पवित्र व्यापार को अपवित्र बनाता है, वह परमेश्वर का अपराधी है। वह परमेश्वर की कृपा का पात्र नहीं बन सकता। परमेश्वर उस पर कृपा करते हैं जो व्यापार को परमेश्वर की पवित्र देन समझ कर करता है।

व्यापार-अङ्क में आप व्यापार सम्बन्धी वे सब विषय पढ़ेंगे, जिनकी आप को आवश्यकता है दैवी व्यापार, मानवीय व्यापार, बौद्धिक व्यापार, वस्तु व्यापार, देशीय व्यापार, विदेशीय व्यापार, व्यापार के साधन, पूंजी और व्यापार, व्यापार पर ग्रहों का प्रभाव, व्यापारिक-रुख आदि सभी विषयों पर विद्वान लेखकों के मौलिक विचारों का यह संग्रह—'व्यापार—अङ्क' साहित्यिक और व्यापारिक जगत में अपना विशिष्ट स्थान रक्खेगा यह हमें पूर्ण विश्वास है।

श्रीस्वाध्याय के प्रेमी—

ग्राहकों से—

आप के सराहनीय सहयोग से 'श्रीस्वाध्याय' इस अङ्क में अपने छः वर्ष पूरे कर आगामी आश्विन में सातवें वर्ष में प्रवेश करेगा। आप 'श्रीस्वाध्याय' से स्नेह रखते हैं, इसके लिए हम आपके हृदय से आभारी हैं।

वार्षिक मूल्य—-आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्क के ही साथ समाप्त हो जाता है। आगामी 'व्यापार-अङ्क' के लिए अब आपका नया चन्दा मनीआर्डर द्वारा भाद्रपद कृष्ण १० तारीख १० सितम्बर १९४७ तक कार्यालय में आ जाना चाहिये। चन्दा शीघ्र भेजने से आपका '**व्यापार-अंक**' निश्चित हो जाता है और हमें छपाई आदि के प्रबन्ध में आपका सहयोग मिल जाता है।

कागज का नियन्त्रण होने के कारण हम निश्चित संख्या में ही अङ्क छाप सकते हैं, अतः जिन महानुभावों का चन्दा विलम्ब से आयेगा, उन्हें यदि गतवर्षों की भांति '**व्यापार-अंक**' न मिल सका तो हम उन से पूर्व ही क्षमा मांग लेते हैं।

श्रीस्वाध्याय का वार्षिक मूल्य ३।।।) है

कुछ असुविधाओं को दूर करने की दृष्टि से 'श्रीस्वाध्याय' का मूल्य ३।।) से ३।।।) कर दिया गया है। आशा है ग्राहक इसका आदर करेंगे। 'व्यापार-अंक' उन ग्राहकों के पास रजिस्टरी द्वारा भेजा जायगा जो वार्षिक मूल्य ४) भेजेंगे।

वी० पी० नहीं भेजी जायगी

अनेक प्रकार की असुविधाओं के कारण श्रीस्वाध्याय-सदन ने यह निश्चित किया है कि आगामी अंकों की वी०पी० नहीं भेजी जायगी, अतः वी० पी० द्वारा अङ्क मँगवाने वाले महानुभाव भी १० सितम्बर १९४७ तक अपना वार्षिक मूल्य कार्यालय में मनीआर्डर से भेज दें।

जो महानुभाव गत पौष अथवा चैत्र में ३।।) देकर ग्राहक बने हैं उनके पास अङ्क निरन्तर पहुंचते रहेंगे। परन्तु उन्हें अपना वर्ष पूर्ण होने से प्रथम ही नये वर्ष का चन्दा कार्यालय में भेज देना चाहिये।

विशेष सुविधा

जो महानुभाव गत पौष (जनवरी) से ग्राहक बने हैं वे यदि १० सितम्बर तक ३) मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे तो उन्हें अगले पूरे वर्ष का स्थायी ग्राहक माना जायगा।

जो महानुभाव गत चैत्र (अप्रैल) से ग्राहक बने हैं वे यदि १० सितम्बर १९४७ तक २) मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे तो उन्हें भी अगले पूरे वर्ष का ग्राहक समझा जायगा। वर्ष के बीच से ग्राहक बनने में आप को तथा कार्यालय को अनेक प्रकार की असुविधायें हो जाती हैं। अतः हमें आशा है कि माननीय ग्राहक हमारी इस सम्मति का आदर करेंगे।

एक पंथ दो काज--

नये वर्ष के प्रथम १०० ग्राहकों को

विशेष लाभ

जो महानुभाव नये वर्ष के वार्षिक मूल्य के साथ १।) अधिक अर्थात् ५) मूल्य भेजेंगे उन्हें व्यापार-अंक के साथ श्रीस्वाध्याय का 'साहित्यांक' (जिसका मूल्य दो रु० है) और श्री १०८ मान आचार्यप्रवर अमृतवाग्भव जी द्वारा निर्मित श्रीराष्ट्रालोक राष्ट्रभाषानुवाद सहित जो जन के जीवन में स्फूर्ति और स्वतन्त्रता के भाव भरने वाला एक जीवन शास्त्र है। (यह अभी छपकर तय्यार हुआ है) भी भेजे जायेंगे। अतः साहित्यांक और राष्ट्रालोक की प्रतियाँ सुरक्षित कराने के लिये आज ही ५) मनीआर्डर द्वारा भेजिये।

आपको श्रीस्वाध्याय बिना मूल्य भी प्राप्त हो सकता है।

यदि आप ७ ऐसे महानुभावों के नाम पते और वार्षिक मूल्य श्रीस्वाध्याय सदन को एक साथ भिजवायें जो अभी तक श्रीस्वाध्याय के ग्राहक न हों तो आपको एक वर्ष तक श्रीस्वाध्याय अमूल्य प्राप्त होता रहेगा।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन [शिमला]

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स० ध० प्र० सभा पंजाब।

धर्ममार्तण्ड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी, भरतपुर।

श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब, उपरोड़ा स्टेट सी. पी.।

श्रीमती सौ० शान्तिदेवी धर्मपत्नी श्रीमान् सेठ चरणदासजी, लाहौर।

सहायक—श्री १०५ मती स्व० माँजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावनवाली जी (भरतपुर)।

श्री १०५ मान् राजाधिराज हरिसिंह जी जनरल मिनिस्टर उदयपुर (मेवाड़)।

रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी, नरसिंहगढ़।

श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला. जज हाईकोर्ट उदयपुर।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकदार, भरतपुर।

श्रीमान् पं० हरिशंकरजी शास्त्री ज्योतिषरत्न, खिड़कियां सी० पी०।

श्रीमान् पं० शिवचरणलालजी शर्मा, नई दिल्ली।

श्रीमान् सेठ यमुनादासजी, अध्यक्ष फर्म बेरामल परशुराम, बम्बई और शिकारपुर।

श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता, उदयपुर (मेवाड़)।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंह जी साहब, नाहन (सिरमौर)।

श्रीमान् कुँवर शिवसिंह जी बी० ए०, एल-एल० बी०, सेशनजज सोलन।

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी ढिल्लों बी० ए० एल–एल० बी, नाभा।

श्रीमान् पं० देवकीनन्दन जी कथावाचक, यादव कीर्तन मण्डल, अम्बाला।

श्रीमान् ला० शिवप्रसादजी आढ़ती खड़ (पंजाब)।

श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढ़ती, खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो० र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन (पंजाब)

'श्रीस्वाध्याय' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणों के नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३॥) और एक प्रतिका १) रु० है।

(२) जिन सज्जनों के लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पते से भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरों में कागज के एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेख के प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकों के नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भ के प्रथमाङ्क से (आश्विनमास विजयादशमी से) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नव वर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहे तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में उनसे पूरा वार्षिक मूल्य ३॥) रु० न लेकर वर्षसमाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मास का मूल्य ३) रु० और एक अङ्क का मूल्य १) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिये। वी० पी० मँगानेसे उक्त मूल्यमें तीन आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पंचमवर्ष का 'ग्रीष्माङ्क' और विगत चतुर्थ वर्ष का 'नववर्षाङ्क' अब स्टाकमें बिल्कुल नहीं है अतः इन अङ्कों के लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। केवल 'नववर्षाङ्क' का मूल्य २) है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनों के जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला दशमी को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी से भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुंचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए, बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ६ | सोलन, आषाढ़ शु० १० शुक्रवार सं० २००४ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

मानव हो कर कैसे सुन लूँ ?

मानव हो कर कैसे सुन लूँ,
मानवता की करुण पुकार

कर दूँगा अब तो जन-जन में
जीवन का मैं नव-सञ्चार,
बन्द नहीं अब रह पायेंगे,
मेरे मुक्ति-भवन के द्वार।

सुन करके हुंकार हमारी
गूँज उठेंगे भू-आकाश,
दहला दूँगा शत्रु-दलों को
पूर्ण करूँगा माँ की आश।

गा-गा कर फिर विजय-गीत मैं
हर्षित कर दूँगा उल्लास,
कौन यहाँ जीवित है ऐसा
तोड़ सके जो यह विश्वास।

भारत-भू पर रह पायेगा
केवल हिन्दू का जयकार ॥१॥

चेतन कर दूँगा वह ज्वाला
जिसमें जल जायेंगे त्रास,
जाग उठेगा नव पौरुष फिर
जाग उठेगा जन-विश्वास।

फिर से कर दूँगा वह-ताण्डव
जिस में नाच उठेंगे वीर,
वह तूफान उठा दूँगा मैं........
जो उखाड़ दे अरि-प्राचीर।

देखूँ कौन साथ आता है
किसमें है कितना पानी,
मुझसे पहिले कौन चढ़ायेगा-
बलि, देखूँ बलिदानी।

देखूँ कौन बुझायेगा अब
बलि-पथ के जलते अङ्गार ॥२॥

—श्री ह० श० त्रिवेदी

सम्पादकीय विचार —

कांग्रेस का उत्तरदायित्व

आज इस विशाल भारत भूमिके कोने-कोनेमें जो भीषण अग्निकाण्ड, रक्तपात तथा लूटपाट मची हुई है, उसको देखते हुए कौन ऐसा सभ्य भारतीय होगा, जिसका शिर विश्व के सम्मुख लज्जा से अवनत न हो जाए। असंख्य भारतीय नवयुवकों ने देश की स्वतन्त्रता के नाम पर आज तक जो त्याग, रक्तदान तथा बलिदान किया था, क्या पता था कि आज वह सब इस प्रकार विफल होगा और उसका अन्तिम परिणाम होगा गृह युद्ध। हमें जिस बात की चिरकाल से आशङ्का थी वह आज सत्य प्रमाणित होने जा रही है कि बृटिश घोषणा केवल विश्व की आँखों में धूल झोंक कर एक कट्टरपन्थी सम्प्रदाय को उभाड़, भारतीय राष्ट्रियता को गृहयुद्धाग्नि में भस्मसात् कर अखण्ड भारत नहीं तो खण्ड भारत में ही सही, किसी-न-किसी प्रकार यहाँ बने रहने के लिये ही है। बृटिश सरकार की सर्वदा से ही यह कूटनीति रही है कि धर्मान्ध हिन्दू तथा मुसलमानों को परस्पर लड़ा कर जब तक भारत पर राज्य किया जा सके, किया जाय और यदि किसी कारण वश भारत छोड़ने के लिये बाध्य होना ही पड़े तो उसकी साम्प्रदायिक स्थिति से अनुचित लाभ उठा कर उसे इतने खण्डों में विभाजित कर दिया जाय कि उसकी केन्द्रीय शक्ति सर्वथा नष्ट हो जाय और निर्बल भारतीय राष्ट्र की इकाइयाँ सहायता के लिये हमारी ओर देखा करें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अंग्रेज अपनी कूटनीति में सदा से ही सफल होते आये हैं और आज भी सफल हो रहे हैं।

अंग्रेजों ने जो चाहा कर लिया। वायसराय महोदय ने अपने ३ जून के भाषण में यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि "यद्यपि हम भारत का विभाजन नहीं चाहते थे, परन्तु खेद है कि कांग्रेस और लीग में समझौते के लिये सतत प्रयत्न करने पर भी हमें कोई सफलता नहीं मिली और परिणाम स्वरूप सम्राट् की सरकार इस निर्णय पर पहुंची है कि भारत का कोई भी वर्ग यदि दूसरे के साथ रहना नहीं चाहता तो उसे पूर्ण अधिकार है कि वह पृथक् रह कर अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थिर रक्खे।" आश्चर्य न होगा कि इस भाषण ने अखंड भारत की आदर्श कल्पना को धूलिसात् कर दिया है। मि० जिन्ना और उनकी लीग की पाकिस्तान की माँग पूरी कर वायसराय ने न केवल अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों के हित के मार्ग का रोड़ा बनाया है, अपितु लीग की गुण्डागिरी को प्रोत्साहन भी प्रदान किया है। वायसराय का ३ जून का भाषण न केवल भारत को पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान इन दो बड़े भागों में विभक्त करता है वरन् देशी राज्यों (रियासतों) के सम्बन्ध में मन्त्री मिशन की योजना उन्हें पाकिस्तान या हिन्दुस्तान में किसी एक की विधान-परिषद् में सम्मिलित होने अथवा स्वतन्त्र रूप से अपनी सत्ता बनाये रखने का अधिकार देकर भारत को अनेकों खंडों में विभाजित करने जा रही है। आज कोटि-कोटि भारत सन्तानें जिसने अपनी भारतमाता की पारतन्त्र्य-शृंखला को तोड़ने के लिये अधिक से अधिक बलिदान, रक्तदान एवं त्याग किये थे, उसने अपने अभागे नेत्रों से उसे स्वतंत्र नहीं अपितु अपनी आज तक की सुखद कल्पनाओं के विपरीत अङ्ग-भङ्ग

होते कैसे देखा, यह उनका हृदय ही बतला सकता है। आज इस विशाल भारत के हिन्दुओं के हृदय में कितनी मर्म-वेदना है, यह कोई सच्चा सहृदय हिन्दू ही समझ सकता है। आज यह हमारेलिये गूढ़ पहेली हो रही है कि जिन अल्पसंख्यकों की हित रक्षा के नाम पर पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान दो स्वतन्त्र राष्ट्र बनने जा रहे हैं उनमें रहने वाले करोड़ों अल्पसंख्यक हिन्दुओं तथा मुसलमानों के सम्बन्ध में क्या सोचा गया है? यदि पाकिस्तान की विधान-परिषद् आज उसमें रहने वाले अल्पसंख्यक हिन्दुओं के और हिन्दुस्तान की विधान-परिषद् उसमें रहने वाले करोड़ों अल्पसंख्यक मुसलमानों के हित का ध्यान रखने का आश्वासन दे रही है, तो यह निर्विवाद है कि इस प्रकार का आश्वासन एक दूसरे के लिये अखंडभारत में भी मिल सकता था, परन्तु इन बातों के होते हुए भी कुछ कट्टर पन्थियों को गुण्डई के लिये प्रोत्साहन देकर भारतीय जनता को ऐसी भीषण कल्पनातीत परिस्थिति में डाल दिया गया है, कि जो इसे दशाब्दियों तक भीषण विपत्तियों से बचाये नहीं रह सकती। यह सब भयङ्कर कूटनीति षड्यन्त्र के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

यही है हमारी राजनीतिक परिस्थिति, जिसने हमें आज किंकर्तव्य विमूढ़-सा बना दिया है। आज हिन्दुओं के सामने बड़ी ही विकट समस्या है कि वे क्या करें? गत दशकों में उन्होंने राष्ट्रीयता के नाम पर अल्पसंख्यक मुसलमानों को सन्तुष्ट रखने के लिये जिस अखंड और एक भारत की सुकुमार कल्पना में हिन्दू हितों की अधिकाधिक उपेक्षा की; आज वे सारी आशायें कोरी कल्पना मात्र रह गयी हैं। कांग्रेस ने लीग को अपना बनाने के लिये शिमला-सम्मेलन में उसका समान प्रतिनिधित्व भी स्वीकार किया, पर कांग्रेस ज्यों ज्यों लीग के सम्मुख झुकती गई--आत्मसमर्पण करती गई, उसकी दानवता और बर्बरता बढ़ती ही गई। आज वह सारा अतीत कोरा भ्रम एवं आत्मप्रवञ्चनामात्र प्रतीत होता है। कांग्रेस की अब तककी मुस्लिम-परस्ती की भावनाओं और उससे होने वाली न केवल पाकिस्तानी क्षेत्र में अपितु हिन्दुस्तान में भी हिन्दुओं की चलाचल सम्पत्ति की अपूरणीय क्षति को आज प्रत्येक हिन्दू सतर्क होकर देख रहा है। पाकिस्तान बन गया, परन्तु इससे हिन्दू और मुसलमानों के बीच की खाई भरी नहीं, और भी गहरी हो गई है। हिन्दू और मुसलमानों के झगड़े को कोई साम्राज्यसीमा रोक नहीं सकती, इसका सम्बन्ध तो दोनों के हृदयों से है। यह आन्तरिक द्वेष भारतीय जनता को जिस विनाश की ओर लेजा रहा है, उसके उदाहरण बङ्गाल और पंजाब हैं। बङ्गाल और पञ्जाब के काण्ड केवल उस विनाश की एक चिनगारीमात्र हैं, उसका भावी अग्नि-प्रकोप न जाने क्या क्या करेगा। ईश्वर न करे कि ऐसा हो, परन्तु हिन्दुस्तान के दोनों ओर पूर्व और पश्चिम में बने पाकिस्तान ने यदि ऐसी ही गुण्डाई स्थिर रक्खी और कांग्रेस ने हिन्दुस्तान के मुसलमानों के साथ अपनी वर्त्तमान नीति ही अपनायी तो सारे भारत को कभीं-न-कभी मुस्लिम राष्ट्र में परिवर्तित होना पड़ जायगा। अतः कांग्रेस को समय रहते चेतना चाहिए और उसे एक सबल हिन्दुस्तान का निर्माण करना चाहिए, जो पाकिस्तान या अन्य विदेशी आक्रमणों का सफलता से प्रतिकार कर सके। यह सत्य है कि कांग्रेस ने वाध्य होकर ही देश का विभाजन स्वीकार किया है, परन्तु उसकी इस नीति से तथा विशेषतया हिन्दू हितों की उपेक्षा से तथा अल्पसंख्यक मुसलमानों की हित-परस्ती की नीति से आज अधिकांश हिन्दू असन्तुष्ट हो रहे हैं और उनका असन्तुष्ट होना सर्वथा उचित है।

दूसरी समस्या है उन करोड़ों धर्मप्रेमी हिन्दुओं की; जो अपनी हिन्दू संस्कृति को यवनों के भीषण आक्रमण एवं धर्मविरोधी उत्पातों के बाद भी अंग्रेजी शासनकाल में सर्वथा सुरक्षित समझते रहे हैं। अंग्रेजों ने अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय संस्कृति को कुचलने और नष्ट करने का पर्याप्त प्रयास किया है, जिससे हमारा इतना सांस्कृतिक ह्रास हुआ है कि उसकी तुलना में यवनों या अन्य विदेशियों का प्रत्यक्ष आक्रमण भी कुछ न था। यवनों के प्रत्यक्ष धर्मविरोधी आक्रमणों ने केवल हमारी हिन्दू-संस्कृति के कुछ बाह्य प्रतीकों को ही क्षति पहुंचायी अथवा कुछ हिन्दुओंको हठात् मुसलमान बना लिया। परन्तु, अंग्रेजों की शिक्षा सम्बन्धी कूटनीति ने तो स्कूल और कालिजों में शिक्षा पाने वाले कोमल सुकुमार मति बालक बालिकाओं के हृदय को इस प्रकार परिवर्तित कर दिया कि आज वे अपनी वेष-भूषा, रहन सहन तथा मौलिक संस्कृति को भुलाकर हिन्दू नामधारी नागरिकमात्र रह गये हैं। फिर भी कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों द्वारा कोई सामाजिक विधान बनाकर प्रत्यक्ष धर्मविरोधी हस्तक्षेप न होने के कारण अधिकांश हिन्दू आज तक अपने धर्म को सुरक्षित समझते रहे हैं। वे और सब कुछ सहन करने को तैयार हैं, परन्तु किसी सामाजिक या धार्मिक मामले में ऐसे लोगों का नेतृत्व स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, जिन्होंने पाश्चात्य संस्कृति में पले पोसे होने के कारण भारतीय संस्कृति के महत्त्व को समझने का अभी तक प्रयास ही नहीं किया। वे जीवन के अन्य क्षेत्रों में अपने द्वारा निर्वाचित वैधानिक सदस्यों द्वारा वर्त्तमान विधान-परिषद् में कोई विशेष सुधार की बात न देखकर केवल समाज-सुधार के नामपर हिन्दू संस्कृति के मूल पर ही कुठाराघात करने वाले 'तलाक बिल' 'सिविलमैरिज बिल' 'मन्दिरप्रवेश बिल' और 'अस्पृश्यता निवारण बिल आदि हिन्दू कोडों को बनते देख कर अपने धर्म पर सङ्कट समझ रहे हैं और कांग्रेस की इस नीति से घृणा सी करने लगे हैं। हम तो कांग्रेस के विचार-शील नेतृवृन्द से यही कहेंगे कि यदि सचमुच वर्तमान देशकाल के विपरीत हिन्दू-समाज के विचार संकीर्ण हैं और उसमें कोई बुराई है तो उसे प्रचार के द्वारा भावनाओं को परिवर्तित करके ही रोका जा सकता है। विधान का बोझ लादने से रूढ़ियाँ और जोर पकड़ेंगी तथा कांग्रेस न केवल अपने लक्ष्य की पूर्ति में असफल होगी प्रत्युत करोड़ों धर्मप्रेमी हिन्दुओं की सहानुभूति को भी खो बैठेगी, अतः उसे समय रहते प्रत्येक वर्ग की धार्मिक स्वतन्त्रता का आश्वासन देना चाहिए और कोई भी ऐसा विधान नहीं बनाना चाहिए जिससे उद्विग्न हो कर कोई भी वर्ग उसकी शक्ति को शिथिल कर उसे निर्बल बनावे। इन पंक्तियों को लिखने के साथ हमें आशा ही नहीं विश्वाश है कि कांग्रेस अपनी वर्त्तमान परिस्थिति में अपने उत्तरदायित्व को समझेगी।

धर्म-युद्ध

पूज्य श्रीस्वामी करपात्री जी तथा उनके द्वारा संघटित अखिल भारतीय धर्मसंघ से प्रायः प्रत्येक भारतीय परिचित है। हिन्दूधर्म तथा भारत का शताब्दियों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसके ऊपर विदेशियों के निरन्तर आक्रमण होते रहे हैं; परन्तु उनका इस पर कुछ प्रभाव न पड़ा! शक, हूण आदि कई जातियाँ और उनके धर्म तो हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म में ही विलीन हो गये।

और आज केवल उनका अस्तित्व इतिहास के पृष्ठों में ही रह गया है। परन्तु, यवनोंका भारत पर आक्रमण जब प्रारम्भ हुआ तब हिन्दुओं में सङ्गठन का अभाव होने के कारण यवनों को पूरी सफलता मिली और हिन्दू धर्म अपने विरोधी तत्त्वों से बने इस्लामधर्म को आत्मसात् कर अपने पूर्व इतिहास की पुनरावृत्ति न कर सका। यवनों के भीषण अत्याचार लूटपाट तथा अन्य धर्मद्वेषी कार्यों से हिन्दू धर्म के बाह्य प्रतीक मठ, मन्दिरों तथा देवोत्तर सम्पत्ति का अवश्य विध्वंस हुआ, परन्तु इन कृत्यों से हमारी धार्मिक भावनाएँ अधिकाधिक सबल होती गयीं और अन्त में सिक्ख तथा मरहठों के रूप में हिन्दूजाति के अभिनव सङ्गठन ने औरङ्गजेब के शासनकाल में ही इस्लामी राज्य की नींव खोखली कर दी। फलस्वरूप इस्लामी राज्य भारत से उठ गया और उसका स्थान हमारी ही निर्बलता तथा अनैक्य के कारण अंग्रेजी साम्राज्य ने ले लिया।

अंग्रेजी राज्य के कर्णधारों ने भारतीयों के धर्मप्रेम को बहुत ही निकट से देखा और १८५७ की घटना ने उनकी आँखें खोल दीं। फिर बुद्धिमान् अथवा कूटनीति के पण्डित अंग्रेजों ने हिन्दूधर्म में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करना छोड़ कर अंग्रेजी स्कूल और कालेजों का वह कारखाना खोला, जिसमें चमड़े से काले पर वेष भूषा तथा संस्कृति से भारतीय अंग्रेज तैयार किये जाने लगे, जो केवल नाम से हिन्दू और अन्य बातों में अंग्रेजों से भी कुछ डग आगे भरने का प्रयास करने लगे। कहना न होगा कि अंग्रेज अपनी इस नीति में सफल हुए हैं और उन्होंने एक दो नहीं लाखों भारतीयों के हृदय में यह भाव भर दिया कि हिन्दू-संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति के सामने कोई अपना मूल्य नहीं रखती। पाश्चात्य शिक्षा से शिक्षित हिन्दू-संस्कृति के प्रति वर्षों घृणा तथा उदासीनता का पाठ पढ़ने वाले इन व्यक्तियों के हाथ में जब भारत का नेतृत्व आया था तो यह स्वाभाविक था कि वे अपने गुरुजनों के पदचिह्न पर चलते। अतः प्रान्तीय तथा केन्द्रीय शासन-सूत्र हाथ में लेते ही कांग्रेस ने भले ही हमारी युग-युग से जलती उदर ज्वाला को शान्त करने की तथा फटे पुराने चिथड़ों में लिपटी हमारी माँ बहिनों की लज्जा निवारण की शक्ति अपने में न पाकर सर्वथा इस दिशा में विफल रही हो पर सब से पहले आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण कार्य को सफल बनाने का यदि उसने प्रयत्न किया है तो वह है समाज-सुधार के नाम पर हिन्दू-धर्म का मूलोच्छेदन। ऐसा करने के लिए वे चिरकाल से उत्कण्ठित थे, अतः समय आते ही अधिकार पाकर इस कार्य में उन्होंने उसका सदुपयोग कहिये अथवा दुरुपयोग कुछ किया अवश्य है। फल-स्वरूप पाश्चात्य संस्कृति में पले तथा शिक्षित, हिन्दू संस्कृति के 'क-ख' को भी न जाननेवाले अन्तःकालीन सरकार के वर्तमान विधान-परिषद् के वैधानिक सदस्यों ने समाज-सुधार के नाम पर आज सिविल मैरेज, हिन्दू उत्तराधिकार, अस्पृश्यता निवारण, मन्दिर-प्रवेश तथा तलाक बिल आदि हिन्दू-धर्म-विरोधी अनेकों बिल बनाने प्रारम्भ कर दिये हैं। भारत में बसने वाली ईसाई, मुसलमान, सिक्ख तथा पारसी आदि जातियों के धर्म में जब कुछ भी हस्तक्षेप नहीं किया जाता है तो क्या हिन्दू-धर्म ही एक ऐसा अनाथ धर्म है कि उसमें जब चाहा जाये, उनके वेद, पुराण तथा धर्म-शास्त्रों पर हरताल लगाकर उनका आमूल परिवर्तन कर दिया जाय? और हिन्दू मौन हो उसे देखते रहें। यह स्थिति अधिक दिनों तक हिन्दुओं के लिये सह्य नहीं हो सकती। अतः केवल ४ वर्षों से ही संघटित हिन्दुओं के विशुद्ध सङ्गठन अखिल भारतीय धर्म-सङ्घ ने पूज्य करपात्री जी की

अध्यक्षता में गत २४ अप्रैल को अपने बम्बई के अखिल भारतीय-धर्म-सङ्घ महाधिवेशन में स्वीकृत (१) गो-वध अविलम्ब बन्द करने, (२) भारत की अखण्डता सुरक्षित रखने, (३) हिन्दुओं के धार्मिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में हस्त-क्षेप न करने, (४) शास्त्रीय-पद्धति के अनुसार मन्दिरों में प्रतिमा पूजन की विधि तथा (५) विधान सम्मेलनमें सनातनी हिन्दुओं का उचित प्रतिनिधित्व। ये ५ माँगें दिल्ली में विधानपरिषद् के सदस्यों के सम्मुख रखीं थी। इनका २७ अप्रैल तक उनसे उत्तर माँगा था, परन्तु उस पर कुछ भी सुनवाई न होने पर २८ अप्रैल को उनकी चुनौती स्वीकार कर धर्म-युद्ध छेड़ दिया गया। फलस्वरूप इस युद्ध के सत्या-ग्रहियों के एसेम्बली भवन तथा मन्त्रियों के घर पर नारे लगाने पर अनेकों साधु-संन्यासी तथा स्वयं श्री करपात्री जी महाराज गिरफ्तार किये गये। जैसा कि समाचार मिला है, यदि सचमुच पुलिस ने इन आदरणीय साधु-संन्यासियों के साथ दण्ड, कम-ण्डलु, माला आदि छीनकर उच्छृङ्खलतापूर्ण व्यव-हार किया है तो यह हिन्दू-समाज के लिये और वर्त्तमान अधिकारियों के लिये बहुत ही लज्जा की बात है। यद्यपि आज बीसवीं शताब्दी का भारत वह भारत नहीं रह गया है, जो आज से सहस्र वर्ष पूर्व था, फिर भी वर्त्तमान हिन्दू समाज में साधु और संन्यासियों का सर्वदा की भाँति जन-साधारण में गौरव-पूर्ण स्थान है; अतः साधु-संन्यासियों का अपमान केवल उनका ही अपमान नहीं है अपितु, हिन्दू-समाज तथा हिन्दू-धर्म का अपमान है। यदि कांग्रेस के आदेश से ऐसा हुआ हो तो ऐसा करके कांग्रेसी सरकार ने बहुत ही बुरा किया है। सब से अधिक आश्चर्य तो हमें तब हुआ जब यह समा-चार मिला कि इन साधु तथा संन्यासियों की दण्ड-कमण्डलु साथ रखने और जमुनाजल पीने आदि की छोटी २ मांगें भी स्वीकार न की गयीं, इसी माँग की पूर्ति के लिये एक संन्यासी का अनशन कर प्राण त्याग देना कितनी मार्मिक घटना है। पर फिर भी अधिकारियों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। कदाचित् उन्हें अपने वे दिन भूल गये हैं जब जेल में वे अधिक से अधिक सुविधा पाने के लिये बृटिश सरकार को कोसा करते थे और आज इन तुच्छ माँगों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझी जाती है। वर्तमान सरकार की इस कुप्रवृत्ति की जितनी भी निन्दा की जाय थोड़ी है।

धर्म-संघ की उक्त मांगें वर्तमान देश काल में अपना कहाँ तक औचित्य रखती हैं, इसकी विवेचना हम फिर कभी करेंगे, परन्तु इतना तो अवश्य कहना होगा कि वर्तमान अन्तःकालीन सरकार को इस पर ध्यान देकर आश्वासन देना चाहिए था, किन्तु ऐसा नहीं हुआ और अब यह युद्ध दमन के साथ ही अपना उग्र रूप धारण करता जा रहा है। यदि वास्तव में सनातनी हिन्दू-जगत् को अपने धर्म से सच्चा अनु-राग है तो यह युद्ध बढ़ना ही चाहिये। हिन्दू जाति को धैर्य तथा साहस से काम लेकर इस युद्ध में अधि-काधिक सहयोग प्रदान करना चाहिये।

हम धर्म-संघ के अधिकारियों से भी इतना अवश्य कहेंगे कि वे भी अपने धर्म-युद्ध की इस प्रकार की दिशा निश्चित करें जिससे कांग्रेस सरकार को हानि न पहुंचे और उनका लक्ष्य भी पूर्ण हो जाय। धर्म-युद्ध का लक्ष्य कांग्रेस सरकार से उचित सम-झौता ही होना चाहिये। धर्म-सङ्घ की अखंड-भारत सम्बन्धी माँग तब तक अविराम चलनी चाहिये जब तक कांग्रेस को खंड भारत स्वीकृत करने के लिये बाध्य करनेवालों को अपने किये पर पश्चात्ताप न होने लगे।

भारत की अखंडता के लिये हमें वह सब बलि-दान करने को प्रस्तुत रहना चाहिये जिसकी जिस समय आवश्यकता हो।

श्रीदुर्गाकवच-रहस्य !

[लेखक—श्री पं० नन्दकुमार जी शर्मा]

वर्तमान युग को लोग उन्नति का युग कहते हैं। चारोंओरविश्वमें उन्नति-उन्नति का चीत्कार करणकुहर फाड़े डालता है। किन्तु यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय, और उस पर पूर्वापर विचार किया जाय तो यह उन्नति का नहीं, अवनति का युग ही प्रतीत होता है। इस युग में भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति का जितना ह्रास हुआ है उतना अन्य किसी भी युग में नहीं हुआ। हमारे नेता कहलाने वाले महानुभाव कहने को तो भारतीय संस्कृति के उत्थान के हेतु बड़े बड़े लम्बे चौड़े व्याख्यान झाड़ते दिखाई देते हैं, किन्तु वास्तव में वे हमें ही नहीं स्वयं को भी आर्य संस्कृति से कोसों दूर ले जा रहे हैं। यही कारण है कि आज इस पवित्र आर्य भूमि पर चारों ओर जिधर देखिये विनाश का नग्न ताण्डव ही दृष्टि में आ रहा है।

"जिसमें प्राचीनता है वह सब कल्पित है, कूड़ा है"। पाश्चात्य देशों का अंधानुकरण ही सची उन्नति है, यही आजकल के नेताओं का मूल-मन्त्र है। आर्य संस्कृति के जितने भी धर्म-ग्रंथ हैं सब देववाणी (संस्कृत) में हैं। वर्तमान नेता गण उससे सर्वथा अपरिचित अथवा अत्यल्प परिचित होते हुये भी केवल उन सद् ग्रन्थों के अनुवाद मात्रों के आधार पर ही उनके उलटे सीधे अर्थ लगाकर उनके सद् सिद्धान्तों पर अनर्गल टीका टिप्पणी कर करके भोले भारतीयों को भ्रम में डाल रहे हैं। इसे सिवाय राष्ट्र के दुर्भाग्य के और कहा भी क्या जा सकता है।

और की तो बात ही जाने दीजिये, हमारे देश के पूज्य नेता बापू जी ने भी 'अनाशक्ति-योग' नामक श्रीमद्भगवद् गीता की व्याख्या में महाभारत जैसे प्रामाणिक ग्रंथ को भी कोरी कल्पना ही लिख मारा है। महाराज ! यदि 'महाभारत' कल्पना है तब तो फिर यह कहना ही पड़ेगा कि हम आप, और यह समस्त संसार सभी कल्पना है। फिर इस कोरी कल्पना के पीछे इतनी जल्पना क्यों ? जब सबसे बड़े नेता के विचार ऐसे हैं तो फिर यदि अन्य छोटे मोटे नेता लोग धर्म-ग्रन्थ एवं पुराणादि को थोथे और ब्राह्मणों का वाग्जाल जिसमें उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए संसार को जकड़ रक्खा है कहते हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है।

हमारे आर्योपास्य धर्म-ग्रन्थों में 'श्रीदुर्गा-सप्तशती' का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान युग में जब कि चारों ओर से आर्य-सभ्यता एवं संस्कृति को मटियामेट करने के प्रबल प्रयत्न हो रहे हैं, और आर्य-धर्म-ग्रन्थों को गपोड़ और वाग्जाल कह कर त्याज्य किया जा रहा है, तब भी 'श्रीदुर्गासप्तशती' का प्रभाव भारतीय जनता पर ज्यों का त्यों ही बना हुआ है। उसमें किसी भी प्रकार की त्रुटि नहीं आई है। अब भी अगणित लोग नित्य प्रति 'श्रीदुर्गा-सप्तशती' का पाठ करते कराते दिखाई देते हैं। जिनके पास इतना समय नहीं कि वे नित्य-प्रति पूरा पाठ कर सकें वे केवल कवच का पाठ तो अवश्य ही कर लेते हैं। किन्तु, इतना सब कुछ होते हुए भी

खेद के साथ कहना पड़ता है कि यह जो कुछ भी हो रहा है केवल अन्धानुकरण मात्र ही है। संस्कृतज्ञ विद्वानों ने कभी इस महान् रहस्य-पूर्ण ग्रन्थ का रहस्योद्घाटन करने-का प्रयत्न नहीं किया, जिससे धर्म-प्राण जनता इसके वास्तविक रहस्य को समझ कर तदनुसार कार्य करने का प्रयत्न करती। यह स्वयं सिद्ध है कि यदि किसी किसी मन्त्र स्तोत्रादि के वास्तविक रहस्य को समझकर उसका जाप अथवा पाठादि किया जाय तो वह विशेष फलदायी हुआ करता है और वैसे तो श्री गो० तुलसी दास जी ने इसके सम्बन्ध में लिखा ही है कि 'भाव कुभाव अनख आलसहू। नाम जपे मङ्गल दिश दसहू।"

'श्रीदुर्गा-कवच' के अन्दर जो परम गुह्य राष्ट्रीय ज्ञान का अगाध भण्डार भरा हुआ है उसका कुछ अंश इन पंक्तियों के लेखक को अब की ही बार दर्शन प्राप्त होने पर महामहिम सर्वतन्त्रस्वतंत्र पूज्य चरण श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवाचार्यजी महाराज की कृपा से प्राप्त हुआ है। इस पर सम्यक् विवेचन तो यदि कभी कृपा हुई तो पूज्य आचार्यचरण ही करेंगे, किन्तु उनकी ही आज्ञा से निज सामर्थ्यानुसार कुछ प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है कि इस लेख के पाठक इससे लाभ उठाते हुए पूज्य आचार्य चरण के उपदेश की प्रतीक्षा करेंगे।

स्वयंभू सृष्टि का सृजन कर चुके थे। राज्यवाद का भी प्रसार हो चुका था। एक राजा दूसरे के साथ युद्ध भी करने लगे थे। ऐसे ही समय में आर्यों के पुरोहित महामुनि मार्कण्डेय के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि किसी ऐसे रक्षा-कवच का अन्वेषण किया जाय जो परम गोपनीय हो और जिसके द्वारा हमारा नेता अथवा राजा अजेय हो जाय। यही विचार हृदय में दृढ़ करके वह अखिल पितामह ब्रह्माजी के पास पहुंचे और उनसे इस प्रकार कहा——

"यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षा करं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह !"

हे पितामह! आप मुझे कोई ऐसा कवच प्रदान कीजिए जो संसार में परम गुह्य हो और हमारे नेता की रक्षा करने में सर्व प्रकार से समर्थ हो।

'परम गुह्य' कहने का तात्पर्य यही था कि यदि आपने बताया भी और वह संसार के अन्य लोगों को भी ज्ञात हुआ तो विपक्षी भी उससे लाभ उठा कर अजेय बन सकेंगे, और फिर उसके द्वारा हमारा मनोरथ पूर्ण न हो सकेगा।

मार्कण्डेय ऋषि के ऐसे वाक्य सुनकर पितामह बोले—

"अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्व भूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवच पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥"

हे विप्र! हे महामुने!! तुमने केवल अपने नेता को ही-अजेय बनाने के हेतु रक्षा-कवच का प्रश्न किया है, किन्तु, मैं तुम्हें ऐसा परम गुह्यतम और पुण्य को देने वाला दुर्गा-कवच बताता हूँ जो सर्वभूतोपकारी है। तुम उसे सावधानता पूर्वक श्रवण करो।

इतना कह कर पितामह दुर्गा के नव नामों का उपदेश करने लगे। साधारणतया विद्वान् लोग उन्हें नाम के रूप में जानकर ही छोड़ देते हैं, और उन नव नामों में कैसी परम गुह्यतम शक्ति निहित है इसपर ध्यान ही नहीं देते। वास्तव में यदि किसी भाग्यवान् को श्रीगुरुकृपा से इन नवनामों का रहस्य समझ में आजाय तो वह अपने राष्ट्र को ऐसा शक्तिशाली बना सकता है कि संसार की कोई प्रबल से प्रबल शक्ति भी उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकती।

लोग बाह्य आक्रमणों से त्राण पाने के लिए

दुर्ग निर्माण किया करते हैं। जिसका दुर्ग जितना दृढ़ होता है वह उतना ही अज्ञेय माना जाता है। अतः जिसके पास एक नहीं नौ-नौ रक्षा दुर्ग हों और वह भी एक से बढ़कर एक अजेय और स्वयं स्वयंभू के बताये हुए, फिर भला संसार में उसे कौन जीत सकता है। उक्त देवीकवच में वर्णित दुर्गा के नव नाम ही नौ रक्षा दुर्ग हैं। कदाचित् लोगों को यह भ्रम हो कि दुर्गा के नव नामों में से यह नौ दुर्ग का पचड़ा कहां से निकल पड़ा ? तो उन्हें विचार करना चाहिये कि क्या पितामह की बुद्धि सठिया गई थी कि महामुनि मार्कण्डेय तो प्रश्न करते अजेय रक्षा कवच का और पितामह गिनाने लगते दुर्गा के नौ नाम। वास्तव में जो इन नौ अजेय दुर्गों को दुर्गा के नौ नाम ही जान कर छोड़ देते हैं यह उनकी बुद्धि का भ्रम ही कहना चाहिए। पितामह ने तो यही रक्षा-कवच-स्वरूप नौ दुर्ग मार्कण्डेय मुनि को बताये हैं, जो पूर्णरूपेण अजेय हैं। वे नवदुर्ग ये हैं:--

'प्रथमं शैलपुत्रीति' प्रथम दुर्ग है शैल-पुत्री। शैल पुत्री का अर्थ पहाड़ की बेटी अथवा हिमालय की पुत्री नहीं, जैसा कि बहुधा वर्तमान पण्डितों को कहते सुना गया है। शीलवानों के सङ्गठित-समुदाय को 'शैल' कहते हैं। उन शीलवानों के सङ्गठित समुदाय से जो सन्तति उत्पन्न हो वह है शैलपुत्री। वास्तव में जो सन्तति शीलवानों से उत्पन्न नहीं हुई उससे राष्ट्र-कल्याण की आशा करना आकाश-कुसुम है। राष्ट्र-कल्याण वास्तव में शील-वानों की सन्तति से ही शक्य है। अतः सर्व प्रथम शीलवानों का सङ्गठन करके उसके द्वारा सन्तति उत्पन्न की जाय। यही पितामह के द्वारा निर्दिष्ट किया हुआ राष्ट्र कल्याणार्थ प्रथम अजेय रक्षा दुर्ग है।

'द्वितीयं ब्रह्मचारिणी' उस शैलजा को ब्रह्मचा-रिणी बनाया जाय। जो सन्तति शीलवानों से उत्पन्न नहीं वह ब्रह्मचारिणी बन ही नहीं सकती। ब्रह्मचा-रिणी में तीन बातें होती हैं, (१) अध्ययन (२) बोध (३) आचरण। जो शैलपुत्री इन तीनों अङ्गों को सम्यक् प्राप्त करे वही सच्ची ब्रह्मचारिणी है। यही है स्वयंभू द्वारा कथित द्वितीय अजेय दुर्ग।

'तृतीयं चन्द्रघंटेति' चन्द्र आनन्दप्रद शीतलता प्रदान करने और शुभ्रत्व एवं उज्ज्वलताका द्योतक है। घंटा सावधान करने का कार्य करता है। प्रथम शैलपुत्री उत्पन्न कर, द्वितीय उन्हें पूर्ण ब्रह्मचारिणी बना, तृतीय उनके द्वारा संसार को सावधान करने के हेतु उनसे चन्द्र जैसे निर्मल और शान्ति प्रदान करने वाले उपदेश कराये जाँय। ध्यान रहे कि प्रथम और द्वितीय दुर्गों का यथाविधि निर्माण-किये बिना तृतीय दुर्ग अजेय बन ही नहीं सकता। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमारी आँखों के सामने है। हमारे आज के चन्द्रघंटा का दावा करने वाले तथाकथित नेता-गण संसार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूम घूम कर घन-गर्जन के समान अपने उपदेशों का नाद कर रहे हैं, किन्तु उनके अनुयायीगण कल्याण प्राप्त करने के बदले अहर्निश विपत्ति ग्रसित ही होते जा रहे हैं। जहाँ देखो विपत्ति के बादल घहराते दिखाई पड़ते हैं। चारों ओर हिंसा का नग्न ताण्डव ही दृष्टि में आ रहा है। इसका मूल कारण यही है कि वह चन्द्रघण्टा का रूप भरने वाले उपदेशक वास्तव में चन्द्रघण्टा नहीं। कारण न तो वह शैलजा ही हैं और न ब्रह्मचारिणी ही। यही कारण है कि उनका चन्द्राघण्टा का स्वांग पूरा नहीं उतरता और वह केवल स्वांग ही रह जाता है। उनके उप-देश राष्ट्र के लिए ठीक इसी प्रकार सिद्ध हो रहे हैं जैसे किसी रोगी को निदान से अनभिज्ञ वैद्य की

औषधि। चाहे वह औषधि कितनी ही गुणकारी क्यों न हो यहाँ तक कि बिना यथोचित निदान के अमृत भी विष का ही कार्य कर जाता है। इसलिए सच्चे चन्द्रघंटा उत्पन्न करना ही राष्ट्र रक्षण के लिए ब्रह्मा का बताया हुआ तृतीय अजेय दुर्ग है।

'कूष्माण्डेति चतुर्थकम्' 'कु' का अर्थ है पृथ्वी और ऊष्मा वह गर्मी है जो पृथ्वी को धारण करती है। अर्थात् पृथ्वी को धारण करने की सामर्थ्य (वीर्य) अण्ड वह पेशी (थैली) है जिसमें यह रहता है। इस प्रकार यह कूष्माण्डा गर्भ धारण करने की शक्ति के अर्थ को प्रतिपादित करता है। उपरोक्त चन्द्रघंटा ही जब कूष्माण्डा बनती है तभी उसकी संतति से यथार्थ में राष्ट्र-रक्षण का कार्य हो सकता है। इस प्रकार विधाता ने मार्कण्डेय ऋषि को यह कूष्माण्डा नामक चतुर्थ अजेय दुर्ग बताया है।

'पञ्चमं स्कंद मातेति' ऐसी कूष्माण्डा ही स्कंद (स्वामी कार्तिक) के समान अजेय सेनापति उत्पन्न करने में समर्थ हो सकती है। स्कन्द की कथा विश्वप्रसिद्ध है, उसे लिख कर लेख का कलेवर बढ़ाना व्यर्थ है। ऐसे स्कन्द उत्पन्न करना ही पितामह द्वारा वर्णित पञ्चम दुर्ग है।

'षष्ठं कात्यायनीति च' जब राष्ट्र में पितामह के बताये हुए पञ्चम दुर्ग स्वरूप स्कन्दों का प्रादुर्भाव हो चुके तब उन्हें सम्यक् नियंत्रण में रखने के लिए किसी विशेष शक्ति की आवश्यकता होती है। क्योंकि शक्ति बहुधा बिना सम्यक् नियंत्रण के उच्छृंङ्खलता का रूप धारण कर लेती है और उससे हित के स्थान पर अहित ही विशेष होता है। इसके प्रमाणोंसे पुराण इतिहासादि भरे पड़े हैं। फलतः उपर्युक्त स्कन्दमाता ही राष्ट्रको स्कन्द प्रदान करके उनकेसम्यक् नियंत्रणको कात्यायिनी का रूपधारण करती है। अर्द्धवृद्धा, काषायवसना, अथवा, कात्यायिनी होती है। अर्द्ध-वृद्धा, अथवा शब्द पूर्णस्वातंत्र्य का द्योतक है और काषाय वसना वीतराज का। नियंत्रण की शक्ति स्वतन्त्र में ही है, परतन्त्र किसी का क्या नियंत्रण कर सकेगी। किन्तु सम्यक् नियंत्रण के लिए वीतराग होना आवश्यक है। क्योंकि यदि राग-द्वेष हुआ तो पक्षपात अवश्यम्भावी होगा। फलतः स्कन्द उत्पन्न करने के पश्चात् वह स्कन्दमाता अपने स्कन्दों को सम्यक् नियंत्रण में रखने के लिए कात्यायिनी का रूप धारण कर उनसे भली प्रकार राष्ट्र हित करावें। यही है पितामह द्वारा महामुनि मार्कण्डेय को बताया हुआ षष्ठ रक्षा दुर्ग।

'सप्तमं कालरात्रीति' वही कात्यायिनी सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र होकर अपने स्कन्दों द्वारा राष्ट्र के शत्रुओं का समूल विनाश कराने के लिए कालरात्रि का रूप धारण करे। कारण कि रिपुरहित राष्ट्र ही उन्नति पथ पर अग्रसर हो कर समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। जब तक उसे अराष्ट्रिय शत्रुओं का खटका बना रहता है तब तक वह राष्ट्र न किसी प्रकार का रचनात्मक कार्य ही कर सकता है, और न सम्यक् उन्नति ही कर सकता है। फलतः यही है ब्रह्माजी के द्वारा बताया हुआ राष्ट्र रक्षार्थ सप्तम अक्षय दुर्ग।

'महागौरीति चाष्टमम्' वही कात्यायिनी कालरात्रि का कार्य सम्पादित कर चुकने पर महागौरी का रूप धारण कर राष्ट्र कल्याण के हेतु रचनात्मक कार्य करा राष्ट्र को सर्व प्रकार से सम्पन्न व समृद्ध बनाने का कार्य करें। यही है महागौरी नामक अष्टम दुर्ग।

'नवमं सिद्धिदात्री च' इसके पश्चात् ही राष्ट्र में वास्तविक ऋद्धि-सिद्धि का समावेष हो कर राष्ट्र सर्व

प्रकार से सम्पन्न बनाना चाहिये, यही है अन्तिम नवम दुर्ग।

इस प्रकार ब्रह्माजी ने दुर्गा के नव नामों में राष्ट्र को अजेय बनाने के लिए परम गुह्यतम नव दृढ़ दुर्गों का वर्णन महामुनि मार्कण्डेय से किया है। आगे "अग्निना दह्यमानस्तु" से लेकर "ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्नसंशय" तक इस विश्व-कवच की फल-स्तुति कही गई है। इस प्रकार प्रथम कवच पूर्ण होता है।

इसके पश्चात् दूसरा राष्ट्र-कवच व तीसरा व्यक्ति-कवच है इस प्रकार तीनों से मिलकर यह महाकवच बना है। यदि भविष्य में पूज्य आचार्य चरण की कृपा हुई तो कभी शेष दो कवचों पर भी प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायेगा।

स्वार्थ अच्छा है !

[ले—श्री पं० बलजिन्नाथ जी शास्त्री M. A., M. O. L.]

इस समय सभी हमें यह उपदेश दे रहे हैं कि हमें स्वार्थ का त्याग करना चाहिये। परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो स्वार्थ के बिना कोई भी काम चल नहीं सकता। हम पहले वस्तु को ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जान लेते हैं अथवा मन द्वारा उसका विचार करते हैं। उसके अनन्तर हम वस्तु का अपने साथ कुछ सम्बन्ध खड़ा करते हैं। यदि वह सम्बन्ध हमारे अनुकूल हो तब हम वस्तु के प्रति इच्छा करते हैं, यदि प्रतिकूल हो तो द्वेष करते हैं। तब उसकी प्राप्ति या उसके परिहार के लिए प्रयत्न होता है। इस अनुकूलता या प्रतिकूलता के विचार के बिना राग या द्वेष उत्पन्न नहीं हो सकते। राग या द्वेष के बिना कोई भी काम सम्भव नहीं। अनुकूलता और प्रतिकूलता हमारे अपने आपसे सम्बन्ध रखती हैं। अपना आप ही होता है स्व। अपने आप के ही लिए कार्य किये जाते हैं। इसी कारण सभी कार्यों का स्रोत स्वार्थ ही है। शुभ कार्य भी स्वार्थ के लिए और अशुभ कार्य भी किसी स्वार्थ के ही लिये किये जाते हैं। यदि जगत् में स्वार्थ न हो तो सभी अकर्मण्य बनेंगे और दिनों में सारी सृष्टि का संहार हो जाएगा। यदि देवता अपने कार्य में लगे हुए हैं तो स्वार्थ के लिये, यदि ब्रह्मा जी सृष्टि करते हैं, विष्णु भगवान् रक्षा करते हैं अथवा भगवान् रुद्र उपसंहार करते हैं तो स्वार्थ के लिये। स्वयं परमेश्वर ने भी तो यह जगत की रचना अपने आनन्द के लिए ही रची है। इसका भी मूल स्रोत स्वार्थ ही है।

स्वार्थ-त्याग के साथ शाथ हमें बड़े बड़े महानुभावों से उपदेश मिलते हैं कि अपने स्वत्व का भी त्याग करो। सर्वथा स्वत्व रहित (Selfless) हो जाओ। स्वत्व हीनता (Selflessmen) के पुजारी आजकल बड़े बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति मिलेंगे। परन्तु विचार करने से प्रतीत होता है कि यह नीति बहुत ही भयावह है। यह तो हमें बौद्धों के अनात्म-वाद की ओर ले जा रही है। इस शून्यवाद से भगवान् शङ्कराचार्य बहुत ही घबरा गये थे। उन्होंने इसका पूर्णता से खण्डन करके घोषणा की कि शून्य-वाद अत्यन्त हेय है। स्वत्व के विचार के बिना

सारा जगत् नीरस और निष्प्रयोजन हो जाता है। इसी कारण भगवान् याज्ञवल्क्य जी मैत्रेयी को उपदेश देते हैं कि:--

नहि सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति।
आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति॥

इस कारण स्वत्व ही इस जगत् के व्यवहार का प्राण है। स्वत्व पर ही स्वार्थ निर्भर है। स्वार्थ ही समस्त कर्मों के चक्रों का केन्द्र है। स्वार्थ का त्याग कोई कहे भी पर करतो नहीं सकेगा। क्योंकि स्वार्थ का प्राण है अपनापन। अपनापन सभी जीवों का स्वभाव है। इस सहज स्वभाव का त्याग कौन कर सकता है। अग्नि चाहे कि गरमी का त्याग करूँ तो क्या कर सकता है? कभी भी नहीं। स्वभाव तो दुरतिक्रम माना गया है। इस कारण स्वार्थ-त्याग के उपदेश कोरी कल्पनायें हैं। इनमें कोई भी तत्त्व नहीं।

दूसरे पक्ष से हम विचार करें तो विदित होगा कि हमारे राष्ट्र और हमारी जाति की आधुनिक दुरवस्था का कारण हमारा स्वार्थ ही है। स्वार्थ ने ही हमारे राष्ट्र को परतन्त्र बनाया, स्वार्थ के ही दोष से हम एक सहस्र वर्षों से परतन्त्रता के भीषण रौरव नरक के दुःखों को भोग रहे हैं। यह सभी सङ्कट हमारे पूर्वजों तथा हमारे अपने स्वार्थ के फल हैं। यदि आज भी हमारी जाति स्वार्थ भावना को छोड़ दे तो आज ही हमारा राष्ट्र पूर्ण स्वतन्त्र हो जाये, आज ही हमारे आभ्यन्तर बाह्य शत्रु नष्ट हो जायें। इसलिये राष्ट्र के कल्याण के लिए स्वार्थ त्याग की अत्यन्त आवश्यकता है। राष्ट्र कल्याण पर ही हमारा व्यक्तिगत कल्याण प्रतिष्ठित है। इस कारण व्यक्तिगत कल्याण के लिये भी हमें निःस्वार्थ हो जाना चाहिये।

इस प्रकार से ये दो विचारधारायें हैं। दोनों पक्की युक्तियों के आधार पर खड़ी हैं। इन दोनों को कैसे मिलाया जाये। इनका निर्णय कैसे हो। इस विषय पर हमारे दर्शन-शास्त्र इस प्रकार से प्रकाश डालते हैं--

स्वार्थ सचमुच प्रत्येक जीव का स्वभाव है। इसका त्याग असम्भव है। हाँ, स्वार्थ के दो मुख्य रूप हैं। एक है परिमित स्वार्थ और एक है अपरिमित स्वार्थ। परिमित स्वार्थ में जो परिमितता है यही उसमें पाप है, क्योंकि परिमितता ही एक बड़ा भारी मल है। इसी को आगमों में आनव मल कहा गया है। अपरिमित स्वार्थ में अपरिमितता ही गुण है। यही इसकी निर्मलता है। परिमितता और अपरिमितता में भी तारतम्य है। एक कोटि तो अत्यन्त परिमितता की है और दूसरी कोटि पूर्ण अपरिमितता की है। इन दो के मध्य में सहस्रों भूमिकायें हैं। कहीं पर थोड़ी और कहीं पर बहुत परिमितता राज्य कर रही है। इसी प्रकार से अपरिमितता में परापर-दशा और परा-दशा का तारतम्य है। जो जीव इस शरीर को ही स्व मानता है उसका स्वार्थ अत्यन्त परिमित है, जो इस स्वत्व की भावना को अपने परिवार तक फैलाता है उसकी परिमितता लेशमात्र घटती है। जो फिर अपने ग्राम, प्रांत, और राष्ट्र तक को अपना--आप मानता है उसकी परिमितता बहुत ही घट जाती है और कुछ कुछ अपरिमितता का भी उसमें उदय हो जाता है। अपने राष्ट्र पर प्राण देने वाला जीव अपने विशाल अर्थात् राष्ट्रीय स्वार्थ के लिए अपने संकुचित अर्थात् शारीरिक या पारिवारिक स्वार्थ का बलिदान करता है। ऐसे वीर की दो आत्मायें होती हैं। उसकी संकुचित आत्मा उसका शरीर परिवार आदि होता है और समस्त राष्ट्र या सम्पूर्ण जाति उसकी विशाल आत्मा होती है। अपनी संकुचित आत्मा के प्रयोजन को वह अपनी विशाल आत्मा के चरणों में भेंट चढ़ाता है। इस प्रकार से उसका मल काफी

घट गया है और उसमें निर्मलता का उदय हो रहा है। इसी कारण ऐसा वीर प्रशस्य और माननीय है। इस प्रकार की विशाल स्वार्थ की भावना को ही साधारण लोगों की भाषा में हम निःस्वार्थता कहते हैं, परन्तु शास्त्रीय परिभाषा में इसको हम विशाल या किञ्चित् अपरिमित स्वार्थ कह सकते हैं।

पूर्ण अपरिमित स्वार्थ को तो योगी ही प्राप्त कर सकता है। वह अपनेपन की भावना को बढ़ाता हुआ राष्ट्र से एक महाद्वीप तक, वहां से जगत् तक और इस जगत् से समस्त ब्रह्माण्ड तक ले जाता है। समस्त ब्रह्माण्ड ही उसका शरीर बन जाता है। इस प्रकार से वह क्रम से पूर्ण स्वार्थ तक पहुंच जाता है। उस दशा में जो कुछ है स्व ही स्व है, पर का कहीं नाम भी नहीं। ऐसे महानुभाव लाखों या करोड़ों में से कहीं एक दो होते हैं। इस दशा पर शीघ्र पहुंचना सबके लिए सम्भव नहीं। परन्तु प्रयत्न सभी को करना चाहिये। कम से कम इस जन्म में अपने स्वार्थ को इतना विशाल बना लें कि हिमालय पर्वत से लेकर कन्याकुमारी तक और कामरूप से लेकर हिन्दुकुश तक फैले हुए विशाल भारतवर्ष को अपना शरीर समझें, तीस करोड़ आर्य जनता को अपना आप समझें, जो काम करें वह इस भावना से करें कि हमारे तीस करोड़ शरीरों का कल्याण हो। हमें अपने संकुचित स्वार्थ को इस विशाल स्वार्थ चरणों में बलिदान करना चाहिए। ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि जिस प्रकार से विराट राष्ट्र पुरुष के अङ्ग बने थे उसी प्रकार से हम सबके अङ्ग बन जाने चाहियें। हम सबको यह समझना चाहिये कि ब्राह्मण हमारे विशाल शरीर का शिर हैं, क्षत्रिय हमारे ही बाहु हैं, वैश्य हमारे ही ऊरु हैं और शूद्र हमारे ही पैर हैं। हमें समस्त कार्य इस ढङ्ग से करने चाहिये कि हमारे इन समस्त अङ्गों को पुष्टि मिले। किसी भी अङ्ग को हमें शिथिल नहीं होने देना चाहिये। समस्त अङ्गों को दृढ़ बनाकर अपने इस आदर्श शरीर को परम वैभव तक लेजाना चाहिये। यही हमारा स्वार्थ और यही हमारा परमार्थ हो सकता है। अपने इस विशाल शरीर को स्वस्थ बनाकर हम अपने विश्व-शरीर को भी सुधार सकते हैं, परन्तु इस राष्ट्र शरीर की अवहेलना हमारी सब आशाओं पर पानी फेर देगी। अतः हम सभी को इस विशाल राष्ट्रीय स्वार्थ की पूर्ण उपासना करनी चाहिये।

लेखक वृन्द !

आपका लेखनी-प्रसाद पाकर 'श्रीस्वाध्याय' पुष्ट एवं समृद्ध हो रहा है। हम तथा श्रीस्वाध्याय के पाठक हृदय से आपके कृतज्ञ हैं।

'श्रीस्वाध्याय' आगामी विजयादशमी (अक्तूबर ४७) में अपना 'व्यापारअङ्क' प्रकाशित करने जा रहा है; अतः आपसे प्रार्थना है कि व्यापार सम्बन्धी लेख कविता कहानी आदि संक्षिप्त हृदय-स्पर्शी मौलिक सुन्दर भाषा में ३० जुलाई तक सम्पादक के पास भेजने की कृपा करें।

विषय-सूची सेवा में शीघ्र भेजेंगे।

विनित—

सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

आगामी 'नववर्षाङ्क' के कुछ आकर्षण

आधुनिक कीटाणुवाद, ले० डा० श्रीनाथ तिक्कू शास्त्री A. M. S. (B. H. U.)

युगान्त के चिह्न, ले० श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास सम्पादक 'विक्रम'।

आधुनिक-युग के एक महान् योगी की महत्त्वपूर्ण जीवनी और संसार के सम्बन्ध में उनकी चमत्कारपूर्ण भविष्यवाणी ले०—कविराज श्री विद्याधरजी वैद्य विद्यालङ्कार।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र की वर्तमान स्थिति, ले० श्री पं० बलदेवजी मिश्र ज्योतिषाचार्य।

गीता-गौरव' ले० श्री डा० श्रीनाथ शास्त्री तिक्कू A. M. S. (B. H. U.)

फलित पर अन्वेषणात्मक विचार, ले० –श्री रघुवीर शरण शर्माजी।

ज्योतिष का आरम्भिक शिक्षण, ले०—श्री पं० बलदेवजी मिश्र ज्योतिषाचार्य।

इसके अतिरिक्त आरम्भिक लाल स्याही से छपे हुए पृष्ठ में दी हुई रूपरेखा के अनुसार व्यापारांक में अनेक महत्त्वपूर्ण लेख, कविता, कहानी, साहित्य-समालोचना आदि अभूतपूर्व बेजोड़ सामग्री रहेगी। १५० पृष्ठ से अधिक यह सचित्र नववर्षाङ्क (व्यापाराङ्क) हिन्दी-साहित्य की अपूर्व निधि सिद्ध होगा। प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी पर अनुभवी ज्योतिषियों के अनेक लेख, लम्बी लाइन के अचूक चान्स और दैनिक रुख तो रहेगी ही, साथ ही पाठकों के आग्रह से आगामी वर्ष से प्रत्येक अङ्क में १२ राशियों का त्रैमासिक फलादेश भी विशेष रूप से दिया जावेगा।

आप व्यापार कैसे करें ?

'श्रीस्वाध्याय' से व्यापारी वर्ग का भी विशेष स्नेह है। उन्हीं के आग्रह से हम भारतवर्ष के प्रसिद्ध गण्य मान्य ज्योतिषियों के व्यापार पर प्रकाश डालने वाले अनेक विशेष लेख इसमें निरन्तर प्रकाशित कर रहे हैं।

कुछ व्यापारी ग्राहकों का कहना है कि 'श्रीस्वाध्याय' में व्यापार सम्बन्धी जो लेख प्रकाशित होते हैं, उनके भावों में कभी-कभी परस्पर अन्तर होता है। ऐसी अवस्था में हम किस लेख के आधार पर व्यापार करें ?

व्यापारी वर्ग को चाहिये कि, वे प्रत्येक लम्बी लाइन और प्रत्येक दिन के भावों को प्रत्येक ज्योतिषी के रुख से मिला लें, बहुमत से जिधर अधिक राय हो उसी के अनुसार व्यापार करना चाहिये। विशेष रिपोर्ट २५) फीस भेजकर हमारे यहाँ से पृथक् भी मंगवायी जा सकती है।

इस आधुनिक सट्टे के व्यापार का प्राचीन ग्रन्थों में कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। विद्वान् दैवज्ञ यथाशक्ति इस पर अभी अपना-अपना अनुसन्धान कर रहे हैं। जब तक इस विषय पर सामूहिक रूपेण पूर्ण अनुसन्धान (रिसर्च) न हो जाये तबतक किसी एक ज्योतिषी की रुख निश्चित रूपमें शतप्रतिशत सदा ठीक उतरना सर्वथा असम्भव है। इसी लिये हम व्यापारी वर्ग के लाभार्थ भारतके अनेक अनुभवी सुप्रसिद्ध ज्योतिषियों के विचार 'श्रीस्वाध्याय' में निरन्तर बड़े परिश्रम से दे रहे हैं, ताकि सब का समन्वय (मिलान) करके व्यापारी वर्ग अपने व्यापार में सफलता प्राप्त कर सकें।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

उठो ! श्रीकृष्ण आ रहे हैं !

[लेखिका—श्री वेदकुमारी प्रभाकर]

पवित्र पृथ्वी की पावन प्रजा को असुरों के अत्याचारों ने आतुर कर दिया, देव दुखित हुए, भूमि भय-भीत। भक्त वसुदेव कंस की काली करतूतों से कष्ट भोगने, काले कारागार में दीन देवकी के साथ हाथ बांध बन्द कर दिये गये; भयङ्कर भादों की यामिनी भयावनी बन भव की भव्यता को निगलने जा ही रही थी कि श्रीकृष्ण की कान्ति ने देवों का दुख, भूमि का भय वसुदेव-देवकी का त्रास, कंस की क्रूरता और भव की भयङ्करता को एक साथ समाप्त कर दिया।

अन्धकार में प्रकाश हुआ, प्रजा को विश्वास हुआ, असुरों को त्रास हुआ और आर्यत्व का विकास हुआ।

यह बात है आज से पांच हजार वर्ष पूर्व की, पर श्रीकृष्ण आज भी हैं, उसी रूप में भक्तों के हृदयों में, पावन प्रतिमाओं में, आर्य-भूमि के कण-कण में।

परिधि में घूमती हुई पांच हजार वर्ष पुरानी परिस्थितियां अपने नग्न रूप में फिर सामने हैं। पश्चिमोत्तर में काल-यवन के अत्याचारों की पुनरावृत्ति भी प्रारम्भ हो चुकी है, प्राग्ज्योतिषपुर (नोआखाली प्रान्त) में फिर असुर अपना राज्य स्थापित कर रहे हैं, आज फिर वहां १६ सहस्र कन्यायें भौम-असुरों ने कैद कर ली हैं। इधर इन्द्रप्रस्थ में प्रजा-तन्त्र राज्य की स्थापना के प्रयत्न भी जारी हैं। सब कुछ वही है; पर श्रीकृष्ण अभीतक नहीं उठे।

प्रतिवर्ष भादों आता है, भक्तों के भगवान् खीरे के गर्भ से प्रतिवर्ष प्रगट होते हैं, पर खीरे के भगवान् यदि सच कहा जाय तो खेल के भगवान् होते हैं। भगवान् खीरे से नहीं जब हृदय से प्रगट होंगे तभी उनका 'प्रकट होना' प्रकट होना है। पर आज भारतीयों के हृदय में भगवान् हैं कहां ? यदि भगवान् होते तो क्या ये भारतीय इतने दुर्बल होते ? इतने शक्तिहीन भीरु और परावम्बी होते ? भगवान् श्री सम्पत्ति सुख बल शक्ति और जो कुछ उत्तम है उसके प्रतीक हैं। जिस हृदय में भगवान् हैं उसमें दुर्बलता रह नहीं सकती, जिस हृदय में भगवान् नहीं उसमें कभी सबलता आ नहीं सकती। यदि हम निःशक्त हों और भगवान् हमारे हृदय में हों तो यह एक साकार सत्य है कि उस हमारी निःशक्तता में भी विजय छिपी होगी। जहां भगवान् हैं वहां लक्ष्मी रहती है, जहां भगवान् हैं, वहां बल, शक्ति, विभूति और विजय विहार करते हैं। जहां दुर्बलता है, जहां श्री नहीं, सम्पत्ति नहीं, विजय नहीं वहां भगवान् नहीं; जहां ये हैं वहां भगवान् हैं।

पर यह समझ में नहीं आता कि आज भारतवासी भगवान् को क्यों बुला रहे हैं ? यह अनधिकार चेष्टा क्यों और किसलिये कर रहे हैं। क्या इन वर्तमान युद्धों में रक्षा के लिये ? पर भगवान् लड़ते कहां हैं, उन्होंने तो महाभारत से पूर्व ही न लड़ने की प्रतिज्ञा कर ली थी, तो फिर वे आकर युद्ध करेंगे कैसे ?

लोग कहते हैं—'लड़ेंगे नहीं तो गीता सुनाकर भारतीयों की कायरता ही दूर कर देंगे।' पर गीता तो वे पहिले ही सुना चुके हैं, आज भी उनकी गीता हमारे पास है, हम उसी को क्यों नहीं पढ़ते ? जब हम उनकी पहिली देन का ही आदर नहीं करते तो भगवान् दूसरी देन किसलिये देंगे ?

भगवान् उनका साथ देते हैं जो स्वयं लड़ना जानते हों। जरासन्ध से भगवान् लड़े थे ? उन्होंने भीम से उसे मरवाया था, महाभारत में वे लड़े थे ? अर्जुन को लड़वाया था। तुम भी लड़नेवाले अधिकारी बनो ! भगवान् तुम्हारे रथ पर आकर स्वयं बैठ जायेंगे।

वसुदेव और देवकी पुरुषार्थ और चेष्टा के प्रतीक हैं। जब चेष्टा और पुरुषार्थ एकत्रित हो जाते हैं तो विजय के प्रतीक श्रीकृष्ण आये बिना रह नहीं सकते।

पुरुषार्थ और चेष्टा मिल कर ब्रह्म को साकार कर देते हैं। उपासना तो तभी उपासना है जब वह निराकार को साकार, अमूर्त को मूर्त, अभाव को भाव और अनहोनी को होनी कर दे। निराकार की उपासना हो ही कैसे सकती है ? निराकार की उपासना करो निराकार तुम्हारे सामने आ जायेगा—सफा-चट हो जायगा। साकार की उपासना करो ! कृष्ण स्वयं आयेंगे और तुम्हें कहेंगे—

मयैवेते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् !

वे साकार होते ही प्रच्छन्न रूप से दुष्टों का नाश कर देंगे, पर प्रगट रूप में तुम्हें ही सब करना होगा। कृष्ण तुमसे भी कुछ चाहते हैं और वे चाहते हैं—'निमित्त मात्रं भव'। यह उनकी आज्ञा है—आदेश है, यह तुम्हें सुनना ही पड़ेगा, मानना ही पड़ेगा, नहीं तो—

न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।

नष्ट हो जाओगे।

महाभारत को हुए ५००० से अधिक वर्ष बीत गये, पर क्या तबसे किसीने कृष्ण की भक्ति नहीं की ? क्या उन्हें किसी ने बुलाया नहीं, क्या वे इतने पक्ष-पाती हैं कि केवल पाँडव-शत्रुओं का ही प्रच्छन्न रूप से नाश कर सकते थे, क्या अब दुर्योधन से अधिक अत्याचारी हैं ही नहीं, जिनका उन्हें नाश अभीष्ट हो ? क्या वे अपनी इस नीति को भूल गये हैं कि—

वध्यः सर्प इवानार्यः सर्वलोकस्य दुर्मतिः।

(महा० उद्यो० ७३।२७)

दुर्बुद्धि अनार्यों को सर्प के समान जल्दी ही मार देना चाहिये।

क्या आर्य-भूमि में अनार्यों का उत्कर्ष उन्हें सह्य है ?

नहीं, आर्य-जाति के अपकर्ष को कृष्ण कदापि सह नहीं सकते और भक्तों के आमन्त्रण पर आये बिना रह नहीं सकते। जब जन के हृदय में वेदना होती है तब आनन्दकन्द श्रीकृष्ण वेदना के विनाश के लिये हृदय छोड़कर बाहिर आ जाते हैं और वेदनाप्रद वैरियों का विनाश कर देते हैं, पर करते हैं प्रच्छन्न रूप से।

कृष्ण एक बार नहीं अनेक बार आये और दुष्टों का दमन कर चले गये। चन्द्रगुप्त और विक्रमादित्य जैसे वीरों ने जब श्रीकृष्ण का आवाहन कर अनार्यों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा तब उनकी विजय-वैजयन्ती ईरान के ऊँचे कंगूरों तक लहराई। फिर अनार्यों को शताब्दियों तक भारत को ऊँची दृष्टि से देखने का साहस नहीं हुआ। यह सब श्रीकृष्ण की ही तो कृपा थी और उन्हीं के कर्मयोग का फल।

कृष्ण को बुलाओ ! वे अवश्य आयेंगे। अनार्यों का दमन करेंगे, अपनी प्रतिज्ञा और नीति का पालन करेंगे, पर करेंगे सब प्रच्छन्न रूप से। प्रत्यक्ष में जो कुछ करना है वह तुम्हें करना है क्योंकि तुम प्रत्यक्ष हो। भगवान् जो कुछ करेंगे वह अप्रत्यक्ष रूप से क्योंकि वे अप्रत्यक्ष हैं।

कृष्ण विराट् हैं। वे आते हैं विराट् क्षेत्र में सङ्कीर्णता उन्हें बुरी लगती है। हम उन्हें भक्ति का वरदान लेने के लिये बुलाते हैं, हम उनसे व्यक्तिगत पारलौकिक मोक्ष के द्वार खुलवाते हैं, हम उनसे मोक्ष-भवन के कमरे रिजर्व कराते हैं और श्रीकृष्ण इतना ही करके चले जाते हैं।

हम उन्हें युद्ध का निमन्त्रण देने आज तक गये ही नहीं, हमने उन्हें जयघोष के साथ कभी बुलाया ही नहीं, हमने उनके सन्मुख सार्वभौम स्वतन्त्रता की अभिलाषा कभी रक्खी ही नहीं, हमने उनसे आर्यत्व की रक्षा का वरदान मांगा ही नहीं, स्पष्ट शब्दों में हमें आर्यत्व से प्यार ही नहीं।

हम अनार्यों को अपना समझते हैं, उन्हें अपना समझकर उनकी उपेक्षा करते हैं, आर्य-भूमि की लुटती लाज को देख हमें लज्जा नहीं आती, हम नंगे और वनवासी होकर भी अपने धर्मात्मापन का प्रदर्शन करते हैं, हम इस तुच्छ भावना का आदर करते हैं—

श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके....

हिंसा पाप है, भीख मांगकर खाना धर्म है।

भिखारियों को राज्य नहीं मिलता। राज्य के अधिकारी राजा ही होते हैं। राज्य वे पाते हैं जो भगवान् से भी भीख नहीं सहयोग मांगते हैं। उठो भगवान् को बुलाओ ! और उनसे सहयोग की प्रार्थना करो !

भादों दूर नहीं है, अष्टमी फिर आ रही है और उन काली रातों में भगवान् भी फिर आयेंगे। हमारी आशा और प्रतीक्षा सफल होगी।

अब कृष्ण द्वापर में नहीं कलियुग में आ रहे हैं। अब उनके जीवन का उत्तरार्ध ही पूर्वार्ध होगा। तब पहिले बंशी थी अब पांचजन्य, तब पहिले रास थी अब रण, तब पहिले खेल थे अब युद्ध, तब पहिले सृजन था अब विनाश।

तुम भी उठो ! सचेत हो जाओ ! गांडीव उठालो ! धनुष की डोरी खींच लो। देवदत्त के घोष से दिशायें भर दो ! अब तुम्हें भी युद्ध के बाद ही गीता सुननी है, संन्यास और योग के रहस्य स्वतन्त्र होकर ही समझने हैं।

उठो ! एक नहीं अनेक नग्न द्रौपदियां तुम्हारी प्रतीक्षा में हैं। दुःशासन का अन्तकर के उन्हें नहा लेने दो, वे दुःशासन के रक्त से नहाकर बेणी-बन्धन की प्रतीक्षा में हैं। तुम पर उनका भरोसा है। श्रीकृष्ण उनके रक्षक हैं। उठो कृष्ण आ रहे हैं !

आओ ! नन्द नन्दन !

मैं आगे कदम बढ़ाता हूँ

मैं अमर मृत्यु की मृत्यु हेतु,
लो अपना शस्त्र उठाता हूँ।

मैं तोड़ नरक की दीवारें,
मैं फोड़ दमन की मीनारें,
मैं जोड़ जगत के जीवन को,
लो जीवित स्वर्ग बनाता हूँ।

यह मृत्यु मुक्ति की माता है,
नर जीवन का निर्माता है,
यह अमर पाठ देकर नर को,
नारायण आज बनाता हूँ।

—'रमेश गोयल'

भारतीय युद्ध का दोष किस पर

[श्री पं० कृष्णदत्त जी शर्मा]

जाति के जीवन के लिये इतिहास को जीवित रखना आवश्यक होता है। इतिहास अतीत का वह हृदय है जो परम्परा रूपी धमनियों द्वारा जाति के शरीर में जीवन-रक्त संचरित करता रहता है। इस लिये इतिहास की रक्षा जाति की रक्षा है और जाति की रक्षा इतिहास की रक्षा है।

हिन्दुओं के इतिहास की शृंखलायें बिखरती हुई वहां तक पहुंचती हैं जहां से सृष्टि का स्रोत फूटता है। यदि हिन्दुओं का इतिहास शृंखलाबद्ध होता तो आज वह संसार के इतिहास का पिता माना जाता। यद्यपि हिन्दूजाति का इतिहास अब भी उतना पर्याप्त है जितने से युगों लम्बे अतीत पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा सकता है, तथापि उसकी एक शृंखला को दूसरी शृंखला से जोड़ने में इतिहासकारों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। हमें अपने इतिहास को शृंखलाबद्ध करने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये।

श्रीस्वाध्याय के गत शरदङ्क में राजमाता श्रीमती महारानी शिवकुमारी देवीजी (नरसिंहगढ़) ने "भारतीय युद्ध का दोष किस पर" बहुत अच्छा प्रकाश डाला है और वे प्रसिद्ध विद्वान् पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयीजी के उन विचारों को भ्रमात्मक सिद्ध करने में पूर्ण सफल हुई हैं जिनमें उन्होंने भारतीय युद्ध का दोषी भीष्म और द्रोणाचार्य को ठहराया है। महारानी साहिबा का यह प्रशंसनीय प्रयत्न भारतीय स्त्रियों के लिये अनुकरणीय है, परन्तु वस्तुतः भारतीय युद्ध के दोषी राजा पांडु भी नहीं हैं जैसा कि महारानी साहिबा ने सिद्ध किया है। भीष्म और द्रोण तो इस युद्ध के दोषी हैं ही नहीं।

राजा पांडु ने अपने भाई को निरपत्य देखा और मृगी के श्राप-भय से अपने को भी सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ पाया। इसलिये तत्कालीन धर्म-शास्त्रों की आज्ञानुसार अपने को निरपत्यता के कारण कठिनतम नरक-यातनाओं का भी अधिकारी समझा और वे उस त्रास से त्रस्त हो उठे जो नरकगामी को मिलता है। उन्होंने धर्म-शास्त्र की ओर देखा और पाया कि ६ प्रकार के पुत्रों में से एक को भी पाकर वे नरक-यातना से छूट सकते हैं—

स्वयं जातः प्रणीतश्च परिक्रीतश्च यः सुतः।
पौनर्भवश्च कानीनः स्वैरण्या यश्च जायते॥

१-औरस-जो विवाहिता स्त्री से अपने ही द्वारा उत्पन्न हो।
२-प्रणीत-जो अपनी स्त्री से नियोग द्वारा उत्पन्न हो
३-परिक्रीत-जो खरीदा हुआ हो।
४-पौनर्भव-जो विधवा के गर्भ से उत्पन्न हो।
५-गूढ़-जो सवर्णा से उत्पन्न हो।
६-कानीन-जो कन्या से उत्पन्न हो।

इनके अतिरिक्त उन्होंने दत्तक, क्रीत, उपक्रीत उपागत, सहोढ और हीन-योनि-धृत आदि छे प्रकार के अन्य पुत्रों का भी उल्लेख पाया। इस प्रकार धर्म-

शास्त्र का आदेश उनके सामने था और वे प्रणीत के विना दूसरा पुत्र वन में प्राप्त भी नहीं कर सकते थे।

दूसरे उन्होंने अपने पूर्वजों की ओर भी दृष्टि-पात किया और पाया कि वे स्वयं नियोगज पुत्र हैं और उनके बड़े भाई धृतराष्ट्र और छोटे विदुर भी नियोगज ही हैं और इस नियोग का दोषी उन्होंने अपने पितामह शान्तनु को पाया।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

इस भगवदाज्ञा के अनुसार श्रेष्ठ कुल-पुरुषों का अनुकरण अपनी इस आपद्-अवस्था में उन्हें मान्य प्रतीत हुआ और इसीलिये वे इस ओर झुके। यह सत्य है कि भाई के घर सन्तान होने पर शास्त्र नियोग की आज्ञा नहीं देते, क्योंकि एक भाई के पुत्र वान् होने पर सब भाई पुत्रवान् समझे जाते हैं, जैसा कि मनु ने कहा है-

भ्रातॄणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत्।
सर्वांस्तांस्तेन पुत्रेण पुत्रिणो मनुरब्रवीत्॥
(मनु० ९।१८२)

परन्तु युधिष्ठिर के जन्म समय तक धृतराष्ट्र के यहां कोई सन्तान न थी, क्योंकि—

संवत्सरे धृते गर्भे गान्धार्या जनमेजय।
आह्वयामास वै कुन्ती गर्भार्थं धर्ममच्युतम्॥
(महा० आदि० १८३)

जब गान्धारी के गर्भ धारण करने पर एक वर्ष बीत गया था तब कुन्ती ने सन्तानार्थ धर्म का आवाहन किया था।

इसलिये महाराजा पांडु को संतान के लिये नियोगज विधि का आश्रय लेना पड़ा।

महारानी साहिबा के ये विचार शास्त्र सम्मत नहीं प्रतीत होते-

"उस नियोग से सन्तति उत्पन्न कराई और वह भी कुल-पुरोहित या वंश के किसी श्रेष्ठ पुरुष द्वारा नहीं, किन्तु एकान्त वन में कराई, जहां कोई साक्षी नहीं, यह बहुत अनुचित किया।"

कुन्ती ने महाराज पांडु की आज्ञा से दुर्वासा द्वारा बताये गये मन्त्र द्वारा अपने कुल-देवों का का आवाहन किया और उनसे धर्मराज आदि उत्पन्न हुए थे। इसलिये पांडव देव-पुत्र थे। अतएव ही भगवान् वासुदेव ने उनका पक्ष लिया और महा-भारत में समय-समय पर इन्द्रादि देवों ने आकर उनकी सहायता की। इसलिये पांडु पर भारतीय युद्ध और नियोग का दोष नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि महाराज युधिष्ठिर अपने परिवार के ज्येष्ठ थे, अतः राज्य के अधिकारी भी वही थे, परन्तु धृतराष्ट्र के पुत्रों ने युधिष्ठिर की इस मांग को अनुचित ठहराने के लिये अनेकों षड्यन्त्र रचे वे षड्-यन्त्र राजनीतिक न थे। केवल लोभ के वशी-भूत होकर ही रचे गये थे। इस अंश में भारतीय युद्ध का दोषी दुर्योधन और उसके साथी थे। द्रोणा-चार्य और भीष्म ने जानते हुए भी दुर्योधन के इस अनुचित व्यवहार में हस्तक्षेप और विरोध नहीं किया। इस अंश में वे भी दोषी हैं। संतानाभाव के कारण नियोगज सन्तान उत्पन्न करानेमात्र से भारतीय युद्ध का दोष राजा पांडु पर नहीं थोपा जा सकता। यदि नियोग ही भारतीय युद्ध का बीज है तो यह दोष पांडु की अपेक्षा राजा शान्तनु पर अधिक है, क्योंकि उन्हीं की कामवासनाओं ने कुल को इस मार्ग पर चलने के लिये बाध्य किया। अतएव नियोगांश में भी भारतीय युद्ध के दोषी महाराज शान्तनु हैं, पांडु नहीं।

महाराजा शान्तनु ने गङ्गा से जो विवाह किया

उससे आठवीं सन्तान देवव्रत हुए। देवव्रत को गङ्गा साथ लेकर चली गई और महाराज शान्तनु ३६ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहे।

३६ वर्ष के बाद देवव्रत शस्त्रास्त्र विद्या एवं धर्मशास्त्र में निपुणता प्राप्त करके हस्तिनापुर लौट आये। इन्हीं दिनों उन्होंने पिता को उदास एवं खिन्न पाया और देवव्रत के पूछने पर महाराज शान्तनु ने जो कुछ कहा वह सब वासना-पूर्ति के लिये था। उनकी सन्तानेच्छा वासना की पूर्ति मात्र थी। यदि सन्तान ही उनका इष्ट थी तो वे गङ्गा के चले जाने पर ही विवाह कर लेते; परन्तु वे इसके विपरीत ३६ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहे। वे धीवर-कन्या पर आसक्त थे। उनकी इसी आसक्ति ने ही देवव्रत को आजन्म ब्रह्मचारी रहने की भीष्म प्रतिज्ञा के लिये बाध्य किया और उन्हें राज का परित्याग करने की प्रतिज्ञा में आबद्ध होना पड़ा। यदि महाराज शान्तनु धीवर-कन्या पर आसक्त न होते तो हस्तिनापुर के राज्याधिकारी भीष्म होते। उनकी सन्तति भारतीय युद्ध का जन्म कदापि न होने देती। यदि भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा में आबद्ध न होते तो वे अम्बा से विवाह भी कर लेते। यदि इस प्रकार व्यभिचार को ही भारतीय युद्ध का दोषी ठहराया जाय तो महाराज शान्तनु को व्यभिचार का प्रोत्साहक कहना अत्युक्ति नहीं होगी। इस प्रकार भी भारतीय युद्ध के दोषी महाराज शान्तनु ठहरते हैं पांडु नहीं!

पांडु निर्दोष थे।





हिन्दू! उठ!! देख !!!



[श्री पं० दीनानाथ जी शर्मा शास्त्री विद्यावागीश]

संसार को अभय-दान देनेवाले हिन्दू! आत्मा की अमरता का विश्व को सन्देश देनेवाले हिन्दू! विश्व के शासक हिन्दू! तू आज इतना भय-भीत है? मृत्यु के शासक! आज मृत्यु देख कर काँप रहा है? क्या असुरों का दासत्व तुझे स्वीकार है? हिन्दुत्व के उपासक को इतनी कायरता, भीरुता, निर्लज्जता और उत्साहहीनता शोभा नहीं देती! हिन्दू! उठ देख!

तेरे भाई नृशंसता से काटे जा रहे हैं, दिन दहाड़े तेरी मां बहिनों का अस्तित्व लूटा जा रहा है; तेरे सुकुमार बालकों को बलात् बर्बबरता से भयङ्कर आग की लपटों में मांस के टुकड़े की तरह फेंक दिया जाता है, तुझे तेरी ही आग में जलाया जाता है, तेरे साथ वह व्यवहार किया जाता है जो पशुओं के साथ भी नहीं किया जाता! तेरी सम्पत्ति, तेरे देश और तेरे सर्वस्व पर दूसरों का अधिकार? उठ! आंखें खोल और देख!

आज तुझे और तेरे साथियों को तेरे सत्य सिद्धान्तों के महत्व जानने की आवश्यकता नहीं, आवश्यकता है उन्हें आचरण में लाने की! उठ! और अपना कर्म का गाण्डीव उठा और आगे बढ़!

माना कि तेरे सत्य सिद्धान्त तेरे नहीं, तेरी जाति के नहीं, विश्व के शान्ति-पथ का द्वार खोलते हैं, माना कि तेरे सिद्धान्तों को आचरण में लाकर भारतीय स्वतन्त्र और सुखी हो सकते हैं, यह भी माना कि तेरे ही सिद्धान्त मानवता की रक्षा कर सकते हैं, पर तेरे सिद्धान्त हैं तो मानवों के लिये ही? असुर उसका आचरण कब कर सकते हैं? वे तेरे सिद्धान्तों का गला घोटते रहे हैं, घोट रहे हैं और घोटते रहेंगे। तेरे वेद, पुराण, उपनिषद् शास्त्र सभी तो असुरता के विरोधी हैं, फिर असुर उन्हें क्यों जीवित रहने देंगे? अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिये, तुझे असुरों से लड़ना होगा, अब तू लड़े बिना रह भी नहीं सकता, मानवता तुझे लड़ायेगी, तेरे सिद्धान्त तुझे लड़ायेंगे, मां की पुकार और असहायों की चीत्कार तुझे लड़ायेगी और तू ही स्वयं को लड़ायेगा! उठ असुर तय्यार हैं!

माना कि तेरा यह कथन सत्य है कि तेरा कोई ऐसा नायक नहीं जो तुझे तेरा मार्ग दिखाये, अहिंसा की रक्षा के लिये तुझे हिंसा का सदुपयोग सिखाये, तेरे वीरत्व को प्रोत्साहन दे, तेरे सङ्गठन को दृढ़ बनाये, तेरे अधिकारों की रक्षा के लिये तुझे उकसाये और तेरे हिन्दुत्व को जगाये।

पर तू भी तो नायक है? उठ! जयध्वनि के साथ आगे बढ़! जाति तेरे नेतृत्व की प्रतीक्षा में है, राष्ट्र तेरे नेतृत्व की ओर देख रहा है, तेरे जन तेरे नेतृत्व की आशा बांधे खड़े हैं।

प्रगतिशील नेता किसी के साथ की प्रतीक्षा नहीं करते, वे यह नहीं देखते कि लोग मेरे पीछे हैं या नहीं, वे यह भी नहीं देखते कि मेरी पीठ कितनी

लम्बी है। वीर पीठ नहीं आगे की भूमि देखते हैं, जहां उन्हें पैर धर कर आगे बढ़ना है ! उठ भयंकर तूफान की तरह उठा। बवंडर की तरह उठ ! जिन्हें अपनी रक्षा करनी होगी, जिन्हें अपने परिवार को बचाना होगा, जिन्हें जनता से स्नेह होगा, जिनकी मां के चरणों में श्रद्धा होगी जो ईश्वर में विश्वास रखते होंगे, जिनका आत्माभिमान अभी जागरूक होगा, जो हिन्दू होंगे, वे स्वयं तेरे पीछे ही नहीं तेरे कन्धे से कन्धा भिड़ाकर आगे बढ़ेंगे। कायर भीरु और जीवम के अधिकार से वञ्चित पीछे रह जायंगे। कायर और भीरुओं के साथ की अपेक्षा अकेला बढ़ने में जीवन है और उनका साथ मृत्यु का आवाहन !

अपने आप पर भरोसा रख ! आत्म-विश्वास ही विजय का महामन्त्र है। उठ ! मन्त्र-बल तेरे साथ है ! उनका क्या भरोसा जो असुरों से मित्रता की आशा रखें ? असुर मित्र नहीं दास बन कर रहते आये हैं। उन्हें दास बनकर ही रहना होगा, दास बनकर भी लङ्का में ही भारत में नहीं। राम-राज्य में असुर नहीं रह सकते, यही तेरे धर्म की आज्ञा है। उठ धर्म की रक्षा कर ! धर्म तेरी रक्षा के लिये प्रस्तुत है।

तू मरना नहीं जीना सीख ! तू अमर है। तुझे कोई मार नहीं सकता। तेरी रक्षा के लिये देव तेरे साथ हैं। मानवता रक्षा के लिये तेरी ओर देख रही है ! स्त्रियां तुझ पर सहारा बांधे खड़ी हैं ! बच्चे कातर दृष्टि से तुम्हें देख रहे हैं ! सब की आशा के प्रतीक सबके सहारे हिन्दू ! उठ ! देख ! इधर और उधर।

याद रखना, गत महा-युद्ध की भूलें अब फिर न दोहरायी जायें ! तुम्हें याद है, जब जर्मनी के आक्रमणों के कारण ब्रिटिश-शासन खतरे में था, तब गुन्डे उठे। उन्हें विश्वास हुआ कि अस्तित्व-हीन ब्रिटिश साम्राज्य की पुलिस अब हमारा कुछ नहीं कर सकती। उन्होंने ग्रामों पर हमले कर दिये।

घटना यद्यपि पुरानी है, पर स्मृतियों के दर्पण में वह आज भी प्रतिबिम्बित हो रही है। मुजफ्फरगढ़ जिले के एक हिन्दू गांव पर जिसमें सैकड़ों की तादाद में हिन्दू रहते थे, गुण्डों के एक छोटे से दल ने आक्रमण कर दिया। हिन्दुओं को लूटा, स्त्रियों की लज्जा उतारी, बच्चों को काटा, तरुणों को जलाया, धन छीना और हिन्दुओं के साथ वे सब दुर्व्यहार किये जो वे कर सकते थे। समय पाकर पुलिस ने उन्हें पकड़ा और वर्षों के लिये वे कोठरियों में बन्द कर दिये गये।

जेल की कड़ी यातनायें भोगने के बाद जब गुण्डों का नायक छूटा तो उसके मित्रों ने उसका स्वागत किया। एक मित्र ने प्रश्न किया "तुम थोड़े से व्यक्तियों ने इतने बड़े गांव को किस प्रकार लूट लिया। क्या गांववालों ने तुम्हें रोका नहीं, उन्होंने मुकाबला न किया ?"

नायक ने कहा-'हम थे तो थोड़े पर थे संगठित, वे बहुत तो थे पर थे असंगठित। जब हमने नारे लगाते हुए गांव में प्रवेश किया तो वे असंगठित हिन्दू भाग-भाग कर घरों में बन्द होगये। हमने बाहर से सांकलें लगादीं और निश्चिन्तता से क्रमशः प्रत्येक घर को लूटने लगे और वे अपना सर्वस्व हमें सौंपने लगे। यह सत्य है कि यदि वे एक होकर हम पर आक्रमण कर देते तो आज हम सहस्रों मन मिट्टी के नीचे कयामत के दिन की प्रतीक्षा में होते।

क्या ऐसी भूलें फिर दोहरायी जायेंगी ? क्या अबभी तुम नायक नहीं बनोगे ? क्या अब भी तुम्हें होश न आयेगा ?

उठो ! अवसर तुम्हारी प्रतीक्षा में है।

बंगाल और पंजाब के पडितों की चीत्कारें क्या

ऐतिहासिक
ज्योतिर्विद् वराह मिहिर

[लेखक—श्री पं० तिलकधर शर्मा]

प्रत्येक जाति और देश के जीवन तथा उत्थान के लिये उस जाति के इतिहास का जीवित रहना आवश्यक होता है। आज जब कि विश्व की सभी जातियां अपने २ इतिहास को पुनरुज्जीवित करने के प्रयत्न में संलग्न हैं, तब हमारा भी ध्यान इस ओर जाना स्वाभाविक है।

यद्यपि भारतीय सर्वदा से अपने इतिहास की रक्षा करते आये हैं तथापि उनकी रक्षा का ढङ्ग निराला है। वे सम्वत् स्थान आदि पर विशेष जोर न देकर चरित्र-चित्रण को ही विशेष महत्व देते आये हैं। जिसके परिणाम स्वरूप पुराण महाभारत रामायण आदि एक अथाह विस्तृत इतिहास हमारे पास विद्यमान है, परन्तु यह हम निस्संकोच कह सकते हैं कि वह सब शृंखला-शून्य है, अतएव आज इतिहास-वेत्ताओं के सामने प्राचीन भारतीय इतिहास के शृंखला-बद्ध सङ्कलन में विशेष कठिनाइयां हैं।

इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी हमें अपने इतिहास की रक्षा करनी है। उन महापुरुषों के जीवन की उस दिव्य ज्योति के दर्शन करने हैं जिसके प्रकाश में हम अपना भविष्य सुखमय उन्नत और आदर्श बना सकें। इसी उद्देश्य से हम आपको उस वैज्ञानिक महापुरुष का परिचय देते हैं, जिसने भारतीय विज्ञान में प्राणों का सञ्चार किया था।

वराह मिहिर—

भारतवर्ष के ज्योतिर्विदों में अग्रगण्य वराह-मिहिर ज्योतिर्विज्ञान की प्रतिमूर्ति थे। उनकी अनुपम रचनायें भारतीय-साहित्य-निधि की वे सुन्दर मणियां हैं जिनके दिव्य प्रकाश से आज भी भारत जगमगा रहा है। वराह मिहिर की बृहत्संहिता ऐतिहासिकों के लिये वह पगडण्डी है जिस पर चल कर वे ऐतिह्य के राजमार्ग पर पहुंचते हैं।

कविवर श्रीकालिदास ने अपने ज्योतिर्विदाभरण नामक ग्रन्थ में महाराज विक्रमादित्य का परिचय देते समय विक्रमके उन प्रमुख पण्डितों की नामावली दी है जिन्हें नव-रत्न के नाम से स्मरण किया जाता है—

तुम्हें नहीं सुनाई पड़ रहीं ? क्या मातृभूमि पर होते हुए अत्याचार तुम सह सकोगे ? क्या तुम्हें अपनी भी चिंता नहीं ? क्या दूसरों के रण-निमन्त्रण पर तुम मौन रह सकते हो ? क्या हिन्दुत्व का हनन होने दोगे ? क्या मां की लाज लुटाकर जीवित रह सकोगे ?

उठो क्रान्ति की किरणें तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर रही हैं। व्यक्तिगत राग द्वेष को भूल जाओ ! झूठे मोह को छोड़ दो ! जो तुम्हारा साथ दें उन्हें साथ लो ! कायर और भीरुओं को मर जाने दो ! विजय का गान करो ! क्रान्ति का आवाहन करो ! राष्ट्र की रक्षा करो ! हिन्दुत्व को प्रोत्साहन दो ! उठो मां की आशा पूर्ण करो।

हिन्दू ! उठ !! देख !!!

[एक लेख के आधार पर]

धन्वन्तरि-क्षपणकामर-सिंह-शंकु-
बेताल-भट्टघटखर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराह-मिहिरो नृपते: सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥

(१) धन्वन्तरी, (२) क्षपणक, (३) अमर-सिंह, (४) शंकु, (५) वेतालभट्ट, (६) घटखर्पर, (७) कालिदास, (८) वराह मिहिर और (९) वर-रुचि ये विक्रम के नवरत्न थे।

कालिदास की इस उक्ति के अनुसार जनसाधारण का विश्वास है कि वराह मिहिर कवि कालिदास के समकालीन और विक्रम के नवरत्नों में से थे, परन्तु ज्योतिर्विदाभरण ग्रन्थ में कालिदास अयनांश सिद्ध करते हुए लिखते हैं कि--

शाकः शराम्बोधि-युगोनितो हृतोमानं खतर्कैरयनांशका स्युः

अर्थात् शक सम्वत् से ४४५ घटाकर ६० से भाग दो तो अयनांश सिद्ध होता है। यदि कालिदास विक्रम के नवरत्नों में से होते तो वे विक्रम सम्वत् का ही उल्लेख करते, क्यों कि शक सम्वत् तो विक्रम से १३५ वर्ष बाद प्रारम्भ होता है, अतः सिद्ध होता है कि वे विक्रम के समय के नहीं हैं और ज्योतिर्विदाभरण में 'मत्वा वराहमिहिरादि मतैः' का उल्लेख रहने से भी पता चलता है कि वे वराह-मिहिर के समय के भी नहीं थे।

इसीलिये ऐतिहासकों का मत है कि उपरोक्त ज्योतिर्विदाभरण का यह श्लोक काल्पनिक है। विक्रम के समय में न वराह मिहिर थे न कलिदास।

कालिदास ने रघुवंश में हूणों का उल्लेख किया है। हूण पांचवीं शताब्दि से भारतीयों के परिचित हुए हैं; अतः कालिदास ईसा की पांचवीं शताब्दि से बाद हुए हैं। इसलिये भी वराह मिहिर को हम कालिदास का समकालीन नहीं कह सकते।

ब्रह्मगुप्त टीकाकार पृथुस्वामी ने--

नवाधिक पञ्चशत संख्य शाके वराहमिहिराचार्यो दिवंगतः।

कहकर ५०९ शक--५८७ ई० में वराह मिहिर की मृत्यु लिखी है।

संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध इतिहास लेखक वेबर (Webeor) महाशय भी आलराज का निर्देश करते हुए वराह मिहिर की ५०९ शक में मृत्यु मानते हैं, परन्तु पृथु स्वामी और आलराज की टीका में उक्त वचन होने में विद्वानों को सन्देह है। अतएव इन दोनों विद्वानों की सम्मति हमें वराह मिहिर का ठीक पता देने में असमर्थ ही रह जाती है।

कुछ महाराष्ट्र पण्डित हल-मञ्जरी का एक श्लोक उद्धृत करते हैं--और वराह मिहिर को ई० पूर्व का बतलाते हैं--

स्वस्ति श्री नृपसूर्यसूनुज शके याते द्विवेदाम्बर--
त्रैमानाब्द मिते त्वनेहसि जये वर्षे बसन्तादिके।
चैत्रे श्वेत दले शुभे वसुतिथा-वादित्य-दासादभूत्।
वेदाङ्गे निपुणो वराहमिहिरो विप्रो रवेराशिभिः।

अर्थात् युधिष्ठिर सम्वत् ३०४२ चैत्रमास शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि में आदित्यदास के घर वराह मिहिर ने जन्म लिया।

उक्त मत के अनुसार वराह मिहिर का जन्म ५८ ई० पूर्व हुआ था, परन्तु वराह मिहिर अपनी पञ्च-सिद्धान्तिका में रोमक सिद्धान्त का अहर्गण स्थिर करने के उपलक्ष में लिखते हैं--

सप्ताश्विवेद-संख्यं शककालमपास्य चैत्र शुक्लादौ।
अर्द्धास्तमिते भानौ यवनपुरे भौमदिवसाद्यः॥

इस श्लोक में शक सम्वत् का उल्लेख है जो विक्रम के १३५ वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ था। अतः हल-मञ्जरी के इस श्लोक में भी सन्देह है। पं० बालकृष्ण दीक्षित ने भी इस श्लोक की अप्रमाणिकता सिद्ध की है।

वराह मिहिर अपने बृहज्जातक ग्रन्थ में अपना परिचय स्वयं इस प्रकार देते हैं--

आदित्यदास-तनयस्तदवाप्त-बोधः।
कापित्थके सवितृलब्ध-वर-प्रसादः।
आवन्तिको मुनि मतान्यवलोक्य सम्यक्।
होरां वराह मिहिरो रुचिरां चकार॥

वराह मिहिर के अपने दिये हुए परिचय से ऐतिहासिक पूर्ण विश्वस्त हैं। अतः यह निश्चित ही है कि आदित्यदास के घर उज्जैन में कापित्थक नामक किसी स्थान पर वे रहते थे।

कच्छ के महाराज रुद्रदाम का ईसा की दूसरी शताब्दि का गिरनार पर्वत पर लिखा हुआ एक शिला-लेख मिला है। उसमें रुद्रदाम द्वारा ७२ शकाब्द से कुछ पूर्व यौधेय जातिके जीतने का उल्लेख है। यह यौधेय जाति लगभग ईसा की चौथी शताब्दि तक भारत में विद्यमान थी। उस जाति का उल्लेख बृहत्संहिता में वराह मिहिर ने भी किया है। अतः अनुमानतः यह कहा जा सकता है कि वराह मिहिर ईसवी दूसरी या तीसरी शताब्दि में विद्यमान थे।

हरिषेण विरचित समुद्र-गुप्त की प्रशस्ति में भी अर्जुनायन आदि जातियों का उल्लेख है, जिनका बृहत्संहिता में भी वर्णन है।

इत्यादि समालोचना द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुंच पाते हैं कि वराह मिहिर शकाब्द के उदय काल के लगभग के ही हैं, न इसके पीछे के और न पहिले के।

वराह मिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका के पाँचों सिद्धान्तों और सूर्य सिद्धान्त की समालोचना से भी विद्वानों ने यही सिद्ध किया है कि पञ्चसिद्धान्तिका का सङ्कलन शकाब्दारम्भ के समय ही हुआ था।

वराह मिहिर नाम—

भारतवर्ष में मिहिराचार्य की एक बड़ी मनोरञ्जक आख्यायिका भी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि ये यूनान में यूनानी ज्योतिष का अध्ययन करने के लिये गये थे और वहां पर उन्हें ज्योतिष-विद्या प्राप्त करने में बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

सम्पूर्ण विद्या का अध्ययन कर चुकने पर वे खना नाम की एक लड़की से विवाह करके भारत को लौट पड़े। यूनानियों का नियम था कि वे किसी को भी ज्योतिषविद्या पढ़कर यूनान से बाहिर नहीं जाने देते थे, क्योंकि ऐटमबम्ब के रहस्य की तरह वे ज्योतिषविद्या के रहस्य को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे।

जब मिहिराचार्य भारत को लौट रहे थे तो यूनानियों ने ज्योतिर्गणना से इनके और खना के भागने का पता चलाया और पुलिस के साथ इनका पीछा किया। इधर मिहिराचार्य ने भी ज्योतिर्गणना की ओर अपने पीछे पड़े लोगों का पता चलाया। यूनानी और वराह मिहिर इसी प्रकार ज्योतिर्गणना के बल पर एक दूसरे का पता लगाते हुए भागते रहे।

एक दिन मिहिर को पता चला कि वे यूनानियों से घिर गये हैं। तो उन्होंने अपनी भारतीय कुशाग्र बुद्धि से काम लिया। वे एक घर में जाकर एक चक्की के पाट पर बैठ गये, चक्की के चारों ओर आटा गिरने की जगह पर पानी भर लिया और एक पैर लकड़ी के डण्डे पर रख लिया।

यूनानियों ने प्रश्न लगाया और पता निकाला कि इस समय मिहिर पानी के बीच एक पत्थर पर पर बैठे हैं और लकड़ी या वृक्ष पर चढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रश्न फल से उन्होंने अनुमान लगाया कि इस समय मिहिर किसी टापू में है और वृक्ष पर चढ़ने का प्रयत्न कर रहा है, अतः उन्होंने उनका पीछा छोड़ दिया और मिहिराचार्य सकुशल भारत लौट आये।

कहते हैं कि यवन उनसे सदा बदला लेने की ताक में रहने लगे और मिहिर ने भी उन्हें चिढ़ाने

के लिये अपने नाम के साथ वराह शब्द लगा लिया।

यद्यपि इस आख्यायिका के मूल में कोई प्रबल ऐतिहासिक तत्व नहीं है, तथापि इतना अवश्य है कि वे यूनान में अवश्य गये थे, क्योंकि ईसा की छटी शताब्दि से प्रथम के किसी भी शिलालेख आदि से भारतीयों में वारगणना नहीं पायी जाती। वार-गणना यूनान की ही आविष्कृत प्रणाली है। वराह-मिहिर के ग्रन्थों में ही सर्व प्रथम "भौम दिवसाद्यः" आदि शब्दों में मङ्गलवार का नाम मिलता है, अतः यूनानियों से वराह मिहिर का सम्पर्क अवश्य रहा था इसमें कोई सन्देह नहीं। यूनानियों के सम्पर्क के और भी अनेक प्रमाण हैं, परन्तु स्थानाभाव के कारण अन्य प्रमाण उपस्थित न करके हम इनके ग्रन्थों की समालोचना से ही प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं।

वराह मिहिर का सर्वोत्तम ग्रन्थ पञ्च सिद्धान्तिका है। इस ग्रन्थ की रचना पौलिश, रोमक, वशिष्ठ, सौर और पैतामह इन पांच सिद्धान्तों को लेकर की गई है। ऐतिहासिक समालोचना की कसौटी पर पैतामह और वशिष्ठ सिद्धान्त १३ वीं शताब्दि से कुछ पूर्व के ठहरते हैं और सौर सिद्धान्त तो कुछ और भी पूर्व का ज्ञात होता है, परन्तु रोमक और पौलिश सिद्धान्तों पर पाश्चात्य जगत् की छाप दृष्टिगोचर होती है। पौलिश सिद्धान्त में यवनपुर और अलकसान्द्रिया से जो काबुल और पंजशीर नदियों के बीच है (जो वर्तमान चरीकट के पास का प्रदेश है) देशान्तर लिया गया है। रोमक सिद्धान्त में दिन संख्या के निर्णय के लिये यवनपुर का ही मध्याह्न लिया गया है।

इससे यह सिद्ध होता है कि सम्भवतः उन्होंने रोमक और पौलिश सिद्धान्त यवनपुर में ही लिखे हों। इनसे उनका पाश्चात्य देशों से सम्बन्ध अवश्य सिद्ध होता है। पर हम यह कदापि नहीं कह सकते कि पौलिश और रोमक सिद्धान्त ही पाश्चात्यों की देन थी। यद्यपि दसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध मुसलमान पण्डित अलबेरुणी ने पौलिश सिद्धान्त को यूनान के पौलस की रचना माना है और इसी के अनुसार अन्य कई पाश्चात्य विद्वानों ने मिहिर के पौलिश सिद्धान्त को ग्रीक भाषा में लिखे हुए Paulus Alexandrinus ग्रन्थ का अनुवाद ही माना है, परन्तु दोनों ग्रन्थों को मिलाकर देखने से पाश्चात्यों की यह धारणा भी मिथ्या मालूम होती है।

वस्तुतः पौलिश सिद्धान्त अनेक हैं, क्योंकि ब्रह्म सिद्धान्त के टीकाकार पृथूदक ने और भट्टोत्पल ने जो पौलिश सिद्धान्त के श्लोक उद्धृत किये हैं वे बृहत्संहिता के श्लोकों से नितान्त पृथक् हैं, अतः अलबेरुणी और पाश्चात्य विद्वानों की धारणायें भ्रममूलक ही हैं।

रोमक नाम सुनकर भी कुछ एक विद्वान् अलकसान्द्रिया के प्रसिद्ध ज्योतिषी टलेमी के मूल ग्रन्थ के आधार पर रोमक सिद्धान्त की रचना मानते हैं; परन्तु ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मसिद्धान्त पढ़ने से उन विद्वानों की यह मान्यता भी निराधार प्रतीत होती है। वस्तुतः लाट, वसिष्ठ, विजयानन्दी और आर्यभट्ट इन चारों की गणना के आधार पर मिहिर के रोमक सिद्धान्त की रचना हुई प्रतीत होती है। टलेमी ने १५० ई० में अपने ग्रन्थ की रचना की थी, उसके साथ रोमक सिद्धान्त का यत्किञ्चित भी साम्य नहीं है।

बृहत्संहिता में फलित ज्योतिष का बड़ी अच्छी तरह से प्रतिपादन हुआ है। भूमि-विज्ञान वराह मिहिर की अपूर्व देन है।

वराह मिहिर के बृहज्जातक, लघुजातक, आरूढ़ जातक, कालचक्र, क्रियाकैरवचन्द्रिका, जातक कलानिधि, जातक सरसी, जातक सार, लघुजातक बृहद्यात्रा, मयूरचित्रक, मुहूर्तग्रन्थ, योगयात्रा, बृहदष्ट-वर्ग, दैवज्ञवल्लभा, प्रश्नचन्द्रिका, योगार्णव, वटकलिका, सारावली, वाराहमिहरीय आदि अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिये तैल-मर्दन

[ले०—कविराज पं० यदुकुल भूषण जी शास्त्री]

स्वास्थ्य और सौन्दर्य कितने मीठे शब्द हैं ? कौन है जो इनसे प्यार नहीं करता ? जो इनसे प्यार करता है उससे ये भी प्यार करते हैं जो इनसे रूठ जाता है ये उसे छोड़कर चल देते हैं, दूर अपनी माता की गोद में।

आज अधिक व्यक्ति ऐसे हैं जिनसे स्वास्थ्य और सौन्दर्य रूठ कर चले गये हैं। वे खेल रहे हैं जाकर अपनी माता--प्रकृति की गोद में। इनका मनाना कठिन है रुठाना नहीं। ये रूठ कर फिर किसी की नहीं सुनते; पर ये अपनी माता से बहुत डरते हैं, उसके संकेतों पर नाचते हैं, वह जो कह देती है वह इन्हें मानना पड़ता है। अतः जिनसे स्वास्थ्य और सौन्दर्य रूठ गये हों उन्हें फिर मनाने के लिये---लाने के लिये इनके पास नहीं प्रकृति के पास जाना चाहिये। प्रकृति वह माता है जिसका हृदय कोमल और विशाल है, वह किसी के भी लिये अपने दोनों पुत्रों को न्यौछावर कर सकती है। प्रकृति की शरण जाइये, वह आपको स्वास्थ्य और सौन्दर्य प्रदान करेगी।

आप पूछेंगे 'प्रकृति कहां रहती है ?' प्रकृति वहां रहती है जहाँ कृत्रिमता नहीं, वह वहां रहती है जहां नीले आकाश के नीचे सभी स्वच्छन्द हो विहार करते हैं, जहां सुन्दर घास पर ओस की बूंदें चमक कर आपको अपनी ओर आने का संकेत करती हैं, जहां बहती हुई पवन आपको छूकर आपसे अठखेलियां करती है; जहां प्रभात की कमनीय सूर्य-किरणें रोम-रोम से शरीर में प्रविष्ट हो नई स्फूर्ति प्रदान करती हैं, जहाँ बहते हुए निर्झर अपनी झर-झर ध्वनि से सुख के सङ्गीत अलापते हैं, जहाँ शीतल चन्द्र-किरणें उसके आंगन को प्रकाशित करती हैं।

अमर महर्षियों ने अपनी सन्तान को अमर बनाने के लिये, प्रकृति के घर तक पहुंचने के लिये वह राज-मार्ग तय्यार कर दिया है जिसमें न कांटे हैं, न कङ्कर, जिस मार्ग पर चलने से सुख मिलता है और वह सभी कुछ मिलता है जिसकी हमारे जीवन में आवश्यकता होती है। उस राज-मार्ग (मेन रोड) का नाम है 'दिन-चर्या'। उसी मार्ग के उत्तरार्ध का नाम है 'रात्रि-चर्या'।

हम दिन में जो कुछ करते हैं वह सभी दिन-चर्या में आ जाता है और जो कुछ रात्रि में करते हैं वह सब रात्रि-चर्या में। पर ऋषियों की दिन-चर्या और हमारी दिनचर्या में अन्तर है। वह यह कि हमारी दिन-चर्या प्रकृति के परामर्श से हीन होती है और ऋषियों की चर्या में प्रकृति का परामर्श होता है। उन्होंने इस मार्ग पर चलने के जितने भी नियम उपनियम बनाये हैं वे सब प्रकृति से पूछ कर बनाये हैं, स्वास्थ्य और सौन्दर्य का भी उसमें पूरा हाथ है। ऋषियों का मार्ग (चर्या) ऐसा है जिस पर चलकर आप प्रकृति के पास जा सकें स्वास्थ्य और सौन्दर्य को ला सकें और प्रकृति स्वास्थ्य और सौन्दर्य को लेकर आपके पास आ सके। वह चर्या बहुत उदार सरल और सार्वभौम है।

ऋषियों की चर्या का पूरा पता और विस्तृत विवेचन है हमारा आयुर्वेद शास्त्र। आयुर्वेद भारतीयों का शास्त्र है, वह भारतीयों के लिये है और भारतीय उसके लिये। भारतीयों को स्वास्थ्य और सौन्दर्य तक आयुर्वेद ही पहुंचा सकता है, क्योंकि वह भारतीयों की दिन-चर्या है।

भारत वह देश है जहां प्रकृति पूर्णरूप से विकसित हो सकती है और हुई है। किसी देश में ठण्ड ही ठण्ड है, किसी देश में गर्मी की अधिकता है तो कहीं वर्षा का आधिक्य है। कहीं पर मनुष्य गोरे ही गोरे हैं, कहीं पर भूरे ही भूरे, कहीं पर पीले ही पीले और कहीं पर काले ही काले, परन्तु भारत में सब ऋतुयें समय-समय पर आती हैं और सुख का सन्देश लाती हैं। यहां सभी रङ्गों के मानव उपलब्ध होते हैं, इसलिये कि यहां पर प्रकृति का पूर्ण विकास है। आयुर्वेद समय ऋतु और व्यक्ति के अनुसार उसकी चर्या का निर्देश करता है अतः वही भारतीयों का स्वास्थ्य-शास्त्र है।

यद्यपि पूरी दिन-चर्या के उल्लेख में ही इस विषय की पूर्णता है, तथापि यहां हम स्थालीपाक न्याय से दिन-चर्या के एक आवश्यक अङ्ग पर ही प्रकाश डालेंगे—

'अभ्यंगमाचरेन्नित्यम्'—

'प्रतिदिन तेल मालिश करनी चाहिये।'

जब रात्रि में सूर्य अस्त हो जाते हैं तब मानव की प्राण-शक्ति निर्बल पड़ जाती है; अतएव रात्रि में सभी को निद्रा और आलस्य घेर लेते हैं। प्राण-शक्ति के अभाव से शरीर का प्रत्येक अङ्ग निश्चेष्ट सा हो जाता है। जिनमें प्राण-शक्ति क्षीण हो जाती है उनका शरीर दुर्बल हो जाता है और ऐसे प्राणियों को दिन में भी नींद आलस्य आदि घेरे रहते हैं। जब ऊषा सूर्य के आगमन का सन्देश लाती है तभी मनुष्य में प्राण-शक्ति फिर से भरने लगती है और वह फिर स्वस्थ होने लगता है। जैसे-जैसे सूर्य की किरणें मानव-तन को छूती जाती हैं वैसे-वैसे मानव की प्राण-शक्ति भी बढ़ती जाती है, परन्तु रात्रि के शयन के कारण मनुष्य की त्वचा आदि सुप्त हो जाते हैं अतः वे धीरे-धीरे सूर्य-ताप ग्रहण करते हैं। इसलिये प्रातःकाल ही शरीर को सचेष्ट और प्राण-शक्ति को शीघ्रता से ग्रहण करने लायक बनाने के लिये प्रातःकाल उठकर शौचादि से निवृत्त हो प्रकृति के आङ्गन—खुली हवा में तैल-मर्दन करना चाहिये? तेल के मलने से सुप्त त्वचा सचेष्ट और जागृत हो जाती है और वह सूर्य से प्राण-शक्ति को शीघ्रता से ग्रहण कर शरीर को सक्षम बलवान् और सुन्दर बनाने में समर्थ होती है।

प्रातःकालीन वायु प्राण-शक्ति से ओत-प्रोत होती है। रात्रि में चन्द्र द्वारा पृथ्वी पर बरसाये हुये अमृत के सीकरांश वह प्रातःकाल बांटती है, अतएव प्रातःकालीन वायु को शास्त्र वीर वायु के नाम से स्मरण करते हैं। वायु शरीर की त्वचा का स्पर्श करती है। वही त्वचा वायुसे प्राण-शक्ति और अमृतांश ले सकती है जो मुलायम हो, सक्षम हो, जिसके रोम स्वच्छ और निर्मल हों और जिसके द्वारा भीतरी वायु का बाहिरी वायु से आदान-प्रदान हो सके। अतः त्वचा को मुलायम सक्षम और शुद्ध तथा खुले रोमों-वाली बनाने के लिये तेल की मालिश करनी चाहिये। तैल मालिश से त्वचा सचेष्ट हो जाती है उसके रोम खुल जाते हैं और वह इतनी मुलायम हो जाती है कि भीतरी वायु का बाहिरी वायु से आदान-प्रदान सुख से हो सके। इसी आशय को स्पष्ट करने के लिये महर्षि चरक ने लिखा है—

स्पर्शने चाधिको वायुः स्पर्शनञ्च त्वगाश्रितम्।
त्वच्यश्च परमोऽभ्यङ्गः तस्मात्तं शीलयेन्नरः।

स्पर्श करने वाला वायु है, स्पर्श त्वचा से होता है, और त्वचा तैल-मर्दन पर आश्रित है, अतः तैल-मर्दन प्रतिदिन करना चाहिये।

तैल-मर्दन से नसों में स्फूर्ति आती है, रक्त गति पाता है, और वायु शरीर के प्रत्येक पदार्थ को यथा-स्थान पहुंचाने में समर्थ होता है।

जब शरीर में स्फूर्ति होती है, रक्त ठीक प्रकार से कार्य करने लगता है और वायु शरीर के प्रत्येक पोषक तत्त्व को यथा-स्थान पहुंचाने लगता है, तब वह सभी कुछ होने लगता है जो कुछ प्रकृति चाहती है। प्रकृति की इच्छा पूरी होने पर स्वास्थ्य और सौन्दर्य भी स्वयं वहीं लौटने लगते हैं जहां उनकी माता की प्रसन्नता रहती है।

मानव के मुख की आकृति का सौन्दर्य बाल हैं। बालों की सुन्दरता मनुष्य के मुख को सुन्दर बनाती है। अतः बालों का सुन्दर होना भी उतना ही आवश्यक है जितना शरीर के अन्य मुख्य अङ्गों का। बालों की सुन्दरता बिगड़ने के कारण हैं—

सिर दर्द, बालों का गिरना, बालों का पकना, गञ्जापन और बालों में जूओं आदि का पड़ जाना।

सिर में प्रतिदिन तेल की मालिश करने से सिर दर्द नहीं होता, बालों का गिरना बन्द हो जाता है, बाल पकते नहीं, गञ्ज नहीं पड़ता और जूयें आदि नहीं पड़ती। (चर० सू० ५)

यह ध्यान देने योग्य बात है कि सिर की मालिश के लिये सरसों का या तिल का तिल होना चाहिये। यदि आंवले या भृंगराज के तेल की मालिश की जाय तो विशेष लाभ होता है। अन्य कृत्रिम तेल प्रकृति पसन्द नहीं करती क्योंकि उसे कृत्रिमता से घृणा है।

कानों के नीचे के हिस्से पर अंगूठे से धीरे २ मालिश करनी चाहिये। मालिश करने से पहिले कानों में भी दो चार तेल की बून्दें टपका लेनी चाहियें। इससे —

न कर्णरोगा वातोत्था न मन्या हनुसंग्रहः।
नोच्चैः श्रुतिर्नबाधिर्यं स्यान्नित्यं कर्णतर्पणात् ॥

कानों में वातज रोग नहीं होते, फोड़े फुंसियों और पीव आदि पड़ने का भय नहीं रहता, ऊंचा सुनने की आदत नहीं पड़ती और बहिरा होने के रोग से मनुष्य बचा रहता है।

पैरों के तलुओं के नीचे अंगूठे से धीरे-धीरे मालिश करनी चाहिये। इससे पांवों का खुर्दरापन, पैर पिंडलियों का सो जाना, रूखापन और थकावट नहीं होते। पैरों की मालिश का नेत्रों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। पैरों में प्रतिदिन मालिश करने वालों की दृष्टि कभी कमजोर नहीं होती। पैरों का टूटना और गृध्रसी (Sciatica) आदि रोगों का भय नहीं रहता।

ग़रीबों के लिये तैल-मर्दन विशेष उपयोगी है। क्योंकि शारीरिक बल की वृद्धि के लिये जहां बाहिरी उपचार आवश्यक हैं वहां भीतरी खुराक भी आवश्यक है। भीतरी खुराक के लिये दूध घी और फल सर्वोत्तम पदार्थ हैं, परन्तु वे बिचारे श्रमिक जिन्हें दिनभर की मेहनत के बाद भी सूखी रोटियां ही मिलती हैं, या वे मध्यम श्रेणी के सद्गृहस्थ जो घी की समस्या का समाधान बनस्पति आयल से करते हैं, उत्तम और मंहगे घी दूध और फल कहां व्यवहार में ला सकते हैं। इसलिये उनके स्वास्थ्य की रक्षा के लिये तैल-मर्दन ही सस्ता और सुलभ साधन है। क्योंकि—

घृतादष्ट गुणं तैलं भक्षणे नतु मर्दने।

तेल में घी से आठ गुना ताकत है, पर खाने से नहीं मलने से।

तेल-मालिश में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी अङ्गों की मालिश ऊपर से नीचे की ओर होनी चाहिये। नीचे से ऊपर की ओर मालिश करने से लाभ के स्थान पर हानि होने की सम्भावना रहती है।

मालिश के लिये सरसों का ही तेल काम में लाना चाहिये क्योंकि उसी में बसन्त का वह सुन्दर नवरस रहता है जिसे प्रकृति स्वतन्त्रता और प्रसन्नता से बिखेरती है। वात रोगी के लिये यही सर्वोत्तम तैल है। प्रकृति भारत में इसीलिये इसे अधिक मात्रा में उत्पन्न करती है। यह सस्ता और सर्वत्र प्राप्त तेल भी है।

श्रमिकों को तेल मालिश इसलिये करनी चाहिये कि इससे श्रम की थकावट दूर होती है, गद्दी पर बैठने वाले दुकानदारों को इसलिये मालिश करनी चाहिये कि बैठे-बैठे उनके अङ्ग सो जाते हैं और समय पाकर शिथिल और शक्तिहीन हो जाते हैं। मस्तिष्क और नेत्र सम्बन्धी काम करने वालों को मस्तक और पैर के तलुओं की मालिश का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

प्रातःकाल खुली हवा में तैल मालिश करने से तैल-स्नान के साथ-साथ स्वास्थ्य वर्धन के लिये विशेष उपयुक्त वायु-स्नान और सूर्य-किरण स्नान स्वभावतः सिद्ध हो जाते हैं।

इस प्रकार तैल-मर्दन ऋषियों की पावन दिन' चर्या का एक वह अङ्ग है जो प्राकृतिक स्वास्थ्य के लिये उत्तम ही नहीं आवश्यक भी है। स्वास्थ्य और सौंदर्य के उपासकों को प्रकृति का वरदान प्राप्त करने के लिये इस ओर ध्यान देना चाहिये।



भारत की देवी उठ !

[ले०—आयुर्वेदाचार्य श्री पं० गङ्गादत्त जी मिश्र साहित्यरत्न 'विमल']

विश्व-वन्द्य भारतवर्ष की आज जो दशा हो रही है इसका मुख्य कारण है अशिक्षा। संसार के इतिहास को उठाकर पलटिये, आपको भारतवर्ष जैसा सभ्य एक भी देश नहीं मिलेगा। वह भी युग था जबकि भारतवर्ष संसार का पथप्रदर्शक गिना जाता था और आज वह समय है जबकि पथप्रदर्शक के नाते इसे कोई स्मरण तक नहीं करता। इसका कारण स्पष्ट है—प्राचीन भारतीय समाज शिक्षित था और आज का अशिक्षित। अशिक्षित का अर्थ यह नहीं है कि कोई भी शिक्षित नहीं, वरन् यह है कि उसका अधिकांश भाग नितान्त अशिक्षित है और उसमें भी विशेषतया स्त्री-समाज। यदि इसकी ओर पूरा ध्यान दिया जाय तो शीघ्र ही भारत फिर एक आदर्श देश गिना जाने लगे। सच तो यह है कि भारत अपने पूर्व गौरव को तभी अपना सकता है जबकि उसका यह महत्वपूर्ण अङ्ग—स्त्री-समाज भी शिक्षित हो। प्राचीन समय की उन्नति का कारण भी यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो तत्कालीन स्त्री-समाज ही था। आज उसी जगज्जननी की यह करुण दशा ? जो कि गुप्त जी के शब्दों में—

"बात बात पर अड़ने वाली,
गहने के लिये लड़ने वाली"

वास्तव में देखा जाय तो यह सारा दोष हमारा ही है, क्योंकि हम उन्हें जिस वातावरण में रखते हैं वह है ही ऐसा। आज जिन स्त्रियों को हमने अछूत की श्रेणी में रख रक्खा है कभी उनका भी महत्व बढ़ा चढ़ा था। इसके प्रमाण हैं प्राचीन धर्मशास्त्र।

ब्राह्मण-युग की अपेक्षा ऋग्वेद के समय में स्त्रियों का विशेष आदर था। उस समय स्त्रियाँ पति के साथ यज्ञ तक में भाग लेती थीं। ऋग्वेद में स्त्रियों का यज्ञ का निरीक्षक तक होना पाया जाता है। गार्गी एवं मैत्रेयी आदि के नाम इसके लिये प्रमाण हैं। इसके बाद के समय में भी स्त्रियों के शिक्षित होने के सैकड़ों प्रमाण मिलते हैं। मंडन मिश्र की स्त्री को कौन नहीं जानता ? जिसकी विद्वत्ता ने दिग्विजयी श्री शङ्कराचार्य जैसे महात्मा को भी निरुत्तर सा कर दिया था। अपनी शिक्षिता सर्व-विजयिनी स्त्री को प्रसन्न करने के लिये कविकुल-गुरु कालिदास को भी उसके नाम के तीन शब्दों को लेकर तीन बड़े बड़े काव्य रचकर अपनी महत्ता जतानी पड़ी। प्राचीन समय के अनेकों ऐसे उदाहरण आपको मिलेंगे।

उस समय और इस समय की तुलना करें तो आपको पता चलेगा कि अतीत की स्त्री-शिक्षा को देखते हुए आज का शिक्षित स्त्री समाज कितना अवनत है। इस अवनति का कारण यदि पुरुष-समाज को ही कहा जाय तो क्या अत्युक्ति होगी ?

अब हमें देखना यह है इनको शिक्षित कैसे किया जाय ! समाज का यह महत्वपूर्ण अङ्ग जबतक शिक्षित नहीं किया जायगा तब तक हमारी उन्नति कभी भी सम्भव नहीं हो सकती।

शिक्षित करने से यह अर्थ नहीं कि इन्हें

केवल अंग्रेजी ही पढ़ाकर पूरी मेमसाहब बना दिया जाय। शिक्षा का तात्पर्य है हिन्दी तथा संस्कृत विद्या के सहारे गृहचर्या के नियम, पति-सेवा के नियम, अपने पुत्र-पुत्रियों को ज्ञान कराने पढ़ाने के नियम, पतिव्रता के नियम और आदर्श गृहिणी के नियम आदि सिखाना। इस कार्य की पूर्ति के लिये हमें ऐसी कन्या-पाठशालाओं की आवश्यकता है, जिनमें भाषा के साथ-साथ कन्याओं को औद्योगिक तथा व्यावहारिक निःशुल्क शिक्षा दी जाय। शिक्षा के लिये पति-भक्ति, गृह-रक्षा, मधुर भाषण, धर्मोत्साह, स्वदेश-प्रीति, शिशु-पालन, देव-विश्वास, दया-भाव, कर्तव्य-पालन और स्वजातियों तथा सम्बन्धियों का आदर आदि विषय प्रधान रहने चाहियें। हमारी शिक्षा का माध्यम प्राचीन आदर्श ही रक्खा जाय न कि अर्वाचीन पश्चिमीय सभ्यता।

स्त्रियों के अशिक्षित होने के कारण ही आज घर-घर का दाम्पत्य-जीवन विष-मय बना हुआ है। आदर्श पत्नी का कर्तव्य है कि जब पतिदेव अपना काम कर थके माँदे घर पहुंचें तब विनोदपूर्ण मिष्ट भाषणों द्वारा उनका मनोरंजन करना। पर आज की नारी का कार्यक्रम ठीक इससे विपरीत है। पति को घर आते ही सुनना पड़ता है--

घर की अमुक वस्तु पूरी हो चुकी है, आज अमुक से झगड़ा हो गया है, अमुक के घी के इतने दाम देने हैं, अमुक तकाजा कर गया है और अमुक लड़के ने आज अपना यह नाश कर दिया। बतलाइये कहां तो थके को विश्राम ? और कहां इन सब बातों का समाधान ?

देखा जाय तो भारतीय आयु का माध्यम २२ वर्ष होने का सबसे बड़ा कारण स्त्रियों की अशिक्षा ही है। स्त्रियां अशिक्षित होने के कारण ही सुन्दर वस्त्राभूषणों के लिये पति के नाकों दम कर देती हैं। बहु कुटुम्बी स्त्रियां ननद भौजाई के कर्तव्य की गाथा का पाठ पढ़ कर सुनाया करती हैं, यानी आज ननद ने यह कहा, सास ने यह कहा आदि रात दिन की कलह का हाल सुना-सुना कर बिचारे पतिदेव को घर पहुंचते ही बेहाल कर देती हैं। इन सब बातों को सुनते-सुनते बिचारे पतिदेव भी ऊब जाते हैं और वे इस चख-चख से पीछा छुड़ाने के लिये क्लब चले जाते हैं या लाईब्रेरी में जाकर "लण्डन रहस्य" की हवा खाते हैं। रात्रि के ८ बजे वापिस लौटकर भोजन करते ही फिर मित्र-मण्डल में जा बैठते हैं। वहां से भी प्रायः १२ बजे लौटते हैं और आते ही खाट पर लम्बी तान लेते हैं, जैसे घोड़े बेचकर सोये हों। प्रातः गृहिणी अपने काम में उलझ जाती है और बिचारे आप दफ्तर का रास्ता लेते हैं। इस प्रकार महीनों आपस का प्रेम सम्भाषण तो दूर रहा बोलने तक की नौबत नहीं आती। इस प्रकार यह गृह-कलह पारिवारिक शान्ति को भङ्ग कर देती है और कलह स्थायी होकर दोनों को दुखी कर देती है। अतः समाज का कर्तव्य है कि वह स्त्री-शिक्षा की ओर शीघ्र ध्यान दे। स्त्रियां इस दिशा में विशेष सफल हो सकती हैं।

स्त्रियों के शिक्षण में निम्नलिखित विषयों का समावेश होना चाहिये--

मातृभाषा का ज्ञान :—स्त्रियों को मातृ-भाषा हिन्दी का ज्ञान इतना अवश्य कराया जाय जिससे वे सामयिक पत्रों तथा पुस्तकों को पढ़ सकें, महाभारत और रामायण को पढ़कर उसका मतलब समझ सकें व समझा सकें, सामाजिक उपन्यास पढ़ सकें, नीति, काव्य-ग्रन्थ, धर्मशास्त्र आदि गहन विषयों पर मनन कर सकें और देश तथा समाज की उन्नति कर सकें।

इतिहास :—भारत की प्राचीन स्त्रियों में पातिव्रत्य का प्रभाव, पद्मिनी आदि राठौड़ रानियों का

जौहर, प्राचीन स्त्रियों का शास्त्र-ज्ञान और महारानी लक्ष्मीबाई आदि का युद्ध-कौशल, ये विषय इतिहास के अन्तर्गत पढ़ायें जांय।

शास्त्रः—धर्म-शास्त्र का ज्ञान स्त्रियों को अत्यावश्यक है। इसके ज्ञान से उनका अन्धविश्वास दूर हो जायगा एवं वे पीर पैगम्बरों के सुनहरे जाल में नहीं फंस सकेंगी। भारतीय स्त्रियों का अंधविश्वास से ही इतना पतन हुआ है।

गृह-व्यवस्था :—यह विषय स्त्रियों के लिये अत्यावश्यक विषय है। घर को स्वच्छ कैसे रक्खा जाय, ? वस्त्रों को सप्ताह में दो बार धोया जाय, घर में स्वच्छ वायु एवं प्रकाश के लिये क्या व्यवस्था रहे और बालकों को शौच मनमाने स्थान में न करने दिया जाय आदि विषय ऐसे हैं कि उनकी तरफ से तनिक सी असावधानी होते ही सारे परिवार को कष्ट पाने पड़ते हैं। आदर्श स्त्रियों को यह दोहा सदैव स्मरण रखने योग्य है—

"स्वच्छ राखिये गेह निज, वसन, देह अरु द्वार,"
उठके भोजन कीजिये, निर्मल विविध प्रकार"।

पाक-शास्त्र :—यह विषय स्त्री मात्र के लिये सबसे अत्यावश्यक विषय है। कुछ स्त्री-स्वातन्त्र्यवादियों का कथन है कि स्त्री एवं पुरुष का अधिकार समान होने के कारण रसोई बनाने का काम सदा स्त्रियां ही क्यों करें ? पके पकाये भोजन बाजार से ही लाकर खालिये जाँय। जिससे स्त्रियाँ चूल्हे में शिर खपाना छोड़कर कुछ अपनी मानसिक उन्नत्ति कर सकें। उनकी यह दलील थोथी कल्पना है। शास्त्रों में स्त्री को गृह-लक्ष्मी कहा गया है। उसका काम है घर की व्यवस्था रखना एवं जब अवकाश मिले तब अपनी मानसिक उन्नति के लिये कार्य करना। आधुनिक पूर्ण स्वच्छन्दवृत्ति के उदाहरणों को देखते हुए हम उपरोक्त अवसरवादियों का समर्थन नहीं कर सकते।

सिलाई :—अपने कुटम्ब के कपड़े घर में ही सिलाई करके हमारी गृह देवियां अपने पति की गाढ़ी कमायी के बहुत से रुपये बचा सकती हैं। इस कार्य के लिये यू० पी० की स्त्रियां आदर्श मानी जा रही हैं।

गायनवादन :—यह विद्या भी जीवनके लिये अतीव उपयोगी है। आज स्त्रियों में इसकी विद्वता की कमी के कारण ही पुरुष समाज वैश्यागामी हो रहा है। प्राचीन बङ्गाल एवं वर्तमान बङ्गाल इसके ताजा उदाहरण हैं। यह विद्या कोई वेश्याओं की विद्या नहीं है। उन लोगों ने तो पुरुषों को भ्रष्ट करने में इसको अपना सहायक बना रक्खा है।

और भी चिकित्सा आदि विषय ऐसे हैं कि जिनका ज्ञान स्त्रियों के लिये अतीव उपयोगी है। कुछ समय पूर्व से तो इस समय का स्त्री-समाज शिक्षित हुआ है और मेरी समझ में यदि हम लोग इस ओर थोड़ा ध्यान और दें तो वह दिन अधिक दूर नहीं जबकि भारतीय स्त्री-समाज संसार का आदर्श स्त्री-समाज गिना जाय। अब समय आ गया है कि हम संभल जायें। एवं अपने गलित अङ्ग की चिकित्सा करलें।

स्त्री देवी है, गृह-लक्ष्मी है, समाज की जननी है और वह है जिसकी पुरुष समाज में कमी है। उसका आदर करो ! शिक्षित स्त्री ही वह दिव्य-शक्ति है जो राष्ट्र का नव-निर्माण कर सकती है। भारत की देवी उठ ! राष्ट्र तेरे वरदान की प्रतीक्षा में है।

एक पौराणिक कहानी—

पत्नी-व्रत

प्रस्तुत कहानी मार्कण्डेय पुराण के आधार पर लिखी गई है। यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि जहाँ स्त्रियों के लिये पातिव्रत्य धर्म का पालन उच्च आदर्श है वहाँ पुरुष के लिये पत्नीव्रत का पालन कहीं उससे भी अधिक महत्त्व रखता है। यदि पुरुष समाज ने अपने इस कर्तव्य का पालन किया होता तो निश्चय ही आज नारी-जगत् की एक आदर्श रूप रेखा होती। आशा है पाठक इससे स्वकर्तव्य की शिक्षा लेंगे।

--सम्पादक

[ले०—श्री रामबहादुर त्रिपाठी शास्त्री]

'आज', न जाने कितने दिनों की चिरप्रतीक्षा के पश्चात् प्राप्त हुआ था। प्रातःकाल से ही राजकर्मचारियों की देख रेख में दरबार की सजावट प्रारम्भ हो गयी। निश्चित स य के कुछ पहले ही प्रधानामात्य का शुभागमन हुआ। कुछ त्वरा के साथ ही चारों ओर शान्ति छा गयी। एक-एक करके दरबार मित्रराजाओं तथा उनके प्रमुख सरदारों से भरने लगा। चार बजते ही सबकी दृष्टि घड़ी की सुई पर जा पहुंची। इतने में ही वाद्यध्वनि तथा जयघोष के बीच महारानी सहित महाराजा उत्तम का दरबार में प्रवेश हुआ।

महाराजा उत्तानपाद अपने समय में बहुत ही लोकप्रिय महाराज थे। अतः राजकुमार उत्तम में भी उन्हीं पितृगुणों का होना स्वाभाविक ही था। राजकुमार उत्तम के राज्याभिषेक तथा बाभ्रव्य-राजकुमारी बहुला के साथ प्रिय शुभ विवाह का महोत्सव प्रजा के लिये अभूतपूर्व हर्ष का अवसर था। अपने अभिनव महाराज श्री उत्तम के न्याय तथा राज्य-प्रबन्ध से प्रजा सर्वथा सुखी थी। राज्य-परिवार में भी नित्य सुख शान्ति के साथ आनन्द ही आनन्द था। महाराजा तथा नवप्रणीता महारानी के अन्योन्य प्रेम का तो कहना ही क्या था? प्रेम-संसार में कदाचित् इससे अच्छा प्रेम का दूसरा निदर्शन न था।

काल की गति भी बड़ी ही विचित्र है कुछ कहा नहीं जा सकता, कब क्या हो जायेगा? महाराज के जन्मदिवस का महोत्सव था। दरबार भलीभांति सजा था। महाराजा साहब के अपने आसन पर विराजमान होते ही दरबार का हर कोना निःशब्द तथा निस्तब्ध हो गया। वेदपाठी ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन के अनन्तर मधुमय सङ्गीत तथा नृत्य का आयोजन प्रारम्भ हुआ। महाराजा साहब को मधुपान का बड़ा ही शौक था। अतः पानगोष्ठी भी चलने लगी। सभी मित्रों के हाथ में मधु से भरा मधुपात्र था। सभी अधर से लगाते, कुछ गले में उतारते तथा कानों से मधुर सङ्गीतामृत एवं नयनों से वारस्त्रियों के रूपासव का पान कर रहे थे। महारानी भी पार्श्व में ही बैठी सब सुन तथा देख रही थीं। इस बीच सहसा महाराज ने मित्रों के देखते देखते अपना मधु से भरा मधुपात्र नेत्रों की

मूक भाषा में महारानी की ओर बढ़ा दिया। महारानी ने त्रस्त नेत्रों से चारों ओर देखा माथा झुक गया। पसीने से पानी पानी हो गयीं। एक ओर कुलवधू का सदाचार तथा उसकी मर्यादा की लाज थी तथा दूसरी ओर महाराज की आज्ञा के उलङ्घन का भय। कुलीनता एवं शालीनता की विजय हुई। झेंप तथा क्रोध से कांपते महाराज के हाथ से प्याला छूटा और चकनाचूर हो गया। इस अप्रिय घटना के साथ ही दरबार में उदासी छा गई। महाराज ने ऊपर से तो इसे कुछ भी महत्व देने का प्रयत्न न किया; परन्तु दरबार नियत समय से पहले ही उठ गया।

महाराज दरबार से उठकर जब राजप्रासाद में आते, अपने साथ नित्य हृदय में महारानी के सुभग-दर्शन की लालसा, मधुरालाप सुनने की जागृत अभिलाषा तथा न जाने और क्या क्या लेकर आते, परन्तु आज उनका हृदय कुछ और ही लेकर आया था। उसे निकालने तथा भुलाने का बहुधा यत्न करते, पर असफल रहते। किसी प्रकार रात करवटें बदल कर काटी। नींद का कहीं पता भी न था। महाराज के हृदय को भरे दरबार में अपने अपमान की गहरी ठेस लग चुकी थी। सोचते--"अपमान! मेरा अपमान!! महारानी के द्वारा!!!" न जाने कितनी बार महारानी के पादपद्मों में महाराज का मुकुट लेट चुका होगा; परन्तु उसकी कानोंकान किसी को खबर तक न थी। पर आज दरबार की इस तुच्छ घटना से ही प्रतिकार तथा प्रतिशोध की भावनाओं ने उन्हें किंकर्तव्यविमूढ़ सा बना दिया। महाराज ने द्वारपाल को बुलाया, कुछ कहना चाहा, पर कह न सके। पुरुष हृदय तो अपनी परुषता के लिये प्रसिद्ध है ही--फिर क्या था! दृढ़ता से कानों में कहा--"महारानी को घोर वन में छोड़ आओ!" बूढ़े द्वारपाल के पांवतले की धरती खिसक चली। अवाक्.......कहा, ऐसा ही होगा, कहकर बाहर आया। और घण्टों में ही बड़ी निर्ममता के साथ इस आज्ञा का पालन हुआ।

समय जाते देर नहीं लगती। दिन पर दिन तथा महीने पर महीने निकलने लगे। इस बीच महाराज के निकट सम्बन्धियों ने अनेकों बार उनसे विवाह की चर्चा की, परन्तु महाराज ने एक बार भी 'हां' न की। परित्यक्ता महारानी में उसके शील तथा स्वभाव से उनका इतना अधिक अनुराग था कि उन्होंने आवेश में अपने किये पर पश्चात्ताप के साथ महारानी की स्मृति में दूसरा विवाह न करने का मन में दृढ़ संकल्प सा कर लिया।

महाराज नित्य दरबार करते, राजकार्यों को देखते, परन्तु अब पहले का उत्साह तथा उमङ्ग न थी। प्रायः उदास रहा करते थे। एक दिन कार्यों से अवकाश मिलते ही कुछ सोच रहे थे कि द्वारपाल ने आकर जयघोष के साथ विनम्र निवेदन किया--"महाराज! एक अत्यन्त दुःखी ब्राह्मण श्रीमान् से मिलकर कुछ कहना चाहता है।" महाराज ने कहा--'आदर के साथ ले आओ!' और अपना आसन छोड़ते हुए ब्राह्मण का सम्मान किया। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया और रोते रोते अपनी दुःख गाथा महाराज को सुनायी। 'महाराज! आप जैसे धर्म-प्रिय नरेश के शासन करते मुझे ऐसी आशा न थी। कैसा अन्धेर है? आज कई दिन हुए मेरी स्त्री को कोई चुरा ले गया है। बहुधा खोजा, पर कुछ पता न लगा। अतः नृपति के नाते आपका कर्तव्य है कि आप उसकी खोज लगावें और जहां भी हो लाकर मुझे देवें।'

महाराज ने कहा--'भगवन्! मुझे आपकी पत्नी के विषय में कुछ भी मालूम नहीं है कि वह रूप

और शील में कैसी थी ? जिससे कि मैं उसका ठीक ठीक अन्वेषण करा सकूं। 'ब्राह्मण ने कहा--राजन्! अभी अभी उसने प्रथमावस्था समाप्त कर पूर्ण यौवन में प्रवेश किया है। वह कद से ऊंची है, छोटे छोटे हाथ हैं, बड़ी बड़ी आखें हैं। कपोल की अस्थियां कुछ ऊपर को उभरी हुई सी हैं। उदर लम्बा तथा स्तन छोटे छोटे हैं। इसके अतिरिक्त परुषभाषिणी होने के साथ ही दुःशीला भी है।' महाराज की ओर देखकर फिर 'कहा--राजन्! विश्वास करें, मैं उसकी निन्दा नहीं करता। वह जैसी है मैंने वैसे ही कहा है।'

महाराज ने कहा--'बस, मैंने आपकी पत्नी के विषय में बहुत कुछ जान लिया; अब अधिक नहीं सुनना चाहता। स्त्री तो इस दुःखमय संसार की विषम जीवनयात्रा में सुख पहुंचानेवाली एक अपनी दूसरी ही आत्मा होती है, परन्तु जब आपकी पत्नी ऐसी ही थी तो उसके साथ अपना जीवन सुखमय कैसे व्यतीत कर सकते थे? ऐसी स्त्री तो आप क्या किसी को भी छोड़ ही देनी चाहिये। अच्छा हुआ किसी प्रकार आपके सिर से यह बला टली। नारी का सौंदर्य यद्यपि उसका सहज भूषण है परन्तु उसमें शील का होना कहीं उससे भी अधिक गौरव की वस्तु है। फिर जिसमें इनों दोनों का ही बिल्कुल अभाव हो, उसे तो निःसंकोच छोड़ ही देना चाहिये। यदि किसी ने चुरा हो लिया तो कोई चिन्ता की बात नहीं है। मैं आपके दूसरे विवाह का यत्न करा दूंगा।'

ब्राह्मण ने कहा--'नहीं, नहीं, महाराज! ऐसा न कहें। भगवती श्रुति का आदेश है कि पुरुष को स्त्री की सर्वथा रक्षा करनी चाहिये। स्त्री की रक्षा से सन्तति की भी रक्षा होती है। पति की आत्मा ही पत्नी में पुत्र रूप में उत्पन्न होती है। अतः स्त्री रक्षा से न केवल सन्तति रक्षा अपितु आत्मरक्षा भी स्वतः होती रहती है। स्त्री की अरक्षितावस्था में वर्णसंकर सन्तान होती है। जिसके द्वारा पिण्डोदक क्रिया लुप्त हो जाती है और पितरों का अधः पात होता है। अग्नि, अन्य देवता तथा ब्राह्मण को साक्षी रखकर जिस कन्या के साथ पुरुष का सर्व प्रथम पाणिग्रहण संस्कार होता है उसके साथ ही उसे धर्म-कार्य करने का अधिकार है और वही शुभ फलदायक होता है। प्रथम पाणिगृहीता भार्या के न रहने पर अथवा रहते ही दूसरी कन्या के साथ विवाह होने पर पुरुष का हृदय वासना-वासित होने से प्रथम विवाह जैसा पवित्र संस्कार न होने के कारण उसके साथ किया गया धर्म-कार्य फलदायक नहीं होता है। अतः मेरी पत्नी चाहे जैसी भी थी उसके साथ मैं धर्म-कार्यों का फल पाने का अधिकारी था। इधर उसके न होने से प्रतिदिन मेरी धर्म-हानि हो रही है, अतः आप चाहे जैसे भी हो उसका पता लगाकर मुझे देने की कृपा करें।'

आज गांव का अवैतनिक मुखिया तथा चौकीदार जैसा साधारण राजकर्मचारी भी भले ही अपने में शासक की अहम्मन्यता रखता हो; परन्तु एक समय था कि राजा भी अपने को जन-सेवक समझ सर्वदा उसकी हर प्रकार की सेवा करने को प्रस्तुत रहता था। इतना ही नहीं समय पड़ने पर वह अपने इस व्रत-पालन में अपना सर्वस्व भी दाव पर लगा सकता था। अस्तु, महाराजा उत्तम ने ब्राह्मण के सामने अन्य अपनी कोई युक्ति चलती न देखी तब कुछ अश्वारोही सैनिकों के साथ ब्राह्मणी की खोज लगाने चल पड़े। चलते-चलते सघन बन में पहुंचे। वहीं एक मुनि-कुटीर मिला। महर्षि ने महाराज का जय घोष तथा आशीर्वाद से स्वागत किया और शिष्य को अर्घ्य लाने को कहा। फिर

महाराज के शुभागमन का कारण पूछा। महर्षि ने सब सुना, कुछ सोचा और कहा—'राजन्! वलाक नामक राक्षस ने उत्पलाक नामक वन में ब्राह्मण की पत्नी को चुरा कर रखा है। आपके वहां जाते ही यह कार्य सिद्ध हो सकेगा।" इन शब्दों के साथ महाराज अपना प्रयोजन पूरा होते देख कर भी सन्तुष्ट न हो सके। हृदय क्षुब्ध था। आखिर बात क्या है कि महर्षि ने अर्घ्य मँगाकर भी मुझे नहीं दिया। अन्ततोगत्वा महाराज अपने को रोक न सके और पूछ बैठे कि 'तपोधन! मैं जानना चाहता हूँ कि क्यों आपने अर्घ्य मंगाकर भी मुझे न देकर मेरा अपमान किया है।'

महर्षि ने कहा—राजन्! क्या आपको स्मरण नहीं है कि आपने अपनी पत्नी को घोर वन में छोड़ दिया है। अवश्य ही आपने अपनी पत्नी को छोड़ने के साथ ही उसी दिन अपने अखिल धर्मों का भी त्याग कर दिया था। जिस प्रकार पत्नी का कर्तव्य है कि वह दुश्चरित्र पति के साथ भी सर्वथा अनुकूल व्यवहार करे, उसी प्रकार पति का भी कर्तव्य है कि स्त्री के दुःशीला तथा कुरूपा होने पर भी उसकी रक्षा करे। महाराज, सोचें तो सही—अपनी प्रतिकूल पत्नी के लिए भी ब्राह्मण अपनी धर्म कामना तथा कर्तव्य बुद्धि से कितना दुःखी तथा चिन्तित है।

महाराज के हृदय में एक बार अतीत ने वर्तमान का रूप लिया, गहरी ठेस सी लगी। कुछ सोचा और महर्षि का अभिवादन कर आगे चल दिये। निर्दिष्ट स्थान पर राक्षस से साक्षात् हुआ। वलाक ने अपने द्वार पर महाराज जैसा अतिथि पा अत्यधिक स्वागत किया। पूछा—महाराज! किसलिये आपने आज इस दीन के पर्ण-कुटीर में पदार्पण कर इसकी शोभा बढ़ाई है? महाराज ने कहा—मुझे ज्ञात हुआ है कि तूने किसी ब्राह्मण की स्त्री चुरा ली है। मैं उसी की खोज में आया हूँ। राक्षस अधीर हो क्षमा याचना करता हुआ ब्राह्मणी को सामने लाया। महाराज ने कहा—तूने इस कुरूपा ब्राह्मणी का अपहरण क्यों किया था? राक्षस ने कहा—महाराज! देख सकते हैं कि मेरे घर में परम सुन्दरी राक्षसी है। फिर मैं इस कुरूपा मानवी को अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए क्यों लाता? ब्राह्मण के प्रति मेरे हृदय में जो अमर्ष है वह इसलिए कि वह प्रतिदिन यज्ञ में 'रक्षोघ्न' मन्त्र का पाठ कर मेरे परिवार को भूखों मार डालता है। अतः "बुभुक्षितः किं न करोति पापम्" के अनुसार ही मैंने जानबूझकर ऐसा किया है जिससे ब्राह्मणी के अभाव में ब्राह्मण की धर्महानि होवे और मेरी जीवन-यात्रा निर्विघ्न चलती रहे। मैं नरमांस का इच्छुक नहीं हूँ। महाराज की जैसी आज्ञा होगी, शिरोधार्य होगी।

राक्षस ने ब्राह्मणी को ब्राह्मण के घर पहुंचा दिया। महाराज का अभीष्ट पूरा हुआ। फिर भी कुछ सोचते विचारते महर्षि के दर्शनों के लिये चल दिए। महर्षि ने महाराज से निवेदन किया—राजन्! आप चिन्ता न करें, आपकी पत्नी इस समय पाताल लोक में कपोतक नामक नाग के यहां उसकी नन्दा, मनोरमा आदि स्त्रियों के साथ सुखपूर्वक सुरक्षित है। उसी राक्षस के पास जाओ। वह उसे ला सकेगा। महाराज श्री उत्तम ने अपने पूर्व कृत्य पर पश्चाताप किया और पत्नी को सादर घर पर ला उसके साथ जीवन का शेष भाग सानन्द व्यतीत किया।



ज्योतिष का आरम्भिक शिक्षण

[ले०—श्री पं० बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य]

जिस घर या भवन की नींव सुदृढ़ होती है वह भवन चिरस्थायी होता है, इसी प्रकार जिस किसी शिक्षा की प्रारम्भिक व्यवस्था ठीक होती है वह शिक्षा दृढ़ तथा फल-प्रद होती है, इसलिये ज्योतिष-शास्त्र की शिक्षा को सफल बनाने के लिये यह आवश्यक है कि प्रारंभिक शिक्षा-पर विचार किया जाय।

भारतीय ज्योतिष संस्कृत भाषा में निबद्ध है। आज कल यद्यपि अनेक ज्योतिष-पुस्तकें देशी भाषा में भी लिखी जाती हैं तथापि भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के ज्ञान के लिये संस्कृत का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है। संस्कृत साहित्य के ज्ञान के लिये संस्कृत-व्याकरण का ज्ञान प्रथमतः आवश्यक है। इसी लिये ज्योतिष के बड़े आचार्य भास्कराचार्य ने व्याकरण ज्ञान की प्रशंसा की है :—

यो वेद वेदवदनं सदनं हि सम्यग्
ब्राह्म्याः स वेदमपि वेद किमन्यशास्त्रम्।
यस्मादतः प्रथममेतदधीत्य धीमान्
शास्त्रान्तरस्य भवति श्रवणेऽधिकारी ॥

अर्थात् वेद के मुख सरस्वती के घर व्याकरण-शास्त्र को जो जानता है वह वेद को भी जानता है, दूसरे शास्त्रकी बात ही क्या ? इसलिये बुद्धिमान् जन पहले इस शास्त्र को पढ़कर शास्त्रान्तर जानने के अधिकारी होते हैं।

और एक स्थान में उन्होंने ज्योतिषियों के लिये व्याकरण शास्त्र जानने की आवश्यकता बतलाई है:—

द्विविधगणितमुक्तं व्यक्तमव्यक्तयुक्तं
तदवगमननिष्ठः शब्दशास्त्रे पटिष्ठः।
यदि भवति तदेदं ज्योतिषं भूरिभेदं
प्रपठितुमधिकारी सोऽन्यथा नामधारी ॥

अर्थात् पाटीगणित बीजगणित के जानने वाला व्याकरण-शास्त्र में अतिशय पटु व्यक्ति ही इस शास्त्र के पढ़ने का अधिकारी हो सकता है अन्यथा नामधारी ही है।

भास्कराचार्य का इस प्रकार का कथन वर्त्तमान समय में विशेष रूप से विचारणीय है जबकि व्याकरण-शास्त्र के ज्ञान से विहीन व्यक्ति इस विषय के अधिकारी देखे जाते हैं। वास्तव में ज्योतिषियों के लिये यह कलङ्क का विषय है कि उन्हें व्याकरण का ज्ञान न हो। व्याकरण-ज्ञान का यह अर्थ नहीं है कि उन्हें समस्त सिद्धान्त कौमुदी का ही ज्ञान हो, किन्तु शब्दरूप, धातुरूप, स्त्री प्रत्यय, कारक, समास आदि का ज्ञान तो अवश्य रहना चाहिये। इस प्रकार का ज्ञान थोड़े ही श्रम से हो सकता है और इस प्रकार की अनेक पुस्तकें अनुक्रमणिका, व्याकरणबोध इत्यादि बन चुकी हैं और बनती जारही हैं।

पूर्व समय में यह रीति थी कि प्रत्येक संस्कृत के पढ़ने वाला छात्र पाणिनिकृत अष्टाध्यायी-सूत्र तथा अमरकोष का अभ्यास करता था। इसीसे वे लोग व्याकरण ज्ञान पाकर व्युत्पन्न होते थे। पहले के ज्योतिषियों की रचना देखिये तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि वे लोग व्याकरण साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे, इसलिये यह सर्वतः प्रथम आवश्यक है कि ज्योतिष

शास्त्र के ज्ञान के लिये व्याकरण का पूर्ण ज्ञान रहे।

इसके अनन्तर ज्योतिषियों के लिये भास्कराचार्य के सदुपदेशों के अनुसार ही पाटी-गणित और बीज-गणित का अच्छा ज्ञान हो। पाटीगणित का ज्ञान व्यवहार के लिये और बीजगणित का ज्ञान गणित के तत्त्व को जानने के लिये है। पाटीगणित के ज्ञान में योग, अन्तर गुणन, भजन, वर्ग, वर्गमूल और त्रैराशिक ये ही मुख्य विषय हैं। इन विषयों में प्रौढ़ता के लिये अङ्कों की गिनती तथा विट्ठ्यारहां का अभ्यास अच्छी तरह से रहे, अतएव बाल्यकाल में ही व्याकरण-ज्ञान के साथ ही साथ अङ्कों की गिनती तथा विट्ठ्यारहां का अभ्यास रहना बहुत ही उपयोगी है।

आजकल के संसार में यद्यपि कण्ठस्थ करने की परिपाटी की निन्दा की जाती है, क्योंकि ऐसा करने से बुद्धि कुण्ठित होती है, परन्तु वास्तव में कुछ विषयों का कण्ठस्थ रहना अत्यन्त ही लाभप्रद है। योगादि छै विधियां जैसे पूर्णअङ्क के लिये हैं उसी प्रकार भिन्नाङ्क सच्छेदक राशियों की भी हैं। भिन्नाङ्क का ज्ञान तथा उसके योगान्तरादि विधियों में भी निपुणता रहनी चाहिये। संस्कृत के पाटी-गणित की पुस्तकों में एक अभाव यह है कि उनमें दशमलव गणित नहीं है, यद्यपि दशमलव क्रिया के ज्ञान के विना भी सब कार्य चल जाता है तथापि आजकल के संसार में दशमलव गणित-ज्ञान भी परमावश्यक है। बड़े २ गुणन भजन वर्गमूल की क्रियायें लघुरिक्थ गणित से अनायास सिद्ध हो जाती हैं; परन्तु लघुरिक्थ क्रिया दशमलव गणित के आधार पर ही है, इस सूक्ष्म दृष्टि से भी दशमलव गणित ज्ञान परमावश्यक है। यह सब प्रारंभिक गणित-ज्ञान तो रहना ही चाहिये, तत्पश्चात् त्रैराशिक ज्ञान अत्यन्त उपादेय है। भास्कराचार्य ने त्रैराशिक ज्ञान की बड़ी प्रशंसा की है "अस्ति त्रैराशिकं पाटी" पाटी गणित त्रैराशिक ही है, और पुनः उन्होंने कहा है :--

यत्किञ्चिद् गुणभागहारविधिना बीजेऽत्रवा गण्यते
तत् त्रैराशिकमेव निर्मलधियामेवावगम्यं विदाम्—
एतद्यद्बहुधास्मदादिजड़धीधीवृद्धि-बुद्ध्या बुधै-
स्तद्भेदानसुगमान् विधाय रचितं प्राज्ञैः प्रकीर्णादिकम् ॥

अर्थात् इस पाटी गणित में तथा बीजगणित में गुणक, भाग वर्गमूल द्वारा जो गणना की जाती है वह त्रैराशिक ही है, तथापि प्रकीर्णादि जो अनेक भेद पाटीगणित में देखे जाते हैं वे मूढ़धी हम लोगों के बुद्धिवृद्ध्यर्थ ही हैं।

इस प्रकार गणित-समुद्र में त्रैराशिक ही मुख्य वस्तु है। त्रैराशिक का अर्थ है कि तीन राशियों के सम्बन्ध से जो गणित हो। तीन राशियों की संज्ञायें--प्रमाण, प्रमाण-फल और इच्छा हैं। इनमें प्रमाण और इच्छा एक जाति की होती हैं और प्रमाणफल दूसरी जाति का होता है। जैसे चार पैसे में दस आम मिलते हैं तो दस पैसे में कितने आम मिलेंगे ? इस प्रश्न में चार पैसा प्रमाण है, दस आम प्रमाणफल है और दस पैसे इच्छा है, प्रमाण और इच्छा पैसा जातीय हैं और प्रमाणफल आम्रफल विजातीय। यहां पर जो उत्तर २५ आम मिलेगा वह इच्छाफल कहलाता है। इस त्रैराशिक के भी मुख्य दो भेद हैं--एक क्रम त्रैराशिक और दूसरा विलोम त्रैराशिक। क्रम त्रैराशिक और विलोम त्रैराशिक के भेद करने में थोड़ी सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता है वह बुद्धि इस प्रकार की है:—

(क्रमशः)

राशि-स्वामियों की विशिष्ट उपपत्ति

[लेखक—राजकुमार गुरु ज्योतिषालङ्कार पं० तारादत्तजी राज ज्योतिषी]

(गताङ्क से आगे)

शनि और मकर कुम्भ—

शनि भृत्यग्रह है—

प्रेष्यः सहस्रांशुजः (बृहज्जातक अ० २ श्लो० २)

भृत्य जन भृत्यता के लिये राजाओं या विशेष प्राप्तिवालों के आश्रय में निवास करते हैं। नैसर्गिक कुण्डली में मकर राज्य-स्थान और कुम्भ प्राप्ति-स्थान है। इसलिये मकर-कुम्भ शनि के स्वगृह सिद्ध हुए।

सर्वार्थ चिन्तामणि में शनि को राज-कारक भी माना गया है—

द्युमणिरमरमन्त्री सूर्यभौमौ सितज्ञौ,
गुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः।
दिनकर दिविजे ज्यौ जीवभानुज्ञमन्दाः।
सुरगुरुरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात् ॥ (अ० १८ श्लो० ३)

तदनुसार यह नैसर्गिक राज्य-स्थान—मकर का स्वामी सिद्ध हुआ। नैसर्गिक राज्य-स्थान मकर से द्वितीय कुम्भ नैसर्गिक राज्य-कोश स्थान है। राज्य का स्वामी ही राज्य-कोश का स्वामी होता है। इसलिये कुम्भ का स्वामी भी शनि ही होता है।

ऐसी शङ्का नहीं करनी चाहिये कि एक ही ग्रह भृत्य-कारक और राज-कारक कैसे हो गया ? क्योंकि उत्कृष्ट बलवाले शनि को यदि राज-कारक माना जाय, तब उसे ही अल्प बलवाला भृत्य कारक नहीं मानना चाहिये ?

बृहज्जातक की भट्टोत्पलकृत टीका में मकर का स्वरूप इस प्रकार दर्शाया गया है—

मृगार्धपूर्वो मकरोऽम्बुजार्धो जानुप्रदेशं तमुशन्ति धातुः।
नदीवनारण्यसरिद्द्रव्यनूप श्वभ्राधिवासो दशमः प्रदिष्टः॥

इस पद्य में शनि को जानुका अधिष्ठाता माना है, जातकाभरण के गोचर-प्रकरण में भी शनि को जानु का अधिष्ठाता ही माना गया है।

जानूरु देशे नलिनीशसूनुः।

भट्टोत्पल टीका के पद्य में मकर को वन्य और पर्वतचारी भी माना है. जातक पारिजात में भी शनि को वन्य और पर्वतचारी माना है।

कुजाहिमन्द ध्वज वासरेशा भवन्ति शैले विपिने चरन्तः।

भट्टोत्पलकृत टीका के पद्य में शनि को अनूप देश का अधिष्ठाता माना गया है। अनूप देश का लक्षण भावप्रकाश नामक वैद्यक ग्रन्थ में इस प्रकार है—

नदीपल्वलशैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः।
हंससारसकारण्ड-चक्रवाकादि-सेवितः॥
शशवाराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः।
प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्यो भूरिशस्यफलान्वितः॥
अनेकशालिकेदार कदलीक्षुविभूषितः।
अनूप देशो ज्ञातव्यो वातश्लेष्मामयान्वितः॥

इन पद्यों से अनूप देश में कफ-वात विकार होना स्पष्ट है। शनि भी कफ-वात विकार करनेवाला है—

श्लेष्मेर्ष्यानिलकोपमोहमलिनव्यापत्तितन्द्राश्रमान्॥

(बृहज्जातक अ० ८ श्लो० १६)

इस प्रकार मकर और शनि में कफ-वात-विकाराधिष्ठातृत्वरूप साधर्म्य है।

भट्टोत्पल कृत टीका के पद्य में मकर को छिद्र का अधिष्ठाता भी माना गया है।

"द्यु मणि रमरमन्त्री..........."इस सर्वार्थचिन्तामणिके पद्य में शनि को अष्टम भाव का कारक माना गया है। अष्टमभाव छिद्र का अधिष्ठाता है। 'छिद्रमष्टमम्' (लघु जातक)।

इस प्रकार मकर और शनि में छिद्राधिष्ठातृत्व रूप साधर्म्य है। मकर, नक्र आदि हिंसक जीवों का अधिष्ठाता है। शनि भी अष्टम कारक होने से हिंसक जीवों का अधिष्ठाता है।

मकर का संबन्ध वृद्ध स्त्रियों से है।

लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासुनिरतः संत्यक्तलज्जो घृणी।

(बृहज्जातक)

शनि वृद्ध स्त्रियों की प्राप्ति करानेवाला है।

सौरीं प्राप्य खरोष्ट्रपक्षिमहिषीवृद्धाङ्गनावाप्तयः।

लिखित पद्य में मकर का अगम्यागमन आदि पाप का अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। शनि भी पाप का अधिष्ठाता है। मकर राशि नैसर्गिक लग्न मेष के उदय काल में सब राशियों से ऊपर होती है। शनि की कक्षा सब ग्रहों की कक्षाओं से ऊपर है।

इस प्रकार मकर का शनि से धर्म-साहश्य सिद्ध होने से 'आनुकूल्यं धर्मसादृश्यात्' इस ज्यौतिष-मीमांसा-दर्शन के सूत्र से अनुकूलता सिद्ध होने से शनि का मकर राशि का स्वामित्व सिद्ध हुआ।

भट्टोत्पलकृत टीका के पद्य में कुम्भ राशि का स्वरूप इस प्रकार है:—

स्कन्धे तु रिक्तः पुरुषस्य कुम्भो जङ्घे तमेकादशमाहुराद्याः।
शुष्कोदकाधार कुशस्य पक्षिस्त्रीशौण्डिकद्यूतविहारभूमिः

इस पद्य में स्पष्ट है कि कुम्भ राशि कन्धे के ऊपर कुम्भवाला पुरुष है। स्कन्ध पर कुम्भ लेकर भृत्यजन चलते हैं। शनि भृत्य ग्रह है, इसलिये कुम्भ और शनि का धर्म-साहश्य है। रिक्त कुम्भ अपशकुन सूचित करता है, शनि अनिष्ट ग्रह है। इस प्रकार भी कुम्भ और शनि का धर्म-साहश्य है।

इस पद्य में शनि का कुधान्य और पक्षियों का अधिष्ठातृत्व भी स्पष्ट है। बृहज्जातक के दशाध्याय के पद्य में शनि का पक्षी और कुधान्य अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है:—

सौरीं प्राप्य खरोष्ट्र पक्षिमहिषीवृद्धाङ्गनावाप्तयः।
श्रेणीग्राममुराधिकारजनिता पूजा कुधान्यागमः॥

इस प्रकार भी कुम्भ-शनि का धर्म-साहश्य है। लिखित टीका के पद्य में कुम्भ का स्त्री, कलाल और द्यूत का अधिष्ठातृत्व भी स्पष्ट है। स्त्रियों में अनुचित आसक्ति मद्यपान द्यूत आदि नीच कर्म हैं, शनि भी नीच ग्रह है। इस प्रकार भी कुम्भ और शनि का धर्म-साहश्य है।

कुम्भ क्रूर है, शनि भी क्रूर है। कुम्भ की दिशा पश्चिम है, शनि की दिशा भी पश्चिम है। कुम्भ का तत्त्व वायु है, शनि का तत्त्व भी वायु है। इस प्रकार भी कुम्भ-शनि का धर्म-साहश्य है। इसलिये शनि पूर्व लिखित सूत्र से कुम्भ का स्वामी सिद्ध हुआ।

चन्द्र और कर्क—

कर्क नैसर्गिक कुण्डली में चतुर्थ स्थान है। "द्यु मणिरमर मन्त्री........" इस जातक पारिजात के पद्य के अनुसार चन्द्रमा चतुर्थ स्थान का कारक है। कर्क ब्राह्मण है, चन्द्रमा ब्राह्मणराज है। सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा (यजु० अ० ६ मं० ४०) कर्क जलचर है, चन्द्रमा भी जलचर है, कर्क स्त्री है, चन्द्रमा भी स्त्रीग्रह है। कर्क चर है, चन्द्रमा भी चर है।

बृहज्जातक की भट्टोत्पल कृत टीका में कर्क का स्वरूप इस प्रकार है—

कर्को कुलीराकृतिरम्बुसंस्थो वक्षः प्रदेशे विहितश्च धातुः।
केदारवापीपुलिनानि तस्य देवाङ्गनारम्यविहारभूमिः॥

इस पद्य में कर्क का क्षेत्र का अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। चन्द्रमा भी चतुर्थ का कारक होने से क्षेत्र का अधिष्ठाता है।

इस पद्यमें कर्क का वापी पुलिन आदिका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है, चन्द्रमा भी जलका अधिष्ठाता होने से वापी पुलिन आदि का अधिष्ठाता है।

इस पद्य में कर्क का देवाङ्गना, रमणीय विहार, भूमि आदिका अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है। चन्द्रमा भी देवता होने से, स्त्रियों का अधिष्ठाता होने से, दर्शनीय होने से और शुभ भूमि का अधिष्ठाता होने से देवाङ्गना, रम्य विहार भूमि आदि का अधिष्ठाता सिद्ध होता है। इस प्रकार धर्म, सादृश्य होने से चन्द्रमा लिखित सूत्र से कर्क का स्वामी सिद्ध हुआ।

सिंह और सूर्य—

सिंह नैसर्गिक कुण्डली में पञ्चम है। सूर्य नैसर्गिक आत्मकारक है। आत्मा बुद्धि में प्रकाशित होता है।

सदा सर्वगतोऽप्यात्मा न सर्वत्रावभासते।
बुद्धावेवावभासेत स्वच्छेषु प्रतिबिम्बवत्॥ (आत्मबोध)

बृहज्जातक की भट्टोत्पलकृत टीका में सिंह का स्वरूप इस प्रकार है:—

सिंहश्च शैले हृदयप्रदेशे प्रजापतेः पञ्चममाहुराद्याः।
तस्याटवीदुर्गगुहावनाद्रि व्याधाटवीदुर्गवनप्रदेशाः॥

इस पद्य के अनुसार सिंह का वन-पर्वत देश का अधिष्ठातृत्व स्पष्ट है, सूर्य भी वन-पर्वत देश का अधिष्ठाता है। राशियों में सिंह का प्राबल्य है, ग्रहों में सूर्य का प्राबल्य है। सिंह में ही सूर्य का प्रभाव सहन करने की शक्ति है। सूर्य ही सिंह का शासन कर सकता है। सिंह स्थिर है, सूर्य भी स्थिर है। सिंह क्रूर है, सूर्य भी क्रूर है। सिंह पुरुष है, सूर्य भी पुरुष है। सिंह आग्नेय है, सूर्य भी आग्नेय है। सिंह क्षत्रिय है, सूर्य भी क्षत्रिय है। सिंह चतुष्पद है, सूर्य भी चतुष्पद है। सिंह की दिशा पूर्व है, सूर्य की दिशा भी पूर्व है। सिंह की पित्त प्रकृति है, सूर्य की भी पित्त प्रकृति है। इस प्रकार धर्म-सादृश्य होने से लिखित सूत्र के अनुसार सूर्य सिंह का स्वामी सिद्ध हुआ।

सिंह नैसर्गिक आत्मकारक सूर्य की राशि है। स्वगृह से सप्तम में राशिबल हीन होता है। इसलिये कुम्भ में मृत्यु के अधिष्ठाता शनि का स्वगृह बल पूर्ण होता है। इसी प्रकार सिंह में शनि का स्वगृह बल हीन होता है। कर्क नैसर्गिक मनःकारक चन्द्रमा की राशि है, इससे सप्तम मकर में चन्द्रमा का स्वगृहबल हीन होता है। इसमें मृत्यु के अधिष्ठाता शनि का स्वगृह बल पूर्ण होता है। इसी प्रकार कर्क में शनि का स्वगृह बल हीन होता है।

इस रीति से जीवन-शक्ति के आधार रूप सूर्य-चन्द्रमा की राशियों से मृत्यु के अधिष्ठाता शनि की राशियां और शनि की राशियों से सूर्य-चन्द्रमा की राशियां सिद्ध होती हैं।

(क्रमशः)

त्रैमासिक भविष्य प्रकाश

[ले० श्री पं० गङ्गादत्त जी ज्योतिषाचार्य]

प्रथम सप्ताह ता० २६ जून से ३ जु० तक —

इस सप्ताह में चांदी सोना रुई के बाजार एक प्रखर मंदी में जावेंगे। चांदी में १०) सोने में ७) रुई में १५) टके की मोटी मंदी आने के चमत्कारी योग बने हैं। सावधान, ता० २६-२७ को डबल बेचकर, ता० ३ व ४ को माल पकड़ो, नफा सामने होगा। तेल तिलहन तारामीरा अरहर सरसों और लाहा के भाव तेज जायेंगे। बाकी सब सम रहेंगे।

द्वितीय सप्ताह ता० ४ से १२ जुलाई तक—

इस सप्ताह में दोतरफा घटबढ़ चलेगी। पहिले कुछ मंदा होकर पुनः तेजी का असर रहेगा। चांदी ८) सोने में ६) की घटावढ़ी चलेगी। नीचे में खरीदो, ऊँचे में बेचो, लाभ दोतरफा हाथ में आजायगा। रुई में १०) टके की मंदी जँचती है। रुख व्यापारी ता० ६ के फोन से मिलावें। तारामीरा धान गुड़ की तेजी रहेगी। अलसी सरसों अरहर और लाहा के भाव कुछ मंदे होकर फिर से तेजी का अनुभव करेंगे।

तृतीय सप्ताह १२ से २० जुलाई तक—

इस सप्ताह में चांदी सोना रुई के भाव इकतरफा तेजी का अनुभव करेंगे। घटे भाव खरीदेगा, वही नफा उठावेगा, बाकी देखते रह जायेंगे। राहु मंगल का योग विचित्र तेजी मंदी दिखलायगा। पहिले ता० १४ को खरीदो, १६ को बेचो, डबललाभ सामने होगा।

चतुर्थ सप्ताह २० से ३१ जुलाई तक—

इस सप्ताह में चांदी सोने के भावों में विचित्र मंदी आने के योग हैं। चांदी में १५) सोने में १०) रुई में २०) की इकतरफा मंदी आवेगी। व्यापारी सावधान! इस चांस को गौर से देखें, पहिले ता० २५ तक तेजी, फिर तूफानी मंदी होगी। ता० २६ का बेचान ही लाभकारी रहेगा। अलसी सरसों अरहर के भाव फिर से ऊंचे जाने में समझें, घटे भाव खरीदेगा वह-१५ दिन में नफा उठायेगा।

पञ्चम सप्ताह ता० १ से ८ अगस्त तक—

इस सप्ताह में दो तरफा घटबढ़ चलेगी। पहिले ता० १ को बेचो, ता० ४ को डबल खरीदो, लाभ हो जायेगा। तिलहन वारदाना जूट रुई के भाव तेज होकर मन्दे हो जायेंगे, इस सप्ताह में दो तरफा घट-बढ़ से हुशियारी के साथ लाभ उठावें।

छटा सप्ताह ता० ८ से १६ अगस्त तक

यहां पर विदेशी खबरों के आधार पर बाजारों में भारी तेजी मन्दी आवेगी, सावधान! पहिले ता० ८ से १० तक मन्दी फिर इकतरफा तेजी चलेगी। ता० ११ को खरीदो, १६ तक अच्छा मुनाफा हाथ आ जायगा। गुड़ अलसी सरसों लाहा रुई के भाव सम पड़े रहेंगे।

सातवां सप्ताह ता० १६ से २३ अगस्त तक—

इस सप्ताह में चांदी सोने के बाजारों में फिरसे तेजी चमकेगी। ता० १८ की खरीद २। दिन में लाभ

देगी। तिलहन, धान, चावल, जीरा,अलसी सरसों, के भाव मन्दी में रहेंगे।

आठवां सप्ताह ता० २३ से ३१ अग० तक—

इस सप्ताह में चांदी सोने रुईके भावों में धड़ाके-बन्द मन्दी आयेगी बाजार पानी २ हो जायेंगे। चांदी में २०) सोने में १२) रुई में २०) की घटा-बढ़ी जँचती है। सावधान! ता० २७ का बेचान हवा बांध देगा। ३१ तक ४ दिन में भारी उथल पुथल जँचती है। नोट--ता० २८ के बाजार पर लक्ष रखो, यदि इस दिन ३) ४) की मंदी आई तो चांस सत्य समझें, वरना मंदी आकर पुनः बाजार उठ जायगा।

नवां सप्ताह ता० १ से ८ सितम्बर तक—

इस सप्ताह में अचानक चांदी सोने में तेजी आयेगी। खुलते बाजार ता० १ को खरीदो ४ तक लाभ लेकर डबल बेचो, ७ तक मुनाफा हो जायगा। चांदी सरसों रुई अरहर मन्दी होकर तेज होंगी। जो खरीदेगा वही नफा ले जायगा।

दशवां सप्ताह ता० ८ से १६ सितम्बर तक—

इस सप्ताह में चांदी सोने रुई के बाजार एक प्रखर मन्दी का झटका प्रारम्भ में देकर पुनः एक-तरफा तेजी में होंगे। व्यापारी सावधान! मन्दी के झटके में माल पोते करो और नफा लो। धान, चावल, अलसी, सरसों तेजी पर तेजी में रहेंगी। बाकी सर्व वस्तुयें मन्दी की ओर आकर्षित होंगी।

ग्यारहवां सप्ताह ता० १७ से २४ सि० तक-

इस सप्ताह में प्रखर रूप में सब वस्तुयें मन्दी होंगी, यहां आखिरी तेजी है। खुले दिल से हर वस्तु का बेचान लाभकारी रहेगा।

बारहवां सप्ताह ता० २५ सित० से ७ अ० तक

इस सप्ताह में बाजार डावांडोल रहेगा। चांदी में ६) ८) सोने में ५) रुई में १५) की घटा बढ़ी होगी। नीचे भाव आपको ३० तक मिलेंगे। जो खरीदेगा वही ७ तक नफा ले जायगा, बाकी सब देखते रह जायेंगे।

तेरहवां सप्ताह ता० ८ अक्टूबर से २४ तक——

इस सप्ताह में एक प्रखर तेजी चलेगी। चांदी, सोना, रुई, अलसी, सरसों, लाहा, तिलहन वगैरा सब वस्तु तेजी में होकर मंदी होंगी। पहिले खरीदो, ता० ८-१० बेचो २१-२२ में लाभ हो जायेगा।

जून का दैनिक रुख

ता०	वार	व्यापारिक फल
२६	गु०	तेजी मंदी लगाओ।
२७	शु०	खुलते बाजार खरीदो।
२८	श०	नफा लो और बेचो।
२६	र०	प्राईवेट में रुख मन्दा।
३०	सो०	तेजी का भड़का।

जुलाई का दैनिक रुख

ता०	वार	फल
१	मं०	४ बजे बाद मंदी।
२	बु०	बेचो और नफालो।
३	गु०	मंदी की गली लगाओ।
४	शु०	खुलते बाजार खरीदो।
५	श०	तेजी ५ बजे तक।
६	र०	प्राईवेट में रुख मन्दी।
७	सो०	चांदी रुई खरीदो।
८	मं०	तेजी का भड़का।
६	बु०	रुख स्टेडी।
१०	गु०	मंदी की गली लगाओ।
११	शु०	खुलते बाजार खरीदो।
१२	श०	मंदी की चाल बेचो।
१३	र०	प्राईवेट में तेजी।
१४	सो.	तेजी से मंदी बेचो।

१५	मं०	बाजारों में हलचल।
१६	बु०	मंदी के तार देखो।
१७	गु०	दो बजे खरीदो।
१८	शु०	नफालो छोड़ो नहीं।
१९	श०	तेजी लाईन पकड़ेगी।
२०	र०	प्राईवेट में रुख नरम।
२१	सो.	चांदी रुई खरीदो।
२२	मं०	नफा लो और बेचो।
२३	बु०	इकतरफा मंदी।
२४	गु०	मंदी ४॥ बजे तक।
२५	शु०	एक बजे खरीदो।
२६	श०	नफालो ६ बजे तक।
२७	र०	प्राईवेट में रुख नरम।
२८	सो.	खुलते बाजार खरीदो।
२९	मं०	तेजी की गली लगाओ।
३०	बु०	तेजी ३ बजे तक बाद को मंदी।
३१	गु०	गली लगाना फायदे कारक।

अगस्त की दैनिक रुख

ता०	वार	फल
१	शु०	खुलते बाजार खरीदो।
२	श०	पांच बजे तक नफालो, बेचो।
३	र०	रुख स्टेडी नरम।
४	सो.	रुई चांदी मंदी रहेगी।
५	मं०	सोना तेज खरीदो।
६	बु०	आज के योग दो तरफा।
७	गु०	मंदी की चाल में बेचो।
८	शु०	बम्बई के तार देखो।
९	श०	खरीदो १ बजे स्टॅ०।
१०	र०	रुख नरम।
११	सो.	खुलते बाजार खरीदो।
१२	मं०	तेजी का भड़का।
१३	बु०	मंदी ३ बजे बाद देखो।
१४	गु०	मंदी की गली लगाओ।
१५	शु०	खरीदो १ बजे स्टॅ०।
१६	श०	नफालो ५॥ बजे।
१७	र०	प्राईवेट में तेजी।
१८	सो.	दो बजे बाद खरीदो।
१९	मं०	रात्रि के १० बजे नफालो।
२०	बु०	बाजार देखो और खरीदो।
२१	गु०	तेजी की गली लगाओ।
२२	शु०	इकतरफा तेजी की चाल।
२३	श०	लेकर बैठनां नहीं, नफालो।
२४	र०	प्राईवेट में मन्दी।
२५	सो.	मंदी में दो बजे तक खरीदो।
२६	मं०	तेजी का भड़का ४ बजे तक।
२७	बु०	तेजी की गली लगाओ।
२८	गु०	इकतरफा तेजी की चाल।
२९	शु०	तेजी ५ बजे तक फिर मन्दी।
३०	श०	सुबह बेचो शाम को लाभ !
३१	र०	प्राईवेट में मन्दी।

सितम्बर की दैनिक रुख

ता०	वार	फल
१	सो.	३ बजे तक मन्दी में खरीदो।
२	मं०	इकतरफा मन्दी चलेगी।
३	बु०	ढाई बजे तक डबल बेचो।
४	गु०	गली लगावो या बेचो।
५	शु०	चारों तरफ के तार मंदी के
६	श०	घटे भावों में खरीद करो।
७	र०	इकजाई रुख तेजी की।
८	सो.	१२॥ बजे खरीदना मत भूलो।
९	मं०	तेजी में बेचना ही चांस है।
१०	बु०	चिम्मन मोती का बेचान खुलेगा।
११	गु०	बाजारों में भारी घट बढ़।

१२	शु०	सावधान, २। दिन मंदी रहेगी।
१३	श०	घटे भाव खरीदेगा वही नफा उठायेगा।
१४	र०	प्राईवेट में रुख तेजी का।
१५	सो.	घटे भाव खरीद जारी रखो।
१६	मं०	आज का नफा छोड़ो नहीं।
१७	बु०	तेजी की चाल ५ बजे तक।
१८	गु०	मंदी की गली लगाओ।
१९	शु०	१ बजे तक खरीदो।
२०	श०	५ बजे तक डबल बेचो।
२१	र०	प्राईवेट में रुख मंदा।
२२	सो.	मंदी ३ बजे खतम, खरीदो।
२३	मं०	नफा लेकर बेचो।
२४	बु०	मंदी की चाल ४ बजे से।
२५	गु०	तूफानी मन्दी लगावो।
२६	शु०	रोजाना घटबढ़ में नफालो।
२७	श०	मंदी की चाल ६ बजे प्रारम्भ।
२८	र०	रुख स्टेडी।
२९	सो.	खुलते बाजार खरीदो।
३०	मं०	तेजी का भड़का।

अक्टूबर की दैनिक रुख

१	बु०	४ बजे तक तेज़ी फिर मन्दी।
२	गु०	इकतरफा मन्दी।
३	शु०	तेजी की ताकत नहीं है।
४	श०	बेचान ही चांस है।
५	र०	रुख स्टेडी मन्दा।
६	सो.	मन्दी डबल बेचो।
७	मं०	४ बजे बाद तेजी रहेगी।
८	बु०	खरीदो १।। बजे तक।
९	गु०	इकतरफा तेजी।
१०	शु०	रोजाना लाभ लेते रहो।
११	श०	घटे भाव खरीद जारी रखो।
१२	र०	स्टेडी रुख नरम।
१३	सो.	खुलते बाजार बेचो।
१४	मं०	मन्दी का झटका ४।। तक।
१५	बु०	मन्दी की चाल में पोते करो।
१६	गु०	खरीदो १।। बजे तक।
१७	शु०	नफालो और बेचो।
१८	श०	सुबह खरीदो रात तक लाभ।
१९	र०	प्राइवेट रुख मन्दा।
२०	सो.	ढाई बजे तक खरीदो।
२१	मं०	नफालो ६ बजे तक।
२२	बु०	बेचो ४ बजे तक।
२३	गु०	मन्दी की गली लगाओ।
२४	शु०	खरीदो १ बजे, १० बजे लाभ।

छोड़ दे तू

गीत हैं निस्सार तेरे गीत लिखना छोड़ दे तू!

जो हिला पाया न उर वह
पर्वतों को क्या हिलाये
राष्ट्र को संदेश क्या दे,
पथ न जो निज जान पाये।

दीन को क्या सान्त्वना दे,
पेट भर कर जो न खाये।
शक्ति है तो दासता की
बेड़ियों को तोड़ दे तू

गीत हैं निस्सार वर्ना,
गीत लिखना छोड़ दे तू।

—'दासु'

वाणिज्य व्यवसाय में ग्रहों का प्रभाव

(आगामी चार मास में चांदी, सोना, रुई की तेजी मन्दी के चांस)

[ले०—श्री पं० अमरदत्त जी मिश्र एल. एम. ए कोमरशीयल एस्ट्रोलोजर]

व्यापारियों को इस तेजी मन्दी द्वारा अत्यधिक लाभ होगा, किन्तु वे सतर्क रहकर इसके आधार पर कार्य करें। हमने सायन और निरयन दोनों सिद्धान्तों का समन्वय किया है और जिस प्रकार ग्रहों का प्रभाव रुई चांदी सोना आदि के भावों पर हुआ है उसको ज्योतिष सिद्धान्तानुसार पाठकों की सेवा में सर्वहितार्थ प्रकाशित किया जा रहा है। हमारे विचार या ग्रहचार में किसी प्रकार का व्यवधान पड़े अथवा दिव्य भौमान्तरिक्ष-जन्य किसी निमित्त विशेष के कारण व्यापार की लाईन बदल जाने से व्यापारियों को यदि हानिलाभ हो तो उसके हम किसी भी प्रकार जिम्मेदार नहीं होंगे। हमें ग्रह गणना से प्रतीत होता है कि आनेवाले चार महीनों में व्यापार-क्षेत्र में अत्यन्त परिवर्तन होंगे, अतः सतर्कता और सावधानी से काम लें।

जुलाई में तेजी मन्दी के चान्स

(१) सूर्य ता० २४ जुलाईको सायनसिंह में प्रवेश करता है, अतः रुई में रुख मन्दी का रहेगा, कोई तेजी का व्यापार न करें। (२) मंगल सायन मिथुन में १ जुलाई को प्रवेश करता है, यह बाजार को विशेष नीचे ले जावेगा। (३) शुक्र सायन कर्क में ६ जुलाई को प्रवेश करता है, इससे रुई के बाजार में तेजी आवेगी, किन्तु यह अधिक टिकाऊ नहीं है। (४) ता० २ जुलाई को बुध वक्री हो रहा है, अतः यह चांदी में मंदी लावेगा और फिर ५ को अस्त होगा, अतः यह रुई में तेजी लायेगा फिर बाजार को गिरा देगा। (५) ता० २६ जुलाई को बुध मार्गी होता है, इसके प्रभाव से रुई में पहिले मन्दी आवेगी और फिर तेजी में खरीद कर बेचना लाभ दायक होगा। इसी प्रकार चांदी में घटा बढ़ी आकर तेजी आवेगी और तेल घृत गुड़ शक्कर इनमें भी तेजी आवेगी। (६) ता० ५ जुलाई को गुरु मार्गी होता है, अतः इससे ३। ४ दिन पूर्व बाजार रुई में मन्दी का झोंका आकर फिर बाजार तेजी की ओर चलेगा, इससे चांदी में तेजी का पूरा प्र भाव होगा।

कई की तेजी की तारीखें११-१२-१५-१७-१८-२३ हैं। ता० १२ जुलाई को जीरे के बजार में विशेष तेजी का झोंका आवेगा।

रुई की तेजी की तारीखें २-३-४-१०-१३-१५-१६-२८ हैं। चांदी सोने में तेजी की तारीखें ३-११-१५-१७-१८-२२-२३-२७, हैं।

२६ जुलाई को शुक्र अस्त होता है, अतः पहले रुई में घटा बढ़ी होकर अन्त में मन्दी का असर होगा। सोना तांबा में तेजी आवेगी। चांदी में विशेष घटा बढ़ी चलेगी।

अगस्त में तेजी मन्दी के चान्स

(१) शनि मंगल एक राशि में आते हैं, अतः रुई में एक बार २५ से ५० टकों तक की तेजी का रिएक्शन

अवश्य आवेगा। (२) ता० २४ को सूर्य सायन कन्या में जाता है, इसका प्रभाव भी रुई में तेजी कारक है। इसलिये हर मन्दी के रिएक्शन में खरीदने वालों को अवश्य ही उत्तम लाभ होगा। (३) मंगल भी ता० १४ से कर्क में आता है, यह चांदी के बजार में विशेष हेर-फेर करेगा और मन्दी का अन्तर विशेष होगा

चांदी सोने में मन्दी की तारीखें २-५-१६-२३ हैं।

२२ जून से ६ जुलाई तक एक बार सबमें तेजी का रुख बरतेगा और १० जुलाई से महीने के अन्त तक एक बार सोने और लोहे में विशेष तेजी का रिएक्शन आवेगा। १५ से २६ जुलाई तक रुई के बाजार में विशेष तेजी आवेगी।

(४) शुक्र सायन सिंह में ता० २ को प्रवेश करता है, अतः यह हर एक तेजी के रिएक्शन में रुई में मन्दी का झोंका अच्छा लावेगा। फिर २७ को कन्या में प्रवेश करता है, यह अवश्य ही रुई में अच्छी मन्दी लावेगा। (५) बुध ता० ११ को सिंह में प्रवेश करता है, अतः इस समय में हर तेजी में बेचो और हर मन्दी पर खरीदो। फिर ता० २७ को बुध कन्या में प्रवेश करता है, अतः मन्दी का पीछा मत करो, रुख तेजीका चलेगा। (६) एक बार रुई के बाजार में ता ६ अगस्त को यूरेनस और मंगल की युतिसे थोड़े समय के लिये इतनी मन्दी आवेगी कि व्यापार-क्षेत्र में इसका विशेष प्रभाव पड़ेगा और रुई में अच्छी मन्दी आवेगी।

रुई की तेजी की तारीखें–११-१४-२१, हैं।

रुई की मन्दी की तारीखें–२-३-५-८, १२, १३, १७, २५ और ६ विशेष हैं।

सोना चांदी में तेजी की तारीखें—१५-१६-१७-१८-२५ हैं।

सोना चांदीमें मन्दी की तारीखें-२-५-१८-२० हैं।

सितम्बर में तेजी मन्दी के चान्स

(१) ता० २४ को सूर्य तुला में प्रवेश करता है, यह रुई और अन्य चीजों में मन्दी लावेगा। (२) ता० २० को शुक्र भी तुला में आता है, यह केवल बाजार को नीचे जाने से रोकता है। बाजार कभी कभी बनासा रहेगा। (३) ता० १२ को बुध तुला में प्रवेश करता है, यह बाजार में विशेष गड़बड़ न होने देगा, किन्तु तुला में ३ ग्रह इस मास में आते हैं, तुला मिश्र राशि है न फलवती है और न अफलवती, इसलिये चांदी रुई में और अन्य पदार्थों में भी विशेष ध्यान से कार्य करना चाहिये। विशेषतया बाजार की स्थिति अस्थिर सी रहेगी।

रुई में तेजी की तारीखें—६, १६, १७, १८, २०, २२, २७ हैं।

रुई की मन्दी की तारीखें—२, ३, १५, १७, २२, ३० हैं।

सोना चांदी में तेजी की तारीखें—१, ६, १५, १६ और ६—१६ विशेष हैं।

सोना चांदी में मन्दी की तारीखें—३, ६, १०, १२ २३, ३० हैं।

अक्टूबर में तेजी मन्दी के चान्स

(१) ता० २४ को सूर्य सायन वृश्चिकमें प्रवेश करता है और गुरु सायन धन में प्रवेश करता है, एक रुई को तेज करता है और दूसरा मन्दी, अभी एकवार बाजार तेज होगा, फिर मन्दा होजायगा।

(२) ता० १ को मंगल सायन सिंह में प्रवेश करता है, यह सोने के बाजार में विशेष परिवर्तन करेगा अर्थात् मन्दी लावेगा, किन्तु बाजार का रुख तेजी का ही रहेगा। (३) ता० २ को बुध सायन

वृश्चिक में प्रवेश करता है, अतः बाजार में विशेष मन्दी के झोंके समय २ पर आवेंगे।

रुई की तेजी की तारीखें--३, ५, ६, १५, १७, १६, २६, ३१ हैं।

रुई की मन्दी की तीरीखें—१, २, ४, ५, ८, १०, १४, १५, १७, २०, २१, २४, ३१ हैं।

चांदी की मन्दी की तारीखें--२, ६, १३, १४, १६, २२, २३ हैं।

चांदीकी तेजीकी तारीखें-१, ७, ८, ६, १४, १५।

सोने की तेजी की तारीखें-२, ५, २१, २२, २४।

सोने की मन्दी की तारीखें--१, १०, २२, २४।



अचूक चान्स ज्ञात करने के कुछ सरल नियम

[श्री बी० जे० आश्रम सुलतानिया द्वारा प्राप्त]

चांदी के लिये—

(१) चन्द्र के कर्क राशिस्थ २। दिनों में चांदी में कम से कम ३) ४) रु० की तेजी तो आती ही है। यदि इन दिनों में मंगल या गुरुवार हो तो और भी ज्यादा तेजी आ सकती है। बुधवार हो तो साधारण तेजी आकर ही रह जायेगी।

(२) राहु की राशि में प्रविष्ट होते समय चन्द्र ज़ोरदार घट बढ़ करता है।

(३) जिस मास में मंगल और शनि एक राशि में होते हैं, उस मास में लगभग १० - १२ दिनों की एकतरफी मन्दी आती ही है। वशर्ते कि इन पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो।

रुई के लिये—

(१) शुक्र का भरणी, पुष्य, स्वाति, श्रवण और रेवती नक्षत्रों में प्रवेश १०) १५) टके की मन्दी लाता है।

(२) बुध के वक्री होने पर रुई में २०) २५) रु० की मन्दी आ सकती है, वशर्ते कि बुध सूर्य के साथ न हो।

(३) बुध शुक्र एक ही स्थान में हो और चन्द्र युक्त हो जाय तब चन्द्र स्थिति के उन २। दिनों में २० - ३० रुपये की तेजी होती है।

न्यूयार्क काटन फीचर्स के लिये—

(१) एकादशी के दिन ५ आ जावे तो बेघड़क १ और २ लगावें। यह ६५ प्रतिशत मिलता है।

(२) यदि शनिवार को अचैञ्जड आ जावे तो अगले सप्ताह में १-२-३ चूके नहीं। पिछला २२ वर्ष का रिकार्ड मिलाकर देखलें, एक बार भी फेल नहीं सुना।

(३) शनि के वक्री होने पर और चन्द्र इर्शल की पूर्ण युति होने पर शून्य दुर्भाग्य से ही भले ही चूके।

चांदी, सोना, रुई के जनरल चांस

[ले०—ज्योतिषाचार्य-रमलाचार्य-प्रो० श्रीगणेश शर्मा "दैवज्ञ" विद्यासागर]

आषाढ़ शुक्लपक्ष (सुदी) की दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१०	श.	तेजी २) फिर बेचो	तेजी १।) मन्दी ।।।)	उछाला ३) ३।।) का है बेचो
१२	चं०	ऊँचे में बेचो मंदी १।।) २)	बढ़े तो डबल बेचो १) मंदा	टोन मंदा चल रहा है ४)४।।)
१३	मं०	रङ्ग दुतर्फा चलेगा	तेज १।) १।।)	मंदी में बाजार जावे तो बेचो
१४	बु०	मंदी खेलो २) २।।)	पड़े भाव देखोगे	पहिले मंदी ४)५) फिर तेज
१५	गु०	पहिले मंदा फिरतेज १।।) से २।।)	मंदी खेलो ।।।) १)	कुछ तेज फिर मंदा ५) ६)

आषाढ़ मास की पोजीशन चाँदी सोना रुई :—

सुदी १० से १५ तक ऊँचे में बेचो, यहां चांदी ५) ६), रुई १०) १५) सोना २।।) ३) की मंदी चलेगी। कभी २ तड़फड़ाकर उछाला भी देते रहेंगे, लेकिन ध्यान मन्दा रुख मुनाफा खाते चलो।

प्रथम श्रावण कृष्ण पक्ष (बदी) की दैनिक रुख :—

तिथि	वार	चाँदी	सोना	रुई
१	शु०	दिन को मंदा १।।) २) रात्रि तेज	पहिले मन्दा ।।।) तेज ।।)	मंदी २।।) ३) तेज ४) ५)
२	श०	आज योग तेजी के हैं २।।) ३)	तेजी खेलो १।।) १)	तेजी चलेगी ४) ३।।)
४	चं०	नजराने लगाओ।	घटबढ़ चलेगी।	तार की खबर पर व्यापार करो
५	मं०	बाजार तेज १।।) २)	तेजी पोते करो।	बंबई के सटोरियों ने खरीदी है
६	बु०	बढ़े तो बेचो २) २।।)	बाजार नरम होगा।	बाजार रुख दुतर्फा चलेगा।
७	गु०	मन्दी १।।) २) तेजी ।।।) १)	मंदी ।।) ।।।) तेजी १)	रुख मंदा है २।।) ३) ४)
८	शु०	बेचो और नफा खाओ	ध्यान मंदा है पोते करो	रात को कलसे दो दिनमें मंदी १०)१२)
९	श०	बाजार तेजी है ४ बजे से मंदा।	आज तेज १) १।।)	खरीद लो तेजी आगई है ५) ६)
११	चं०	तेजी १) १।।) मंदी २) २।।)	तेजी ३ बजे तक है।	तेजी का मुनाफा २ बजे खालो
१२	मं०	तेजी हो तो बेचो अच्छा लाभ	तेजी ।।) मन्दी १।)	दिन को तेजी बने तो ५ बजे बेचो डबल
१३	बु०	हमारा ध्यान उछाले से मंदा ३) २।।)	मंदा १) १।)	तेजी वाले लेओ २ मचा देगें।
१४	गु०	बेचो मंदा २) २।।)	मंदा ।।।) १)	उछाला देकर धम से गिर जावेगी।
३०	शु०	लाइन मंदी की चालू हो गई है	मंदी खेल ।।) ।।।)	लेकर बेचना नहीं मंदी ५) ६)

प्रथम श्रावण शुक्ल (सुदी) की दैनिक रुख :—

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१-२	श०	घटबढ़ होकर मंदी	नजराना खाओ	तेजी ३) ४) हो जावे तो बेचो।
४	चं०	तेजी १) १॥) मंदी २) २॥)	तेजी ॥) फिर मंदी १) १।)	बेचो मंदी ५) ६) होगी।
५	मं०	नजराना खाओ	ओछी घटा बढी	पहिले मंदी फिर तेजी
६	बु०	पहिले तेज फिर मंदा	समान	तेजी से मंदी चलेगी
७	गु०	रुख ओछी मंदी	समानता	ओछी घटा बढ़ी
८	शु०	मंदी २) २॥)	मंदा १) १।)	उछाले में बेचो मंदी ३) ४)
६	श०	उछाले में बेचो	बेचना ठीक है	रुख देख व्यापार करो
११	चं०	मंदा ॥।) तेज १॥) २)	मंदा ॥) तेज १) १।)	मंदी कम तेजी अधिक
१२	मं०	बाजार रुख तेजी ३) २॥)	तेजी में कमालो	आज तेजी चलेगी ७) ८)
१३	बु०	नजराने निकलेंगे	पहिले तेज फिर मंदा	तार टेलीफोन पर व्यापार करो
१४	गु०	रुख तेज १) १॥)	खरीदो तेज ॥।) फिर बेचो	उछाला ३) ४) फिर बेचो
१५	शु०	मंदी खेलो २॥) ३)	आज बाजार टूटेगा	बंबई वालों ने बेचा है ५) ६) मंदा
१५	श०	समान या मंदा	ओछी घटबढ़	नजराना लगे तो खालो।

प्रथम श्रावण में चांदी-सोना रुई की पोजीशन :—

रुई :—

बदी २ से एकादशी तक साधारण घटबढ़ तेजी का आसार जमाती रहेगी, लेकिन बदी १२ से सुदी ५ तक रुई ३०) ३५) टका बढ़ जायगी। इसके बाद फिर धीरे २ मंदी की तरफ झुक जागगी, घटे खरीदो, बढ़े तो बेचो। दो बार अच्छी तेजी--मंदी चलेगी लेकिन १२) १५) घटे या बढ़े सौदा पलट लेना ही लाभप्रद होगा।

चाँदी--सोना: —

इस मास में चांदी में अच्छी लोट फेर चलेगी बंद बाजार में सौदा सुलट घर आना जरूरी है। बदी १ को घटे भाव माल पोते करो, बंद तक। बदी ६ बुधवार को खुलते बाजार बेच देवें तेजी ४) ५) तीन दिन नजराने हजम करो। बदी ११ चंद्रवार से फिर मंदी चले, उसमें खरीदो और ३) ४) की तेजी होते ही नफा खा डालो, फिर मंदी २) ३) की या १॥) २) की हो फोरन पोते करो, सुदी ५ मङ्गलवार को सायङ्काल तक नफा कमालो।

सुदी ८ शुक्रवार को २ बजे खरीदो और १३ बुधवार तक ५) ६) तेज हो जायेंगे फिर १३ बुधवार को बेचो १५ शनिवार तक मंदी १॥) २)।

अलसी--सरसों-तिल-मूंगफली :—

श्रावण कृष्ण में ३ शुक्रवार मंदी का रुख लायेंगे लेकिन सुदी पक्ष में ३ शनिवार उपरोक्त वस्तुओं को तेज बना देंगे।

द्वितीय श्रावण कृष्ण (बदी) पक्ष :—

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	रवि०	तेजी रहेगी २) ३)	तेज १) १।)	तेज ३) ४)
२	चं०	उछाले में बेचो मंदी अच्छी	बेचो मंदी ।।।) १)	पहिले कुछ तेज फिर मंदा ५)६)
३	मं०	कलके बेचे का ३वजे नफा लो	सौदा सुलटो ४ बजे	मंदी से तेजी रात में होगी।
४	बु०	थोड़ी तेज ।।।) १) फिर मंदा	दुतर्फा कमाओ	तेजी मंदी अच्छी नहीं है।
५	गु०	उछाले में बेचो मंदा २।।) ३)	तेजी में बेचो	अच्छी मंदी २ दिन रहेगी १०)१५)
६	शु०	आज का रुख मंदा है ३) २।।)	मंदी खेलो १) १।।)	रुई में आज मंदी पोते करो ५ बजे
७	श०	खुलते खरीदो तेजी है १।।) २)	तेजी खेलो	फोन तेज आया है।
६	चं०	तेजी का नफा २ बजे डबल बेचो	कुछ तेज फिर मंदा	मंदी फैंको लाभ होगा
११	मं०	कलका नफा खा पोते करो १ बजे	मंदीमें खरीदो १।) २)	झुके पोता करना ठीक है ३) ४)
१२	बु०	खुलते बाजार बेचो	मंदी खेलो	अच्छी मंदी २ दिन रहेगी
१३	गु०	आज भी तेजी कम मंदी ज्यादः	दुतर्फा लगाओ	मंदी में रहो तेजी हो बेचो नफा लो
१४	शु०	पहिले खरीदो फिर ३ बजे बेचो	दुतर्फा खाओ	कल की मंदी सुलटो
१५	श०	अच्छी घटा बढ़ी २) २।।)	दुर्तफा खाओ	समानभाव रहेंगे बंद पर

द्वितीय श्रावण शुक्ल (सुदी) पक्ष :—

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
२	चं०	खरीदो तेजी १।।) २)	लेना अच्छा है	फोन तार टोन देखो तेजी है
३	मं०	पहिले मंदा ३ बजे से तेज	मंदा हो खरीदो	बाजार माफिक हो खरीदो
४	बु०	तेजी खेलो २) २।।)	तेजी चलेगी	तेजी का नफा खालो ४ बजे और बेचो
५	गु०	खुलते बेचो ५ बजे लेलो	मंदी १) १।।) फिर तेज	रुख मंदी का है सम्हल जाओ।
६	शु०	आज भी बेचो ३ बजे तक	मंदी का आना है ३ बजे तक	रुख देख व्यापार करो
७	श०	अच्छी घटाबढ़ी बन्द खरीदो	नजराना खाओ	मोटी तेजी मंदी निकले
६	चं०	तेजी २।।) ३) मंदी में खरीदो	तेजी लगाओ	तेजी ४) ५) होगी मंदा चले पकड़ो।
१०	मं०	घटबढ़ तेजी से मंदा	दुतर्फा चलेगा	मंदी का जोर रहेगा
११	बु०	नजराने खाओ	ओछी घटबढ़	बाजार रूख मन्दी
१२	गु०	रुख तेजी है ३ बजे से मंदा	तेजी से मन्दी	दुतर्फा चलेगा
१३	शु०	मन्दी में खरीदो तेजी है २) २।।)	तेजी खेलो १ बजे से	तेजी में बेचो आगे मंदा चलेगा
१४	श०	कल की तेजी आज ४ बजे खतम	पहिले तेज फिर मंदा	दुतर्फा कमालो फिर बेचो

द्वितीय श्रावण मास में चांदी, सोना; रुई की जनरल पोजीशन

रुई

वदी १ से वदी ७ तक अच्छी घटाबढ़ी चलते १०) १२) रुख तेजी पर ही रहेगा। वदी ६ से अमावस तक भाव अटकेंगे लेकिन दोबारा धमाके की मंदी गिरेगी जिसमें २०) २५) टूट जायेंगे। सुदी १ से ४ सुबह तक दुतर्फा चलेगी, पहिले तेजी ८) १०) फिर मन्दा १२) १५) होगा। सुदी ५ से १५ तक बाजार घटे भाव खरीदो और उछाला अच्छा आवे उसमें बेचो, इकतर्फा तेजी चलते रुई २०) २५) तेज हो जायगी, बीच २ में तीन मंदी के झटके लगेंगे, उनमें खरीदो यदि वदी में मन्दी आजावे तो निसन्देह सुदी में तेजी खूब चलेगी।

चांदी सोना की जनरल पोजीशन

वदी १ से ५ तक तेजी ४) ४।।) उसमें बेचो। वदी ५ से ६ तक दोबारा मन्दी ३) ३।।) की दैनिक दोबार गिरेगी। वदी १० से अमावस तक दुतर्फा नफा लेलो, सुदी १ से ६ तक ऊँचे में बेचो नीचे में खरीदो, घटा बढ़ी अच्छी निकलेगी। सुदी ७ से पूर्णिमा तक हमारा ध्यान तेज है। इस माह में चांदी ३०) ३५) की घटाबढ़ी में चलेगी, जिधर बाजार मुँह फेरले उधर ही मालदार बना देगा।

अलसी, सरसों, तिल, मूँगफली की पोजीशन

वदी १ से ७ तक घटाबढ़ी चलेगी १) से १।।) का असर पड़ता है। वदी ८ से १३ तक मंदा ।।) ।।।) मन का जंचता है, यदि यह मन्दी आजाय तो सुदी में २।।) २) मन की तेजी बिचार लेंगे।

भाद्रपद (कृष्ण) वदी पक्ष

ति०	वा०	चांदी	सोना	रुई
वदी १	चं०	खुले मन्दा चले ४ बजे से तेज	मन्दी चले खरीदो	आज से तेजी में रहो वंद नफा लो
" २	मं०	पहिले तेज १।।) फिर मन्दा	खरीदकर बेचो ४ बजे	खुलते ।।) १) तेज होवे बेचदो
३	बु०	रुख मन्दा है २) २।।)	आज मन्दी खेलो १) ।।)	तेजी चले तो पोते करो ३) ४)
४	गु०	दिन में मन्दा १) १।।) रात तेज	पहिले मन्दा फिर तेज ४ बजेसे	आजभी हमारा ख्याल तेज है
५	शु०	तेज चले १ बजेतक फिर मंदा	उछाले में बेचो मन्दा १)	नफा खरीदेपर खालो १२ बजे
६	श०	नजराने हजम होंगे	ओछी घटाबढ़ी चले	आज फिर तेज ४) ५)
८	चं०	मन्दी खेलो १ बजे पोते	मन्दी में खरीदो तेज ।।।) १)	बम्बई तेजी आयेगा
६	मं०	तेजी का नफा लेलो ३ बजे	मन्दी चलना है ३ दिन	पहिले तेज २) ३) फिर मन्दी ४) ५)
१०	बु०	डबल बेचो मन्दी २) ३)	मन्दा रहेगा २) २।।)	आज भी मन्दा है नफा लो बंद पर
११	गु०	मन्दी में रहो ५ बजे तक	आज मन्दी का नफा लो	खुलते पोते करो ४) ५) तेज
१२	शु०	दुतर्फा जोस मन्दा है	नजराने लगादो	उछाले में बेचो
१४	श०	कल मन्दातो आजभीमन्दा २)	मन्दी की गली लगादो	आज मन्दा ६) ८) दो दिन में।

भाद्रपद शुक्ला (सुदी) पक्ष

ति०	वा०	चांदी	सोना	रुई
१	चं०	अच्छी घटाबढ़ी	नजराने लगा दो	मन्दी हो खरीदो रुईमें आग लगेगी
२	मं०	पहिले मन्दा १) १॥) फिर तेज	मन्दी में खरीदो	तेजी चलेगी ४) ५)
३	बु०	खुलेतेज फिर २ बजेमन्दा २) २॥)	रुख तेज है १।) २)	बाजार नरम रहे तो खरीदो
४	गु०	मन्दी १२ बजे तक फिर तेज	खरीदो तेजी १) १॥)	तेजी खेलो दोदिन में ८) १०)
५	शु०	मन्दा चलेतो खरीदो २ बजेसे तेज	पहिले मन्दा फिर तेज	दोनों तरफ माल कमालो
६	श०	खुलते मन्दा १) १।) फिरतेज २) २॥)	दुतर्फा लगाओ	मन्दी में खरीदो तेज ३) ४)
८	चं०	मन्दा है १॥) २) टूटेंगे	मन्दी रहेगी १) १।)	मन्दी थोड़ी है तेजी ज्यादा है
९	मं०	तेजी खेलो ३) ३॥)	तेजी आगई है	दोदिनमें तेजी ५) ६) नफा लो
१०	बु०	उछाले में बेचो दोदिन में मन्दी	पहिले तेज १) फिर मन्दा	खुले बाजार बेचो २) ३)
११	गु०	पहिले तेज १॥) फिर मन्दा ३)	नजराना लगावो	नजराने दुतर्फा फलेंगे
११	शु०	चांदी बेचो २) ॥)	बेचो १) १॥)	मन्दी की लाईन पकड़ो
१२	श०	आजभी मन्दीहै ३ बजे खरीदो २-३)तेज	पहिले मन्दी फिर तेज	दोदिन में ५) ६)की मन्दी
१४	चं०	दुतर्फा लगादो	पहिले तेज फिर मन्दा	रुख मन्दा चलेगा
१५	मं०	तेज २) २॥) फिर रात मन्दा	दुतर्फा लगादो	रुख मन्दा फिर तेज

भाद्रपद मास में चांदी-सोना-रुई की-जनरल पोजीशन :—

रुई :—

इस मास में अच्छी घटा-बढ़ी चलेगी । बदी १ से ७ को प्रातःकाल तक तेजी में १५) २०) बदी ७ के १२ बजे से १० तक मंदी ५) ६) बदी ११ से १४ तक तेजी ८) १०) व १४ के ३ बजे से सुदी ३ तक मंदा फिर रात को ६ बजे से ७ बजे तक तेजी १२) १५) सुदी ८ से १३ तक तेजी फिर मंदा चलेगा ।

चांदी-सोना का पोजीशन :—

बदी १ से ५ तक उछाले की तेजी, बदी ६ से मंदी अधिक तेजी कम या उलट भी जाय । बदी १३ से सुदी ३ तक मंदी ६) ७) सुदी ४ से दशमी तक अच्छी तेजी चलेगी । दाणा १०) १२) सुदी ११ से १५ तक अच्छी घटाबढ़ी ५) ६)

अलसी—सरसों :—

इस मास में बदी १ से तेजी चलेगी बदी ८ तक, फिर बदी १२ से मंदी चालू १) १॥) मन पर । सुदी ३ से पूनम तक ३) ३॥) की तेजी रहेगी ।

———

आश्विन कृष्ण (वदी) पक्ष :—

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	बु०	कल की मंदी आज तक	रुख मंदा १)	फोन से मंदी ३) ४)
२	गु०	पहिले तेज ॥) १) फिर मंदा	तेजी से मंदा	पहिले मंदा १॥) २) फिर तेज
३	शु०	सुबह मंदी में खरीदो १) १॥)	दो बजे से तेज	दुतर्फा चाल है ५) ६)
४	श०	पहिले तेज ।॥) १) फिर बेचो	ऊँचे में बेचो	तेजी खेलो ४ बजे तक
६	चं०	दो बजे तक मंदा फिर तेज १॥)२)	मंदी में खरीदो	कल का बेचा नफा ले लो
८	मं०	आज तेजी है नफा लो ३ बजे	कल के माल का नफा	पहिले मंदा फिर कुछ तेज
९	बु०	मंदी खुले से बंद तेज १) १॥)	उछाले में बेचो १ बजे	तेजी चलेगी ३) ३॥)
१०	गु०	नजराना खाओ घट बढ़ है	पहिले तेज फिर मंदा	बेचो बंबई मंदी आई है
११	शु०	मंदा आवे खरीदो तेजी २)	मंदा ॥) तेज १।)	मंदा २) तेज ३) ३॥)
१२	श०	बंद बाजार तक तेजी	तेजी अच्छी	तेजी का नफा लो ५ बजे
१४	चं०	नजराना लगा दो	अच्छी घट बढ़	पहिले तेज फिर मंदा फिर तेज
३०	मं०	खुलते तेज १॥ बजे से मंदा	पहिले तेज फिर मंदा	उछाले में बेचो।

अश्विन शुक्ल (सुदी) पक्ष :—

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	बु०	तेजी ।॥) मंदी २) २॥)	तेजी ॥) मंदी १।)	उछाले में बेचो
२	गु०	मंदा २॥) ३)	मंदी में रहो ४ बजे तक	मंदा ५) ६) तेज १) १॥)
३	शु०	मंदा १) १।।) फिर तेज	मंदी में खरीदो	मंदा १॥) २) तेज २॥) ३)
४	श०	उठेगी ।॥) १)	उछाला है ॥) ॥=)	मंदा खुले खरीदो
६	चं०	झटका मंदी फिर तेज	गिरे तो खरीदो २ बजे	तेजी खेलो ४) ५) दो दिन में
७	मं०	लेकर बेचो कल मंदा	खरीदो और बेचो	दुतर्फा खेलो
८	बु०	मंदी का झटका है	मंदी खेलो ५ बजे तक	पहिले उछाले से मंदा
९	गु०	दुतर्फा चलेगा	मंदा खरीदो तेज हो बेचो	मामूली घट बढ़
१०	शु०	खरीदो तेज १॥) २)	बे फिक्र पोते करो	तेजी अच्छी है ५) ६)

अश्विन मास में चांदी-सोना-रुई की पोजीशन

चांदी

इस मास में चांदी बदी १ बुधवार से घट बढ़ लेते कृष्ण पक्ष में बढ़ेगी कम, गिरेगी अधिक। यहाँ तक की मंदी १०) १२) तेजी ४) ५) उछाले में बेचो चांदी तीन वार रुख पलटेगी, इसलिए ३) ४) घटते ही पोते करो १॥) २) बढ़ते ही बेचो, इसी प्रकार सुवर्ण में ८) ९) की मंदी व २॥) ३) की तेजी आ सकती है।

सुदी २ गुरुवार को रात्री में बंद बाजार या ३ शुक्रवार को खुले बाजार खरीदो चांदी ६) ७) सोना ४) ४।।।) बढ़ेगा लेकिन दो झटके खायगा ऐसे समय में घबराना नहीं, सुदी ७ तक होगी। सुदी ७ को रात्रि में फिर पोते का ध्यान जमा लीजियेगा।

अलसी–सरसों–मूंगफली :—

बदी १ बुधवार से ८ तक घटावढ़ी चलते रुख मंदा बदी ६ से १४ तक तेजी क०, कभी २ नजराने हजम। बदी १० को खरीदा माल सुदी १० तक १।।) २) की तेजी मन एक पर सँभालियेगा।

अचूक चांस

ता०	चांदी	सोना	रुई
११ जुलाई मन्दा	२) २।।)	१।।) २)	३) ४)
१५ जुलाई तेज	४) ३)	१) १।)	३) २)
३० जुलाई मन्दा	२।।) ३)	।।।) १)	३) ३।।)
१ अगस्त तेज	१।।) २)	।।) ।।।)	२) २।।)
३ अगस्त मन्दा	१) १।।)	।।।) ।।।=)	३) ४)
५ अगस्त तेज	१।।) २)	१) ।।।)	३) ३।।) मन्दा
६ अगस्त से १२ तक मंदी	४) ५)	२) २।।)	८) १०)
१६ अगस्त मंदा	२) १।।)	।।।) १)	२) ३)
२४ अगस्त मंदा	३) ३।।)	१) १।।)	४) ५)
१–२ सितम्बर तेजी	२) २।। ते०	।।) १) ते०	३) ३।।) ते०

ता० ८ से १२ तक योग अच्छी मंदी के हैं। यदि बाजार आपके फेवर में आजाय तो समझो अवश्य लाभ होगा। चांदी ५) ६) सोना ३) ३।।) रुई १५) २०) मंदा रहे।

ता०				चांदी	सोना	रुई
ता०	१५ से १७	सितम्बर	मंदा	४) ४।।)	२) २।)	५) ६)
"	२२	"	"	२) २।।)	१) ।।।)	२) ३) तेज
"	२३	"	तेज	१) २)	१) १।)	३) ३।।)
"	२४ से २७	"	मंदा	४) ५)	।।।) १।।)	४) ५) तेज
"	१	अक्टूबर	"	१) १।)	।।) ।।।)	२) २।।)
"	७	"	तेज	२) २।।)	१।।) १)	३) २।।)
"	६ १०	"	मंदा	१।।) २)	१) ।।।)	३) ४) तेज
"	१७ १८	"	तेज	३) ३।।)	२) १।।)	३) ३।।)
"	२२	"	मंदा	१।।) २)	।।) १)	४) ३।।)
"	२४ २५	"	"	३) २।।)	१।।) २)	६) ७)
"	२७ से ३०	"	तेज	४) ३।।)	२) २।।)	४) ४।।)

युति वेध और योगायोग

ता० ३ जुलाई से सूर्य बुध शुक्र युति तेजी करता है। दिन १३ तक।

ता० ८ जुलाई से आर्द्रा पर सूर्य हस्त पर नैपचुन वेध अच्छी तेजी पहिले ४) ५) मंदी बाद ६) ७) तेजी दिन १० तक।

ता० १५ जुलाई से सम्मुख वेध शनि केतु तेजी।

ता० १६ जुलाई शनि अस्त मन्दी ४) ५)

ता० ३ अगस्त शनि सूर्य चरणयुति मन्दा १३ दिन।

ता० ३ अगस्त आश्लेषा का सूर्य केतु वेध मोटी मन्दी।

ता० १० अगस्त से शुक्र केतु वेध मन्दा ३) ४)

ता० १३ अगस्त मङ्गल नैपच्यून वेध तेजी ४) ५)

ता० १४ से १६ पंचग्रह योग मन्दी कारक ३) ३।।)

ता० १६ से बुध केतु वेध ७ दिन घटाबढ़ी।

ता० १७ अगस्त से सूर्य शुक्र वेध तेजी करता है, दिन ४ तक। उसी रोज सूर्य ने बुध को बाण मारा है तेजी खेलो ४) ४।।) उसी रोज सूर्य शनि के परस्पर बाण चल रहे हैं, १२ दिन तक अच्छी घटबढ़ चलेगी।

ता० २० अगस्त से शनि शुक्र का बाण-युद्ध ११ दिन चलेगा मन्दी करता है।

ता० २४ अगस्त से बुध शनि का बाण वेध तेजी करेगा।

ता० २६ अगस्त से गुरु केतु युति, बड़ी खतरनाक है, मोटी तेजी मन्दी चलेगी।

ता० ५ सितम्बर सूर्य, शुक्र का त्रिकोण हटा। मङ्गल बुध का वेध अच्छी मन्दी तेजी।

ता० १२ सितम्बर मङ्गल शुक्र वेध तेजी करता है।

ता० १३ सितम्बर शुक्र बुध युति मन्दी करता है।

ता० १४ सितम्बर सूर्य मङ्गल वेध पहिले तेजी फिर मन्दी।

ता० २३ सितम्बर बुध हर्षल वेध तेजी ४) ५) चांदी में।

ता० २५ सितम्बर को बेचो २७ को खरीदो मन्दा ३) ३।।) चांदी।

ता० ३ अक्टूबर शुक्र हर्शल वेय तेजी करता है।

ता० ८ अक्टूबर बुध, शुक्र युति मन्दी करेगा।

ता० १० अक्टूबर सूर्य हर्शल वेध मन्दी से तेजी।

ता० १२ अक्टूबर बुध राहु वेध मन्दा।

ता० १८ अक्टूबर मंगल गुरु वेध पहिले तेज फिर मन्दा।

ता० २० अक्टूबर सूर्य, बुध, शुक्र, त्रिकोण योग तेजी करता है।

ता० २४ अक्टूबर शुक्र राहु वेध मन्दी चलाने वाला है।

चांदी रुई आदि की अनुभूत रिपोर्टें

[ले०—ज्यो० भू० श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्मा दैवज्ञ]

यह रिपोर्ट आषाढ़शुक्ला १० शनिवार सं. २००४ ता० २८ जून से ता० २३ अक्टूबर सन् १९४७ तक की है। ये चार मास व्यापारिक जगत् में क्रान्तिकारक सिद्ध होंगे। इनमें प्रारब्धवान् व्यापारी मालामाल बन जावेंगे।

(१) प्रथम सप्ताह—

ता० २८ जून से ५ जुलाई तक घट बढ़ से नहीं घबराना, घटे भाव खरीदते जाना चाहिये। ता० २८ जून को ६ - १० बजे तक एक बार मन्दा होगा। वहां खरीद कर ता० २ जुलाई तक ५) ७) की तेजी में बेच दें।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० ६ जुलाई से १३ जुलाई तक पहले २-३ दिन तेजी के रहकर फिर बाजार उतना ही मन्दा होगा। ता० ६-७ तेजी। ता० ८-९ में एक अवश्य जोरदार मन्दी, ध्यान रखिये ता० ११ को मन्दा होके फिर रात्रि को तेजी होगी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० १४ जुलाई से २१ जुलाई तक घट बढ़ का सामना करना पड़ेगा। ता० १४-१५ में एक तेजी एक मन्दी अवश्य होगी, पहले दिन देख के दूसरे दिन काम करो। ता० १६ को तेजी होते ही निर्भय होकर बेच दो। आगे ३ दिनों में मन्दी का पूरा योग बनता है। ता० १९-२० विशेष घटना के दिन हैं, दुतरफा लगाना।

(४) चौथा सप्ताह—

ता० २२ जुलाई से २८ जुलाई तक घट बढ़ तो होगी, परन्तु घटने पर लेना, बढ़ने पर बेचना नहीं। ता० २७-२८ में एक विशेष मन्दी का झोंका होगा।

(५) पांचवां सप्ताह—

ता० २९ जुलाई से ४ अगस्त तक पहले दो २ दिन तक घट बढ़ होगी ता० २९-३० में एक तेजी और एक मन्दी होगी। ता० २९ को १ बजे से बजार तेज हो या मन्दा, बड़ा झोंका आवेगा। हमारा ध्यान तेजी में है। ता० १-२ अगस्त में एक मन्दी, एक तेजी अवश्य होगी। यह दिन दुतरफा लगाने का है। ता० ३१ को सायंकाल में मन्दी रहे तो ३ दिन मन्दी, अगर तेजी रहे तो ३ दिन तेजी रहेगी, लेकिन यहां पर घटबढ़ भी विशेष होगी। ता० १ तेज तो २ मन्दी, ता० १ मन्दी तो ता० २ को तेजी रहेगी। ता० ३ और ४ को रुई चांदी तेज रहेगी। और यहां पर वर्षा भी तूफानी होती रहेगी; पाट मन्दा हो।

(६) छठा सप्ताह—

ता० ५ से १० अगस्त तक इनमें ५ दिन मन्दी के हैं। बढ़े भाव बेचते रहो यदि दाव लेने वाला कवाड़ी हो तो ता० ५ और ८।९ को मन्दी खेल जाना। जन्म-पत्र दिखा के कार्य करना हमारे लिखे पर नहीं

रहना, क्योंकि संसार में तकदीर और तदवीर दोनों से कार्य सफल होते हैं।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० ११ अगस्त से १६ तक या २१ अगस्त तक तेजी का बोलबाला रहेगा। मन्दी के पीछे हरेक दिन तेजी का कार्य करने का है। ता० ११-१२-१६-१७ १८-२१ यह विशेष तेजी के दिन हैं। जनरल लाइन १० दिन में घटे भाव लेते जाना।

(८) आठवां सप्ताह—

ता० २२ से ३१ अगस्त तक घटा बढ़ी चलेगी। पहले ता० २२ से २६ तक मन्दी, ता० २७-२८ से तेजी, मन्दी में घट बढ़ जरूर होगी एक तरफा नहीं है। ता० २८-२९ से तेजी का दौरा ३-४ दिन तक रहेगा। इन्हीं दिनों में उत्पातों का भी जोर रहेगा तिल तैलादि मन्दे होंगे, वर्षा का वेग रहेगा।

(९-१०) नौवां दशवां सप्ताह—

इन दोनों सप्ताहों का इकट्ठा जनरल व्यापार मन्दी का है। इनमें कोई खास विशेषता नहीं है। ता० १३-१४ सितम्बर को तेजी होगी, पहले ता० ४ ५-९-१० विशेष मन्दी का ध्यान है, इन १४ दिनों में एक बार वर्षा से भी पृथ्वी परिपूर्ण होगी।

(११) ग्यारहवां सप्ताह—

ता० १५ सितम्बर से २४ तक घट बढ़ से तेजी होगी। ता० २२-२३ सितम्बर तक जरुर तेजी जँचती है।

सरसों

ता० २४ अगस्त तक जनरल ध्यान तेजी का है। ता० २४ अगस्त से ७-८ दिन के भीतर मन्दी का धड़ाका होगा।

त्रैमासिक व्यापार विमर्श

रुई, सोना, चांदी, शेयर आदि की अर्ध साप्ताहिक तेजी मन्दी विचार

[ले०—श्री० पं० विहारीलालजी शर्मा दैवज्ञभूषण]

ता. २९ जून १९४७ रविवार प्रातःसे ३।। दिनमें

अचानक तेजी आवेगी, इन दिनों में रुई में १०)–१५) की तेती होगी, अतः समझदारी से चान्स का फायदा लें। इस समय पोते करने में मत चूको।

ता० २ जुलाई बुधवार से ३।। दिन में—

इन दिनों व्यापारियों को खरीदने के अनुकूल भाव मिलेंगे, कारण यह है कि तेजड़िये खरीद में पड़ जायेंगे। यहां मन्दी के भाव आवेंगे तभी खरीद लेनी चाहिये।

ता० ५ जुलाई शनिवारकी अर्धरात्रिसे ३।। दिनमें

व्यापार में भारी रद्दोबदल हो, डिफर्ड शेअर में ५०)–७५) रुई में १०)–२०) सोने चांदी में ३)-५) मूंगफली, अलसी तथा एरण्ड में २) ३) रुपये की कालीमिर्च में २०) २५) की मंदी आने की धारणा की जाती है। यहां बेधड़क वस्तुओं को बेचो अथवा मन्दी लगाओ। इस मन्दी के चान्स से सावधानी से फायदा लें।

ता० ९ जुलाई बुधवार प्रातः से ३।। दिनमें—

जो सौदागर पहिले चांस में बेचने से रह गया हो वह इस चान्स में थोड़ा सा बेचान करके शीघ्र ही सौदा बदल लें।

ता० १२ जुलाई शनिवार से ३।। दिनमें—

यह टेकनीकल (अस्थाई) चांस हैं। इसमें खरीदकर शीघ्र ही लाभ ले लेना चाहिये। अगर इस चांस में जरा भी असावधानी की तो पहिले नुकसान ही सहना पड़ेगा। सम्भव है पीछे लाभ हो।

ता० १५ जुलाई मङ्गलवार अर्धरात्रिसे ३।।दिनमें

इस चांस में ४) ५) रु० की मन्दी आने का योग है। इसलिये रुई, चांदी, सोना आदि वस्तुओं में अनुभव से मन्दी लगाकर फायदा लें, चांदी रुई इत्यादि को बेचकर ही लाभ लें। मन्दी का सुन्दर चान्स है।

ता० १९ जुलाई शनिवार के प्रातःसे ३।।दिन में

इस चांस में मन्दी का योग है, तेजी आते ही खरीदो फिर बेचकर मन्दी का लाभ लो। साथे बेचकर के भी लाभ लें, लाभ का समय हाथ से न जाने दो।

ता० २२ जुलाई मङ्गलवार के मध्याह्न से ३।। दिन में

इस समय में मन्दी में तेजी आने के चिह्न मालूम पड़ेंगे। अथवा मन्दी लगावें तभी फायदा हो सकता है।

२५ जुलाई शुक्रवार की रात्रि से ३।। दिन में—

इन दिनों में रुई ५) ६), शेयर में २०) ३०) चांदी में २) ३) एरण्ड, मूंगफली, अलसी आदि चीजों में भी तेजी के उछाले आवेंगे। यहाँ कई दिनों बाद तेजी का चान्स आया है, इस चांस में बेची का सौदा नहीं करना, पहली मन्दी में खरीदकर इस चांस में लाभ लें।

ता० २६ जुलाई मङ्गलवार प्रातः से ३॥ दिन में—

इन दिनों में घटबढ़ रुई में ४) ५) रु० की होगी। ये चांस घटबढ़ के हैं। सब वस्तुओं में रुपये का अनुमान अनुभव से लगाकर सटोरिये लेव बेच करें तभी फायदा हो सकता है। हमारा विचार तो तेजी का है इसलिए खरीद ही से लाभ होगा।

ता० १ अगस्त शुक्रवार से ३॥ दिन में—

यह चांस तेजी का है, डिफर्ड शेअर में २०) ३०) रु० बढ़े। कालीमिर्च १०) १५) की वृद्धि हो। सोने में १) २) की तेजी आये। चांदी में ३) ४) की तेजी का चान्स है। मूंगफली, अलसी आदि में १) २) रु० का उछाला आवे। तेजी से पहिले खरीदने वाले लाभ ले सकेंगे।

ता० ४ अगस्त सोमवार की रात से ३॥ दिन में—

इस चांस में प्रायः घटबढ़ होती रहेगी। सम्भावना तेजी की ही अधिक मालूम पड़ती है इस समय में तेजी लगावें या खरीदें तभी लाभ हो सकता है।

ता० ८ अगस्त शुक्रवार से ३॥ दिन में—

इस चांस में कोई भी विशेष योग नहीं है, बाजार की स्थिति डावांडोल रहेगी। इसलिये नजराना खाओ। अगर बाजार विरुद्ध मालूम पड़े तब अपनी सुविधा के अनुसार लाभ करें।

ता० ११ अगस्त सोमवार से ३॥ दिन में—

इस चांस में तेजी आते ही बेचो और मन्दी आते ही खरीदो माल पोते समझदारी से करना।

ता० १४ अगस्त गुरुवार रात्रि से ३॥ दिन में—

यह टेकनीकल चान्स अच्छी तेजी का आया है। इस चांस में तेजी आते ही बेच दो और मन्दी में खरीद कर तेजी में बेचो। बुद्धिमान व्यापारी इस चान्स में अपना फायदा कर सकता है।

ता० १७ अगस्त रविवार प्रातः से ३॥ दिन में—

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह चांस तेजी का मालूम पड़ता है। इस चांस में श्रद्धा रखकर माल खरीद करने से लाभ होगा। या तेजी लगाने से भी फायदा होगा।

ता० २० अगस्त बुधवार से ३॥ दिन में—

इस चांस में तेजी ही मालूम पड़ती है। परन्तु सौदा समय देखकर करने से ही लाभप्रद होगा।

ता० २३ अगस्त शनिवार रात्रि से ३॥ दिन में—

ऊपर के चांसों में बार बार तेजी की चर्चा की है। लेकिन ये चांस अवश्य ही मन्दी का है। यहां मन्दी लगाओ और बेचो तभी फायदा होगा। माथे बेचकर भी लाभ होगा।

ता० २७ अगस्त बुधवार प्रातः से ३॥ दिन में—

यह सौदागरों का खरीदने का चांस है और सटोरियों का बेचने का समय है। जैसा २ बाजार का रुख चले वैसे २ व्यापार करने से इस चान्स में फायदा होगा।

ता० ३० अगस्त शनिवार से ३॥ दिन में—

इस चांस में कोई विशेष योग नहीं है। हरेक वस्तु में मामूली घटबढ़ होगी, भाव मन्दी के ही मालूम पड़ते हैं। समझदारी से लेव बेच करके फायदा लें।

ता० २ सितम्बर मंगलवार रात्रि से ३॥ दिन में—

यह समय व्यापार में बहुत उथल-पुथल मचाने वाला सिद्ध होगा। व्यापार-मण्डल में कोई खास परिवर्तन होगा। तथापि खरीद करके ही लाभ प्राप्त हो सकता है।

ता० ५ सितम्बर शुक्रवार प्रातः से ३॥ दिन में—

मन्दी के आने का संयोग है, लेकिन ग्रहों का वेध तेजी लाने के फेर में है। इसलिये मामूली घटबढ़ होगी। अतः समझदारी से सौदा सुधार कर फायदा लेने में विलम्ब नहीं करना।

ता० ८ सितम्बर सोमवार से ३॥ दिन में—

हरेक उछाले में बेचो मन्दी आते ही खरीदो। इस रिएक्शन में सौदा सुधारते हुए कार्य करो। यह चांस मन्दी का ही है।

ता० ११ सितम्बर गुरुवार रात्रि से ३॥ दिन में—

स्टील शेयर (डिफर्ड) में २०) ३०), रुई में— १०) १५), सोने चांदी में ३) ४) रु० अलसी, एरण्ड, मूंगफली में १) २) का हेर फेर हो। रुख तेजी का ही रहेगा। मन्दी में खरीदना चाहिये और तेजी के उछाले में बेचना।

ता० १५ सितम्बर सोमवार प्रातः से ३॥ दिन में—

यह चांस डांवांडोल-स्थिति में ही बीतेगा। समय के अनुसार काम करना चाहिये, रुई बेचना, तथा सोना-चांदी खरीदना ठीक है।

ता० १८ सितम्बर गुरुवार से ३॥ दिन में—

यह चांस तेजी की चाल से समाप्त होगा। इसलिये सावधानी से सौदा सुधार कर लाभ लें। रुई में कुछ मन्दी की सम्भावना है।

ता० २१ सितम्बर रविवार की रात्रि से ३। दिन में—

यह चांस चांदी, सोना, अलसी, एरण्डा, मूंगफली इत्यादि में तेजी लाने वाला सिद्ध होगा। इसलिये खरीद का सौदा करें।

ता० २५ सितम्बर गुरुवार के प्रातः से ३॥ दिन में—

इस चान्स में बेची का सौदा करें। उछाला आते ही बेचकर मन्दी का लाभ लें।

ता० २८ सितम्बर रविवार मध्याह्न से ३॥ दिनमें—

इस चांस में बेची का सौदा करो या मन्दी लगा कर फायदा लो दो तीन दिन में तेजी आवेगी।

ता० १ अक्टूबर बुधवार रात्रि से ३॥ दिन में—

हरएक वस्तु घटबढ़ के साथ चलेगी, प्रथम रुई खरीदो। समय देखकर ध्यानपूर्वक कार्य करने की सलाह है।

ता० ४ अक्टूबर शनिवार प्रातः से ३॥ दिन में—

डिफर्ड शेअर में ३०) ४०) रुई में १०) १२) की सोने चांदी में २) ३) कालीमिर्च २०) २५) घटेंगे। इसलिए सावधानी से व्यापार करें।

ता० ८ अक्टूबर बुधवार से ३॥ दिन में—

यह चांस विशेष क्रांतिकारी नहीं है। तथापि रुख तेजी का होगा, सावधानी से सौदा सुधारकर कार्य करें।

ता० ११ अक्टूबर शनिवार रात्रि से ३॥ दिन में—

इस चांस में उछाला आते ही बेचो, नफा सुधार कर खेलते जाओ। सोना चांदी की मन्दी लगाओ। या बेचो। इस चांस को सौदागर हाथ से नहीं जाने देंगे।

ता० १५ अक्टूबर बुधवार प्रातः से ३॥ दिन में—

रुई कालीमिर्च १५) डिफर्ड शेअर में ४०) ५०) की तथा सोना चांदी में २) ३) की, अलसी, एरण्डा, मूँगफली में १) २) रुपये की घटबढ़ होगी। हरएक वस्तु का नजराना लगाना तभी लाभ होगा।

ता० १८ अक्टूबर शनिवार से ३॥ दिन में—

इस चांस में मन्दी में खरीद तेजी में बेचकर मन्दी का लाभ लें। सभी चीजों में साधारण उलट फेर होगा। समय देखकर काम करो, और शीघ्र ही सुलट जाने से फायदा ही होता है।

ता० २१ अक्टूबर मङ्गलवार रात्रि से ३॥ दिन में—

इस चांस में नजराना लगाना, गली लगाकर भी फायदा लेना, उछाले में बेचकर फायदा जरूर ही लेना, हिम्मत वाला व्यापारी ही इस चांस में माल खरीद कर लाभ ले सकेगा।



व्यापारिक तेजी मंदी और ज्योतिष

गुड़ शक्कर ग्वार सरसों अलसी जूट पाट सोना चांदी आदि की तेजी मन्दी

[ले०—श्री पं० विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य]

व्यापारिक विचारांश—आषाढ़ शुक्ला ११ रविवार सम्वत् २००४ से भाद्रपद शुक्ला ११ तक व्यापारिक वस्तुओं में आशातीत परिवर्तन हो जाने पूर्ण संभव हैं। मारवाड़, पञ्जाब, मेवाड़ में वर्षा की कमी से धान्य, रुई, अलसी, लाख, चपड़ा तेज हो जायेंगे। प्रथम श्रावण कृष्ण पक्ष में १३ बुधवार को कर्क की संक्रान्ति १५ मुहूर्ती है, यह भी धान्य-भाव तेज करती है।

प्रथम श्रावण मास का सारांश—

इस मास में व्यापारिक वस्तुओं में निम्न लिखित विचार भिन्न २ वस्तुओं में बनते हैं—

रुई के भावों में यद्यपि बहुत तेजी का योग नहीं है, तो भी रुख बाजार का तेजी की ओर जावेगा। अभी बाजार भाव तैयार में तथा वायदे में स्टाक करना अच्छा है। आगे भादों तथा आश्विन में अच्छी तेजी आने के रुई में योग पाये जाते हैं। इसलिये बाजार में इस मास में रुई के खरीदने के मौके काफी मिलेंगे। रुई जरीला तथा देशी दोनों ही में आगे काफी तेजी होगी, बाजार भाव में माल खरीदना जंचता है। बम्बई सितम्बर वायदा ४६०) बिक जावेगा।

सरसों, अलसी, एरण्डा, सींगदाना—

अभी इन चारों चीजों में बाजार बराबर मजबूत चलेगा। मन्दी कम है। सरसों के मार्केट में मंदी में रहना नुकशान दायक होगा।

चांदी सोना और धातुओं के भाव

इस आगामी जुलाई मास में चांदी सोने के मार्केट में ८) १०) की मन्दी का योग एक तरफा लाईन का है। सोने चांदी में तेजी जुलाई के प्रथम सप्ताह तक है, दूसरे सप्ताह में ६ से १७ ता० तक ८) १०) की मन्दी का योग बन कर १७ ता० से २७ ता० तक ५) ६) की तेजी आ जानी पूर्ण सम्भव है। सोने में ५) की चांदी में ८) की मन्दी आकर आगे सोने में ३) रुपये की चांदी में ५) की तेजी आ जानी उपरोक्त समय के भेद से अवश्यम्भावी है। आगे चलकर द्वितीय श्रावण में सोने चांदी में मन्दी का भी काफी अच्छा योग है। विशेष जानकारी के लिए २५) रु० भेजकर हमारी ज्योतिर्विज्ञान मासिक रिपोर्ट श्रीस्वाध्याय—सदन सोलन (शिमला) से मंगाइये। सोना ऊँचे में १२०), नीचे में १०७), १०८) चांदी ऊँचे में १६०) नीचे में १६०) होगी।

नोट—ता० ६ जुलाई तक बाजार में तेजी की स्थिति अपने रियेक्शन के साथ स्थायी रह सकती है।

खांड, गुड़, शक्कर—

खांड, गुड़, शक्कर के भाव काफी तेज हो रहे हैं और अभी प्रथम श्रावण शुक्ला १५ पूर्णिमा तक तेजी

रहेगी। इस तेजी में पहिला किया हुआ गुड, शक्कर का स्टाक बेचने की राय है।

धान, गेहूं, जौ, चना—

यद्यपि अन्न के भावों के सम्बन्ध में इस वर्ष कोई खास मन्दी नहीं है, तो भी दूसरे श्रावण में साधारण मन्दी का योग है। प्रथम श्रावण में १५ मुहूर्ती संक्रान्ति तथा अन्य ग्रहचाल के सामयिक योगों द्वारा तेजी की स्थिति रहेगी। बाकी दूसरे श्रावण में तथा भादोंमें अन्न के भावों में मन्दी की चाल रहेगी।

ग्वार, जौ, बाजरा—

प्रथम श्रावण में तेजी दूसरे में मन्दा।

पाट बारदाना—

जुलाई मास की ४ ता० तक पाट तथा बारदाना में तेजी के योग चलकर बाद मन्दी के योग प्रारम्भ हो जावेंगे। ता० ४ से १६ जुलाई तक घटाबढ़ी के साथ लाइन मन्दी है। ता० १६ से २१ जुलाई तक तेजी। २१ से २४ तक मन्दा। २४ से ३१ जुलाई तक तेजी। बारदाना ऊंचे में ९३) नीचे में ८५) नीचे में खरीदो ऊँचे में बेचो। पाट ऊंचे में १४५) नीचे में १३३) नीचे में खरीदो ऊंचे में बेचो।

नोट—दूसरे श्रावण मास में बारदाना, जूट पाट, सोना, चांदी में भारी उलटफेर होगा। घटाबढ़ी के साथ बाजार मंदी पर होगा।

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार-चक्र

भारतीय समस्याएँ ज्योतिर्विज्ञान की कसौटी पर

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

इस स्तम्भ में ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर पाठकों की निरन्तर सेवा की जा रही है। इस कार्य में हम कहां तक सफल हुए हैं, इसका प्रमाण वे सहस्रों पाठक हैं जो सर्व-प्रथम इसी लेख को पढ़ने के लिए उत्कण्ठित रहते हैं। वैसे तो गताङ्क (वसन्ताङ्क) और अपने 'श्रीविश्व-विजय-पञ्चाङ्ग" में वर्तमान सं० २००४ का राजनैतिक सामाजिक व्यापारिक एवं वायु वर्षा सुभिक्ष दुर्भिक्ष युद्ध रोग आदि की प्रत्येक गतिविधि का सविस्तर भविष्य हम बहुत पहले ही लिख चुके थे। उसमें उल्लिखित अनेक घटनाएँ अब हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष सम्मुख होती जा रही हैं, अतः अब कुछ विशेष लिखने की आवश्यकता तो नहीं रहती। तथापि गत तीन मास की अवधि में जो कोई मुख्य राजनैतिक घटना घटित हो जाती है, उसके तात्कालिक लग्न से ग्रहस्थिति वशात् जो भी शुभाशुभ परिणाम ज्योतिषशास्त्र रूप दिव्य चक्षु से दिखाई देता है उससे पाठकों को अवगत कर देना हम आवश्यक समझते हैं।

गत तीन मास में भारत की राजधानी दिल्ली नगर में कई महत्त्वपूर्ण घटनाएं हुई हैं। इनमें से जिन प्रमुख दो घटनाओं पर हमने विचार किया है उनमें प्रथम तो है ता० २४ मार्च को प्रातः १०। बजे वृषभ लग्न में नये वायसराय महोदय द्वारा पदग्रहण की शपथ और दूसरी है ता० २ जून को प्रातः दश-बजे वायसराय भवन में नेताओं का महत्त्वपूर्ण सम्मेलन, तथा उसी समय भारतीय नेताओं द्वारा भारत-विभाजन योजना पर स्वीकृति की मोहर। इन दोनों राजनैतिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तात्कालिक ग्रहस्थिति पर हम यहाँ शास्त्रीय विवेचन उपस्थित करेंगे।

पदारूढ़ लग्न

वायसराय के पदारूढ़ लग्न का विचार हम गत-'वसन्ताङ्क' में ही देना चाहते थे, परन्तु प्रेस सम्बन्धी बाधाओं के कारण प्रकाशित न हो सका। उसी समय हमारे सम्मान्य सहयोगी सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यदेवजी विद्यालङ्कार के विशेष आग्रह से वह लेख १३ अप्रैल के 'नवभारत' में हमने प्रकाशित करवा दिया था। वहाँसे 'नवयुग' 'वेङ्कटेश्वर-समाचार' 'स्वराज्य' 'हिन्दू' आदि अन्य कई पत्रों ने भी उस लेख को अविकल रूप में उद्धृत किया, यह पाठकों को विदित ही होगा। अब यहाँ वह कुण्डली और पूरा लेख देने की आवश्यकता नहीं, परन्तु उसमें से दो संदर्भ के कुछ शब्द यहाँ ज्यों के त्यों उद्धृत किये देते हैं —

"ज्येष्ठ मास में जब मङ्गल मेष राशि में जायगा तब से आपके (वायसराय के) सामने भारतीय समस्या विषम रूप में उपस्थित होने लगेगी। और आगे उत्तरोत्तर स्थिति भयावह होने की सम्भावना

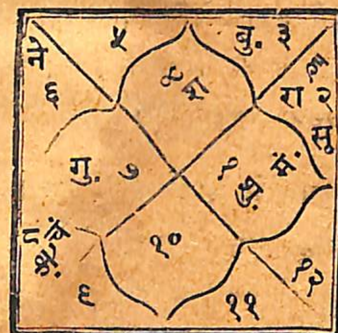
है।..........यद्यपि शुक्र के कारण नये वायसराय महोदय भारत से पूर्ण सहानुभूति रखते हुए उन्नति की कामना करेंगे, तथापि आर्य प्रकृति प्रधान ज्ञान-सुख के अधिष्ठाता देव गुरु के लग्न से छठे (शत्रु) भाव में और सूर्य चन्द्रमा से अष्टम चले जाने के कारण हम नहीं कह सकते कि भारतीय आर्यजनता को सन्तुष्ट करने में आप पूर्ण रूपेण सफल हो सकेंगे। इसके विपरीत अनार्य प्रकृति प्रधान दुःख का अधिष्ठाता शनि लग्न से पराक्रम में और चन्द्र सूर्य से पञ्चम गया है, अतः इस ग्रह का प्रभाव आपके मन और आत्मा पर विशेष रूप से होने के कारण मुस्लिमलीग और पाकिस्तान की समस्या प्रमुख रूप से विचारणीय विषय बनेंगे। इस समस्या को सुलझाने में पर्याप्त समय और शक्ति का व्यय होगा।.......... कांग्रेस और लीग में स्थायी समझौता न हो सकेगा। ....भारत को कई खंडों में विभक्त करने और देशी राज्यों एवं प्रान्तों को अलग २ सत्ता सौंपने के षड्यन्त्र चलेंगे।..........” इत्यादि।

अब यह बताने की आवश्यकता नहीं कि ज्येष्ठ मास में ही भारतीय विषम-समस्या के लिए श्री वायसराय महोदय को लण्डन जाना पड़ा और वहां से कूटनीतिज्ञ शनि के प्रभाव से जो योजना लेकर आये हैं, उस घोषणा से भारतीय आर्य जनता कहाँ तक सन्तुष्ट हुई है? वहां उसी लेख में यह भी स्पष्ट लिखा गया था कि “ज्येष्ठ में मंगल शनि की परस्पर नीच राशि में स्थिति और जुलाई में अग्नि तत्त्वात्मक कृत्तिका नक्षत्र और मेष राशि में मंगल राहुयोग के कारण वहां से (ज्येष्ठमास से) पुनः भयङ्कर रक्तपात, विस्फोट, भयानक गरमी, अग्नि-काण्ड, आंधी, तूफान, रोग, अपमृत्यु, दुर्भिक्षादि उत्पातों का उपक्रम आरम्भ होगा।.......कांग्रेस में भी दल बन्दियां हो जाना सम्भव है। उग्रदल प्रबल होगा। आदर्शवाद और अनुशासन की भावना न्यून होगी। कई प्रकार की नई २ योजनाएँ बनेंगी। नेतागण राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाते हुए अपने आप को कई प्रकार की नैतिक उलझनों में फँसा हुआ पायेंगे।.... ....इत्यादि।

पाठकों को यह भली-भांति स्मरण ही है कि ज्येष्ठ के आरम्भ में मंगल के मेष राशि में शनि से परस्पर नीच राशि सम्बन्ध एवं दृष्टियोग करते ही पञ्जाब के लाहौर अमृतसर नगरों में साम्प्रदायिक अशान्ति की आग पुनः भयङ्कर रूप में भड़क उठी और इसी अवधि में गुड़गाँवा प्रान्त का भयङ्कर हत्याकाण्ड, अग्निकाण्ड एवं भीषण जन-धन-हानि भी आरम्भ हुई जो अभी तक चल रही है। यत्र-तत्र भयंकर गरमी, अग्निकांड, आंधी, अवर्षण और आसाम एवं गढ़वाल प्रान्त की भयङ्कर बाढ़ों का दृश्य पाठकों के सम्मुख ही है।

विभाजन योजना

ता० २ जून को प्रातः दश बजे नयी दिल्ली के वायसराय-भवन में नेतृसम्मेलन ने जिस अवाञ्छनीय विभाजन-योजना को स्वीकार किया उस समय की लग्न-कुण्डली निम्न है--



इस कुण्डली की ग्रहस्थिति पर सम्यक् विचार करने से यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि जो राष्ट्रिय नेता विभाजन का सदा तीव्र विरोध करते

रहे, अखण्ड-भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता ही जिनका एक मात्र लक्ष्य रहा, तथा श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू ने तो एक बार यहाँ तक कह दिया था कि--"हम भारत के टुकड़े करना कभी सहन नहीं करेंगे। यदि लीग के पाकिस्तान बनाने में बृटिश अधिकारियों ने साथ दिया तो हम पद-त्याग कर देंगे।" इन्हीं नेताओं द्वारा २ जून को पाकिस्तान के रूप में भारतमाता के अङ्गच्छेद की स्वीकृति को सुनकर किस सहृदय-आर्य पुरुष का खून न खौला होगा।

नेताओं की इस परिवर्तित मनोवृत्ति पर हम तो तात्कालिक ग्रहस्थिति का ही पूर्ण प्रभाव देख रहे हैं। श्री पं० जवाहरलाल जी का जन्म-लग्न और राशि कर्क है। यही कर्क लग्न ता० २ जून के सम्मेलन में भी था। लग्न में शनि और लग्नेश चन्द्रमा मन बुद्धि का अधिपति होकर राहु केतु के प्रभाव में पञ्चम बुद्धि स्थान में नीच राशि का पड़ा है। पञ्चमेश मङ्गल दशम में चन्द्रमा से षडष्टक-योग कर रहा है। इसी नीचस्थ क्रूराक्रान्त चन्द्रमा ने श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू और अन्यान्य नेताओं की उच्चादर्शिनी मनोवृत्ति को शनि राहु केतु के कुचक्र में फँसा सहसा अनार्यप्रसादिनी केतु की नीच मनोवृत्ति को स्वीकार करने के लिये वाध्य किया। इस मन्त्रणा के दूसरे दिन ३ जून की सायंकालीन नभोवाणी (रेडियो) घोषणा के कुछ घण्टे बाद ही चन्द्रमा केतु से ग्रसा जा रहा था (चन्द्रग्रहण था) इसी चन्द्रमा ने भारतीय नेताओं की बुद्धि में विभाजन को ही सुख शान्ति एवं समृद्धि का एक मात्र उपाय जँचाकर आर्य जनता में बुद्धि-भेद उत्पन्न कराके भविष्य के लिए कण्टकाकीर्ण परिस्थिति का बीजारोपण करा दिया।

भावी परिस्थिति

भारतीय नेताओं को पाकिस्तान बन जाने से भारत की सुख समृद्धि वृद्धि और थोड़े ही समय में पुनः पाकिस्तान के अखण्ड भारत में ही मिल जाने की भी आशा है। परन्तु निकट भविष्य की ग्रह-स्थिति से हमें यह आशा पूर्ण होते दिखाई नहीं देती। श्रावण में कर्क राशि में पांच ग्रह एकत्र हो रहे हैं और आगे कार्तिक में शनि मङ्गल का युद्ध भी है। इसका सप्रमाण विशेष अनिष्टफल हम गताङ्क में लिख चुके हैं। यहां विभाजन की समस्या को लेकर भारतीय राजनैतिक क्षेत्रों में पुनः संघर्ष की सम्भावना है। सीमानिर्धारण एवं वैधानिक समस्याओं में उग्र मतभेद एवं संघर्ष होगा। राजस्थान और दक्षिण भारत के कुछ देशी राज्यों में राजा प्रजा का संघर्ष तीव्र होगा। कुछ एक राजा अपनी स्वतंत्र-सत्ता स्थिर रखने का विफल प्रयास करेंगे।

पञ्जाब पर मीन राशि का प्रभाव है, इसका अधिपति गुरु तुलाराशि में (मीन से अष्टम) वक्री चल रहा है। अतः तुला के गुरु में पञ्जाब में भीषण उत्पात एवं विनाश होना स्वाभाविक ही है। १६ जुलाई को गुरु मार्गी होकर भाद्रपद में वृश्चिक में जाने पर पञ्जाब में शान्ति की परिस्थिति निर्माण के कारण बनेंगे, वहाँ वर्तमान विनाश-लीला बहुत अंशों में शान्त-सी दिखाई देगी। परन्तु, गुरु केतु के साथ हो रहा है और आगे राहु हर्शल से प्रतियोग करेगा अतः अनार्यों के द्वारा इस शान्ति में आगे चलकर पुनः कुछ विघ्न डालने का षड्यन्त्र रचा जावेगा। यह तो हम पहिले ही लिख चुके थे कि "कर्क के शनि में अनार्य म्लेच्छ यवनादि लोगों के द्वारा भारतीय आर्य जनता की सुख शान्ति में भयङ्कर वाधा उपस्थित की जावेगी।" तदनुसार आगामी सिंह राशि भी शनि की शत्रु क्रूर राशि है अतः आगामी ३ वर्ष तक हमें भारत का भविष्य अभी विशेष उज्ज्वल दिखाई नहीं दे रहा।

पञ्जाब बङ्गाल का विभाजन चाहें भले ही हो जावे, परन्तु मन और आत्मा की राशि में शनि की स्थिति सीमाप्रान्तीय दोनों सम्प्रदायों के अन्तर्जगत् में अशान्ति एवं प्रतिशोधकी भावना को उग्र बनाती रहेगी। सिंह के उत्तरार्ध और कन्या के शनि में पाकिस्तान को भयङ्कर आर्थिक सङ्कट एवं आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रवों का सामना करना पड़ेगा। तुला का शनि भारतीय आर्य जनता के लिए हितावह सिद्ध होगा।

इन तीन मासों में

प्रथम श्रावण मास में मङ्गल राहु का योग वर्षावरोधक है, अतः कई प्रान्तों में सूखा पड़े और दुर्भिक्ष जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। आगे द्वितीय श्रावण के आरम्भ में मङ्गल के मिथुन में जाते ही ता० ३ अगस्त से सर्वत्र वर्षा प्रारम्भ हो जावेगी। ता० १४ से १६ अगस्त तक कर्क के चन्द्र में बड़ी भारी वर्षा होगी। कई नदियों में बाढ़ें आवेंगी। विशेष विवरण गताङ्क में दिया जा चुका है।

भारतीयों को सत्ता हस्तान्तरित करने की तारीख १५ अगस्त घोषित की गई है। उस दिन क्षीण चन्द्रमा की शनि से युति है और व्यतिपात योग भी, यह शुभावह नहीं कहा जा सकता। यदि इस दिन कन्या लग्न में सत्ता भारतीयों के हाथ में सौंपी गई तो भविष्य के लिए ग्रहस्थिति बहुत कुछ शुभावह बन सकेगी। इसका विशेष विवेचन हम आगामी 'नववर्षाङ्क' में सत्ता हस्तान्तरित समय की तात्कालिक लग्न कुण्डली से करेंगे। १५ अगस्त को दिल्ली में कन्या लग्न प्रातः स्टै० टा० ८।१६ से १०।३७ तक रहेगा। अतः सम्मान्य नेताओं से हम अनुरोध करेंगे कि वे उक्त लग्न में ही सत्ता-ग्रहण करने का प्रयत्न करें।

पर्व व्रतादि-निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

आषाढ़ शुक्ला	११	रविवार	ता०	२६ जून	देव शयनी एकादशी व्रत, अगले दिन प्रदोषव्रत
	१४	बु०	,,	२ जुलाई	वायु परीक्षा ध्वजारोपण सत्य व्रत
	१५	गु०	,,	३ ,,	व्यास पूजा श्रीगुरु १५, अगले दिन शब्बरात
प्र० श्रावण कृष्णा	४	सो.	,,	७ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टै० टा० १०।२१
	११	,,	,,	१४ ,,	कामिका एकादशी व्रत, अगले दिन प्रदोषव्रत
	१३	बु०	,,	१६ ,,	कर्क संक्रांति मु० ३० पुण्यकाल अपराह्ण तक
अधिक श्रावण शु०	११	सो.	,,	२८ ,,	कमला एकादशी व्रत
	१३	बु०	,,	३० ,,	प्रदोष व्रत
	१५	शु०	,,	१ अगस्त	सत्यव्रत अपूपदान स्व० लो० तिलक संव्वत्सरी
अधिक श्रावण कृ०	३	मं०	,,	५ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टै० टा० ८।२५
	११	,,	,,	१२ ,,	पुरुषोत्तमा एकादशीव्रत स्मार्त गृहस्थों के लिये
	१३	गु०	,,	१४ ,,	प्रदोष व्रत
	३०	श०	,,	१६ ,,	पुरुषोत्तम मास समाप्ति शनैश्चरी अमावस्या

शुद्ध श्रावण शुक्ला	१ रवि०	ता०	१७ अगस्त	सिंह संक्रांति पुण्यकाल। अगले दिन ईद
	३ मं०	„	१६ „	मधुश्रवा ३ श्रावणी तीज
	७ शु०	„	२२ „	श्री १०८ गो० तुलसीदास जयन्ती
	११ बु०	„	२७ „	पवित्रा एकादशी व्रत। अगले दिन प्रदोष
	१५ रवि०	„	३१ „	ऋषि तर्पण श्रावणी १५ रक्षा बन्धन (रक्खड़ी) प्रातः ८॥ बजे उपरांत, सत्य व्रत
भाद्रपद कृष्ण	४ गु०	„	४ सितम्बर	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० ६।०
	७ रवि०	„	७ „	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त्त गृहस्थों के लिए चन्द्रोदय स्टे० टा० रा० १०।५४
	८ सो.	„	८ „	जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का चन्द्रोदय ११।४६
	९ मं०	„	९ „	गुग्गा ९
	११ गु०	„	११ „	अजा एकादशी व्रत। अगले दिन प्रदोष गो० १२
भाद्रपद शुक्ला	१ सो.	„	१५ „	श्री १०५ मान् सोलन (बघाट) नरेश का जन्मोत्सव
	३ बु०	„	१८ „	कन्या संक्रांति पुण्यकाल हरितालि० ३ श्री वराह ज०
	४ गु०	„	१८ „	पत्थरचौथ चंद्रदर्शन निषिद्ध चंद्रास्त स्टे.टा.रा.८।४६
	८ सो.	„	२२ „	श्रीराधाष्टमी श्रीदधीचि जय०, अगले दिन श्रीचंद्र ९
	११ गु०	„	२५ „	पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थों की
	११ शु०	„	२६ „	११ व्रत वैष्ण० वामन द्वादशी। अगले दिन प्रदोष
	१४ सो.	„	२९ „	अनन्त १४ व्रत सत्यव्रत जन्मोत्सव श्री १०५ मान् रावराजा गिरिधारी शरण सिंहजी भरतपुर
आश्विन कृष्ण	१ बु०	„	१ अक्टू०	महालय श्राद्ध आरम्भ। अगले दिन महात्मा गांधी का जन्मोत्सव
	३ शु०	„	३ „	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० रा० ८।११
	११ शु०	„	१० „	इन्दिरा एकादशी व्रत। अगले दिन प्रदोषव्रत
	३० मं०	„	१४ „	सर्वपितृ अमावस महालयश्राद्ध समाप्ति
आश्विन शुक्ला	१ बु०	„	१५ „	नवरात्रारम्भ घटस्थापन, मातामह श्राद्ध
	३ शु०	„	१७ „	तुला संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल दिनभर
	८ बु०	„	२२ „	सरस्वतीविसर्जन महाष्टमी दुर्गा ८
	९ गु०	„	२३ „	महानवमी नवरात्रोत्थापन
	१० शु०	„	२४ „	बिजया १० दशहरा राजचिह्नपूजा

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवाद सहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं, आर्य ही शान्ति की स्थापना कर सकते हैं। राष्ट्र आर्यों का है।

हमारी मातृभूमि ही हमारा स्वर्ग है

राष्ट्र हमारा पिता है, वह हमारे पुण्य के आलोक से आलोकित हो हमें असीम आनन्दप्रदान करता है।

भारत हमारा राष्ट्र है

यही हमारी मातृ एवं पितृ भूमि है, यहां हमारी संस्कृति का विकास हुआ है, यह हिन्दू—राष्ट्र है।

इस पर हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

हमें उस शान्तिसे स्नेह नहीं जो पराधीनताकी पोषक है। हम उस क्रान्तिका आदर करते हैं जिस में जीवन है।

यदि आप इन भावों से स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

क्रान्ति ही शान्ति को जीवन देती है

यह एक जीवन शास्त्र है

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं, जनता हाथों हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मंगाइये।

मूल्य लागत मात्र आठ आना

पता-व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

स्थायी लाभ के लिये— श्रीस्वाध्याय में

विज्ञापन दीजिये

श्री स्वाध्याय !

प्रत्येक शिक्षित परिवार के पास पहुंचता है। 'श्रीस्वाध्याय' व्यापार का पथप्रदर्शक है। व्यापारी इसे पूंजी की तरह सुरक्षित रखते हैं। इस लिये प्रत्येक उच्च घराने में इसका आदर है।

आप अपने व्यापार का सम्बन्ध

यदि उच्च घरानों से करना चाहते हैं। यदि अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते हैं; तो 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी 'व्यापारांक' में विज्ञापन दीजिये।

प्रामाणिक विश्वस्त व्यवसाइयों के कुछ चुने हुये विज्ञापन ही आगामी विशेषाङ्क में लिये जायेंगे इस लिये विज्ञापन दाता अभी से अपना विज्ञापन भेजकर 'व्यापाराङ्क' के लिये स्थान रिजर्व करा लें। अश्लील विज्ञापन प्रकाशित न होंगे। शुल्क (रेटस) आदि के लिये निम्न पते पर शीघ्र लिखें।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन [शिमला]

The Manager "Shri Swadhyaya'

SOLAN (*Simla Hills*)

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्र के लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गई। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं ? और हमें क्या करना चाहिये ? दर्शन किसे [illegible] हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली-भांति परिचित होकर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजीये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मू० २) रु० मात्र।

'श्रीस्वाध्याय' के संस्थापक उक्त आचार्यचरणों द्वारा निर्मित 'श्रीपरशुरामस्तोत्र' और 'श्रीसप्तपदी-हृदय' राष्ट्रभाषानुवाद सहित तथा आप ही के द्वारा सम्पादित 'श्रीपंचस्तव' ये तीनों अद्भुत पुस्तकें 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको मार्ग व्ययके लिये दो आनेके टिकट प्राप्त होने पर भेजी जाती है। पुराने ग्राहकों को उक्त पुस्तकें अब नहीं मिलेंगी।

'श्रीस्वाध्याय' के गतांक

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदंक १॥) रु० २—हेमन्तांक २॥) रु०
३—वसन्तांक १॥) रु० ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०
चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदंक ४) रु०, २—हेमन्तांक २) रु०
३—वसन्तांक १।।।) रु० ४—ग्रीष्मांक १।।।) रु०
चारों अंकों की पूरी फाइलका मूल्य ८) रु०

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५॥) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०
३—वसन्तांक १।।।) रु० ४—ग्रीष्मांक १।।।) रु०
चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०।

चतुर्थ वर्ष की फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य २—हेमन्ताङ्क ३) रु०
३—वसन्ताङ्क ३) रु० ४—ग्रीष्माङ्क २) रु०

पंचम वर्ष की फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु० २—हेमन्ताङ्क १) रु०
३—साहित्याङ्क २) रु० ४—ग्रीष्माङ्क अप्राप्य
तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मूल्य ७) रु०।

छठे वर्ष की फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०, २—हेमन्ताङ्क ४) रु०
३—वसन्ताङ्क १) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १) रु०
चारों अंकों की पूरी फाइल का मूल्य ७) रु०

नये ग्राहकों को आवश्यक सूचना

जो सज्जन इस अंकसे स्थायी ग्राहक बनना चाहें, वे इस ग्रीष्माङ्क का मूल्य १) रु० और आगामी सातवें वर्ष का विशेषाङ्क सहित पूरा वार्षिक मूल्य ३।।।) मिलाकर कुल ४।।।) मनीआर्डरसे शीघ्र भेजें।

भविष्य में 'श्रीस्वाध्याय' के लिए वी०पी० का आर्डर श्री पं० दयानन्द जी जोशी दिल्ली के पते से न भेजें। स्वयं समोसागली में उनके घर जाकर चन्दा जमा करा कर तो 'श्रीस्वाध्याय' लिया जा सकता है। आर्डर प्रधान कार्यालय को निम्न पते से ही भेजने चाहिये:—

पता- व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा धारा प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित